पुरुष

सुनील गंगोपाध्याय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिमांशु की बात को झूठा साबित करने के लिए ही शायद भयंकर जोरों से पानी आया। मैदान में कहीं खड़े होने की जगह नहीं। उस दिन जैसे हजारों लोगों ने आकर उन्हें परेशानी में डाल दिया था, आज उसी तरह से असंख्य पानी की बूंदें थीं। घबराकर काफी इधर-उधर दौड़ने के बाद वे लोग एक गुलमोहर के पेड़ के नीचे खड़े हुए। पूरी तरह से बच न सके—खड़े-खड़े भीगने लगे। हिमांशु का भीगना उचित नहीं—मंदिरा को उसके लिए डर लगने लगा।

क्लांत स्वरों में हिमांशु बोला, 'मोनी, दुनिया में हमारे लिए घूमने-फिरने की कोई जगह नहीं है। हमारे लिए कहीं भी अच्छा घर नहीं है—हर जगह बाधा ही बाधा। इतना ढूंढ़ना-ढांढ़ना सब व्यर्थ है।'

मंदिरा हिमांशु के और पास चली आई और उसका एक हाथ पकड़ा। खूब कोमल स्वरों में आंतरिक आवाज में बोली, 'सिर्फ हमारे दोनों के मनों में हम दोनों के लिए ब....हो....त जगह है। वहां कभी कोई बाधा न आए।'

(इसी उपन्यास से)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरुष

सुनील गंगोपाध्याय का नया उपन्यास

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 4537 8(V)
Dated 19/3/003

G.M.C.E.J
4537

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरुष

सुनील गंगोपाध्याय

अनुवादिका : ममता खरे

सन्मार्ग प्रकाशन प्रा॰ लि॰

दिल्ली-110032

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्वाधिकार : सुरक्षित

संस्करण : 2001

प्रकाशक :
सन्मार्ग प्रकाशन प्रा. लि.
518/6बी, विश्वास नगर औद्योगिक क्षेत्र,
शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण : सत्यसेवक मुखर्जी

मुद्रक :
आर. के. ऑफसेट,
दिल्ली-110032

मूल्य : 100.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1

मंदिरा ने हिमांशु का हाथ कसकर पकड़ते हुए कहा, 'नहीं-नहीं, ये क्या कर रहे हो ?'

'छोड़ो ! कुछ तो करना जरूरी है।'

'तुम अकेले-अकेले इनका क्या बिगाड़ सकोगे ?'

'तो क्या, इनका जो जी में आए वे करते रहेंगे और हम कुछ नहीं कहेंगे ?'

'कहना बेकार होगा। बेकार में ही तुम्हें अपमानित होना पड़ेगा।'

'तो क्या यूं ही चुपचाप बैठा रहूं ? यही कहना चाहती हो तुम ?'

हिमांशु का चेहरा अस्वाभाविक हो गया। गुस्से के मारे उसका शरीर हल्का-हल्का कांपने लगा। भयंकर यातना को सहन करने जैसी आवाज में बोला, 'मुझसे यह सब बर्दाश्त नहीं होता है ! क्या हम बर्बरता के युग में लौट गए हैं ? कुछ तो करना जरूरी है।'

मंदिरा उदास भाव हंसकर बोली, 'क्या कर सकते हो तुम ? आजकल हर जगह ही ऐसा हो रहा है।' उसने हिमांशु का हाथ छोड़ दिया।

शाम कुछ देर पहले तक स्तब्ध थी। बस अभी-अभी हवा चलने लगी थी सारे दिन की कड़ी गर्मी के बाद। विक्टोरिया मेमोरियल के छोटे से तालाब का पानी अब तक स्थिर था, अब हवा ने पानी के साथ खेलना शुरू कर दिया था। मंदिरा दांत से घास के छझल चबा रही थी, उसे पानी में फेंकते ही वह चक्कर काटने लगा एक जगह पर।

धीरे से मंदिरा बोली, 'आ...हवा इतनी अच्छी लग रही है इस वक्त...आज तो शायद एक सेर पसीना ही शरीर से निकला होगा।'

हिमांशु ने कोई जवाब नहीं दिया।

मंदिरा ने पूछा, 'तुम्हारी बनियान तो नहीं भीग गई है ?'

'नहीं।'

उस वक्त भी हिमांशु की पैनी दृष्टि अपने दाहिने ओर थी। उधर चार-पांच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़के एक बेंच के खाली रहने पर भी उस पर बैठे नहीं थे। दो लड़के बेंच पर एक टांग उठाए टेक लगाए खड़े थे। काले रंग के पतली मोहरी का पैंट पहने हुए थे कमर में उनके बेल्ट थी और देखने में भी पांचों एक ही से लग रहे थे। दुबले-पतले, रंगीन कमीज पहने। बालों को देखने से लगेगा कि काफी समय लगता होगा काढ़ने में। पंजाबियों की तरह दो एक ने हाथों में कड़े भी पहन रखे थे। एक लड़का एक हिंदी गाना गा रहा था। तभी दूसरा लड़का बोला, 'अंधेरा होने वाला है...अब साला लड़का लड़की का तमाशा शुरू होगा।'

जो गा रहा था, वह गाना रोककर, अजीब सी आवाज में बोला, 'देख ले हेवो, देख ले साले, आंखें देखकर सार्थक कर ले।'

'राम कसम, माल फस्ट-क्लास है।'

'लग जा मानिक लग जा, डरना क्या ?'

वे सब मंदिरा और हिमांशु की तरफ देखते हुए बातें कर रहे थे। मंदिरा घुटनों पर ठोढ़ी रखे पानी की तरफ देख रही थी—मानो ऐसा दृश्य पहले कभी देखा नहीं था। हिमांशु का चेहरा उस वक्त भी कठोर हो रहा था, आंखों की दृष्टि पैनी और शरीर हल्का-हल्का कांप रहा था। वह दांत पीसते हुए बोला, 'अब तो यहां बैठे रहना असंभव है।' मंदिरा ने दबी आवाज में अनुरोध किया, 'तुम इतने उत्तेजित क्यों हो रहे हो ? उनकी तरफ देखो ही नहीं। कुछ बोलोगे तो और भी गंदी-गंदी बातें सुननी पड़ जाएंगी।'

'मेरे तनबदन में आग लगी है। मुझसे अब और बर्दाश्त नहीं हो रहा है।'

'यह सब तो बर्दाश्त करना ही पड़ेगा।'

'क्यों बर्दाश्त करूं.? हमने क्या कोई अन्याय किया है ?'

'सुनो ! तुम उस आदमी के पास, माने, क्या नाम है उनका ? मिस्टर दासगुप्ता न ? उनसे भेंट की थी ? क्या कहा ?'

कुढ़कर हिमांशु ने जवाब दिया, 'तीन-तीन बार जा चुका हूं। अपनी बात का पक्का नहीं है। इतनी बड़ी नौकरी करता है लेकिन एपॉयंटमेंट देकर घर से गायब रहता है। ये लोग बड़े बेकार होते हैं।'

'इतना ज्यादा बुरा मानने से आजकल काम नहीं चलता है। जब उन्होंने जुबान दी है...'

'जुबान देकर क्या सभी निभाते हैं ?'

'तो क्या छोड़ दोगे ? आखिरी बार कोशिश तो करके देखो...एक दिन उनके यहां सुबह चले जाओ। बहुत होगा एक दिन दफ्तर से छुट्टी ही न लेनी पड़ेगी।'

'ठीक है, चला जाऊंगा।'

तब तक पांचों लड़के वहां से जा चुके थे। पर विक्टोरिया मेमोरियल का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाता छोड़कर नहीं गए थे। वे तालाब के किनारे-किनारे चल रहे थे। जहां भी अगल-बगल बैठे स्त्री पुरुष को देखते वहीं कुछ देर के लिए खड़े हो जाते, दो एक लाइन गाना, कुछ हंसी, होंठों के नीचे अंगुली दबाकर सीटी बजाना, लड़की के रूप की अपने दृष्टिकोण से व्याख्या करना। इसी के साथ ऐसे-ऐसे व्यंगवाण छोड़ रहे थे, ऐसे गंदे विशेषणों का प्रयोग कर रहे थे कि कान लाल हो जाए। इतने बड़े बाग में कितने लोग बैठे थे, तालाब के किनारे, संगमर्मर की सीढ़ी पर, बेचों पर, लेकिन किसी में साहस नहीं था इनके विरुद्ध आवाज उठाएं। ये लोग पांच थे। बेपरवाही से दुःसाहस दिखाते पूरे मैदान का चक्कर काट रहे थे।

हिमांशु का और किसी तरफ ध्यान नहीं था, यहां तक कि मंदिरा से बात करना भी भूल गया था। सारे दिन उसे लग रहा था कि मंदिरा से कितनी बातें करनी हैं और अब इस समय पास बैठे रहने पर भी बातों को मन से बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिल रहा था। वह टकटकी लगाए उन्हीं पांच लड़कों के ग्रुप को देख रहा था। कहां खड़े हैं, कैसे हाथ पांव हिला रहे हैं, सब कुछ पर उसका ध्यान था। इस वक्त वे लोग तालाब के दूसरी तरफ थे। इसीलिए उनकी बातें हिमांशु को सुनाई नहीं पड़ रही थीं।

मंदिरा हिमांशु की तरफ देख रही थी। उसके दिल से ममता भरा प्यार उमड़ आया। हिमांशु दुबला-पतला कमजोर इंसान है। बड़ा ही असहाय-सा चेहरा, ज्यादा गुस्सा आने पर शरीर कांपने लगता है। उतरा सा चेहरा जिसमें सिर्फ नाक ही नाक नजर आती है। दो-दो बार प्लूरिसी होने से उसका शरीर आज तक स्वस्थ नहीं हो सका है। आज उसका शरीर हड्डियों का ढांचा मात्र लगता है।

मंदिरा के दिल में एक टीस सी उठी। जी किया अभी उसे अपनी बांहों के घेरे में ले ले और बालों को सहला दे। उसके सीने पर अपना सिर टिका दे लेकिन ऐसा करना तो संभव ही नहीं। इतने बड़े शहर में उनके लिए कहीं इतनी सी जगह नहीं जहां वे कुछ समय अकेले गुजार सकें। अगल-बगल बैठना ही खतरे से खाली नहीं, उस पर...। पता नहीं क्यों हिमांशु इतना अधिक टची है, तभी तो इतना कष्ट पाता है। हर दिन ही, जब भी घूमने निकलो, कुछ न कुछ होगा ही। इस तरह के भौंकने वाले पीछे लग जाएंगे। न कहीं बैठते बनता है न कुछ बोलते बनता है। हां अगर चलते रहो तो कोई कुछ नहीं कहता है लेकिन इस गर्मी में कितना चला जाए ? अरे न सुनो उनकी बेहूदी बातें, कितने लोग हैं जो उनकी बातों की परवाह ही नहीं करते हैं। अपनी मर्जी से आंखों की तरह अगर कान भी बंद किए जा सकते तो कितना अच्छा होता। सचमुच इतने छोटे-छोटे लड़के, अनायास ही कितनी गंदी-गंदी बातें बकते रहते हैं, जुबान पर कोई लगाम ही नहीं...

मंदिरा बोली, 'तुम तो बस उन्हें ही देखते जा रहे हो। मेरी तरफ तो एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बार भी नहीं देख रहे हो। तो फिर यहां आए क्यों ?'

हिमांशु ने उसकी तरफ देखा, 'तुम कहना चाहती हो कि कोई भी इन लोगों का विरोध न करे ? इसी तरह से बराबर चलता रहे ? इस तरह की कुत्सित बातें सुनकर क्या कोई चुप रह सकता है ?'

'और भी लोग तो हैं वह सब तो चुप ही हैं।'

'रहें चुप, मुझसे चुप नहीं रहा जाएगा। यहां जरा एकांत में बातें करने के लिए हम आए हैं, किसी का कुछ बिगाड़ नहीं रहे हैं...देखो जरा हरामीपना...देखो-देखो उधर क्या शुरू कर दिया है।'

एक लड़का और एक लड़की आमने-सामने घास पर बैठे हैं और ये पांचों लड़के उन्हें चारों तरफ से घेरकर उनके सिर के ऊपर से कीरिंग उछाल-उछालकर एक दूसरे को दे रहे हैं। दोनों लड़के लड़की पत्थर बन गए थे। बहुत ही छोटी उम्र के थे दोनों, पीली साड़ी पहनी लड़की सिर झुकाए जमीन में समाए जा रही थी और लड़के की समझ में कुछ नहीं आ रहा है। बहुत ज्यादा डर गया था। और वे पांचों उन्हें घर पर भयंकर आवाज के साथ हा-हाकर ठहाका मार रहे थे। हिमांशु एक झटके में उठ खड़ा हुआ। बोला, 'तुम बैठो, मैं आ रहा हूं...'

तुरंत मंदिरा ने हिमांशु का हाथ पकड़ लिया। उसे खींचते हुए व्याकुल होकर बोल उठी, 'नहीं-नहीं, तुम हर्गिज नहीं जाओगे। वे गुंडे हैं, वे कुछ भी कर सकते हैं।'

'होने दो गुंडे फिर भी मैं उन्हें ऐसे नहीं छोड़ दूंगा। मैं विरोध करूंगा तो दूसरे भी मेरा साथ देंगे।'

मंदिरा अपनी पूरी ताकत लगाकार हिमांशु को खींच रही थी। बोली, 'नहीं-नहीं, तुम विरोध नहीं करोगे। वरना मैं अभी चली जाऊंगी। मैं अकेले-अकेले ही...'

'यहां जरूर चौकीदार होंगे, उन्हें बुलाने पर या फिर पुलिस...'

'तुम कुछ भी नहीं कहोगे। और भी तो कितने लोग हैं। तुम एक तमाशा खड़ा कर दोगे यह मैं सहन न कर सकूंगी। तुम बैठ जाओ...'

मंदिरा हिमांशु से ज्यादा ताकत रखती है, हिमांशु को खींचकर बैठा लिया। उसका सारा चेहरा सिकुड़ सा गया। वह जिद्दी लड़के की तरह मुंह फुलाए बैठा रहा। न उसने मंदिरा की तरफ देखा न कोई बात की। थोड़ी देर बाद मंदिरा ने फुसफुसाते हुए अनुरोध भरे स्वरों में कहा, 'मेरी एक बात मानोगे ? सिर्फ एक बात ? एक बार मुंह फेरो...सिर्फ एक बार...'

'क्या है कहो।'

'ऐसे गुस्से से देखोगे तो मुझसे न कहा जाएगा।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मंदिरा फिर बोली, 'तुम मुझसे प्यार नहीं करते हो ?'

मंदिरा स्थिर दृष्टि से हिमांशु को देख रही थी। वह चौंक उठा। उसे ऐसे बेतुके सवाल की आशा नहीं थी। काफी देर तक वह भी अपलक मंदिरा को देखने के बाद धीरे-धीरे बोला, 'तुम्हारे मन में इस तरह का सवाल उठता है ?'

'तब फिर एक बात सुनो। तीन साल पहले तुमने मुझसे एक वादा किया था, उस वादे की आजकल मुझे हर समय याद आती है। तुम शायद उसे भूल गए हो। तुमने कहा था जब हम अलग रहते हैं तब कितने फालतू लोगों के साथ बात करना पड़ता है, कितने बुरे दृश्य भी देखने पड़ते हैं, कितनी बुरी बातें सुननी पड़ती हैं लेकिन जिस वक्त हम दोनों साथ रहेंगे तब न तो हम किसी और की बात सुनेंगे न और किसी तरफ ध्यान देंगे—हम दोनों की तब एक अलग ही दुनिया होगी—क्यों, कहा था न ?'

'लेकिन हर समय वैसा करना संभव नहीं।'

'क्यों संभव नहीं ? हां अगर प्यार खत्म हो जाए तभी...'

'मंदिरा, तुम फिर ऐसी बातें कर रही हो ?'

'तब फिर तुम मेरी आंखों में देखते रहो और सोचो कि इस दुनिया में और कुछ नहीं है, न आदमी है न कहीं कोई आवाज है—हम सिर्फ अपनी बात ही करेंगे।'

'मंदिरा तुम सचमुच बहुत सुंदर हो।'

'मैं कहां सुंदर हूं ? तुम्हारी दोनों आंखें सुंदर हैं तभी तुम मुझे सुंदर देखते हो।'

'मैं सिर्फ रूप की बात नहीं कर रहा हूं। तुम्हारा चेहरा ही सुंदर नहीं है, तुम्हारा...'

'अगर मि. दासगुप्ता इसी महीने में फ्लैट दिला दें तो...'

'वह तो ऐसा नचा रहे हैं कि मेरा विश्वास उठा जा रहा है उस पर से। जबकि उन्होंने खुद ही कहा था...'

'लेकिन तुम इतनी जल्दी विश्वास मत खोवो। इंसान पर थोड़ा भरोसा तो करना ही चाहिए।'

'मंदिरा तुम बड़े सरल स्वभाव की हो—तुम्हें दुनिया की पहचान नहीं है। तुम्हें मालूम नहीं है कि लोग सीधा साधा सच बोलना ही भूल गए हैं।'

'अरे, मैं क्या ऑफिस में नौकरी नहीं करती हूं या लोगों से मिलती-जुलती नहीं हूं ? मि. दासगुप्ता तुमसे चक्कर लगवा रहे हैं। इस तरह के लोग होते हैं, उनका स्वभाव होता है लोगों को नचाना। अगर एक ही बार में दे देंगे तो लगेगा कि काम कितना आसान है। इस हालत में इनकी इम्पॉर्टेंस कैसे जाहिर होगी ? तुम इतनी जल्दी उम्मीद मत छोड़ो।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'एक बार और आखिरी कोशिश करके देख लूंगा।'

'मुझे सचमुच इस तरह से मिलना अब अच्छा नहीं लग रहा है। कितने दिनों तक इस तरह...बात करने तक की जगह नहीं है...'

'मुझे अच्छा लगता है क्या ?'

'मैं कहती हूं, देखना जल्दी ही सब ठीक हो जाएगा। देख लेना, फ्लैट मिलते ही दो महीने के भीतर मैं तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक कर दूंगी। मेरी खूब इच्छा होती है शरतचंद्र की नायिकाओं की तरह तुम्हारी सेवा करूं।'

'मेरी भी इच्छा होती है कि तुमसे सेवा कराऊं। मैं बिस्तर पर लेटा रहूं, राजाओं की तरह आराम से, तुम मेरे लिए चाय ले आओगी। गर्मी लगने पर भी मैं बिस्तर नहीं छोड़ूंगा, चिल्लाकर तुम्हें बुलाऊंगा 'मंदिरा, पंखा चला जाओ आकर...'

वही पांच लड़के दूसरी तरफ लोगों को तंग करने के बाद फिर इधर आए। सीधे इनकी तरफ आने लगे। हिमांशु ने बोलना बंद करके उधर देखा तो मंदिरा बोली, 'फिर ? तुम मुझसे वादा करो कि इन लोगों को कुछ नहीं कहोगे ? इनकी बातों का जवाब नहीं दोगे, परवाह तक नहीं करोगे ?'

'लेकिन ये लोग तो सीधे इधर ही आ रहे हैं। सिर पर चढ़ बैठेंगे क्या ?'

'कुछ नहीं होगा। इनकी तरफ देखो ही नहीं, तुम बस मेरी तरफ देखते रहो। समझ लो कि यहां हमारे अलावा कोई है ही नहीं, तुम सिर्फ मेरी तरफ...'

लड़के लगभग उनसे सटकर खड़े हो गए। उनकी दृष्टि पानी पर थी। उनमें से एक लड़का पेंट का बटन खोलकर थोड़ी दूर पर जाकर पेशाब करने लगा। दूसरे एक का चेहरा मंदिरा के चेहरे के सामने झुक आया। हिमांशु उसे थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाने जा ही रहा था कि उस झुके चेहरे ने पूछा, 'दादा, दियासलाई है क्या ?'

'नहीं मेरे पास दियासलाई नहीं है।'

'नहीं है ? सिगरेट नहीं पीते हैं क्या ?'

इससे पहले कि हिमांशु कुछ कहे, एक दूसरे लड़के ने उसे एक झटके से खींचा, 'चल-चल सिगरेट-विगरेट नहीं पीता है, सिर्फ एक ही चीज खाता है...'

'तो फिर खा क्यों नहीं रहा है ? चुप मारे बैठा क्यों है ?'

'पेट में भूख और मन में लाज—समझा ?'

हिमांशु का चेहरा पेड़ से गिरे सूखे पत्ते की तरह हो गया। व्याकुल भाव से मंदिरा उसका चेहरा देखने लगी। उसकी आंखें कहना चाह रही थीं, 'तुमने वादा किया है इनसे बात नहीं करोगे, उनकी तरफ देखोगे नहीं, सिर्फ मुझे देखोगे...'

वे लोग हाथ की मुट्ठी में सिगरेट लेकर गांजा पीने की तरह कस लगा रहे थे। एक बोला, 'यह क्या रे, हमें देखकर तो गूंगा हो गया।' दूसरे ने बच्चों जैसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज में कहा, 'मां से बता दूंगा। छिप-छिपकर यह सब हो रहा है ? हैं ?'

'बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं...'

'मां कसम, जैसा बढ़िया जोड़ा है—इसी को कहते हैं बेजोड़ प्रेमी।'

'जा...पा...न ! लव इन टोकियो।'

'असली प्रेमी है या दस रुपये वाला खरीददार है रे ?'

'चल-चल साले, मैदान में जाएं। अंधकार हो गया है। अब तक तो हेवी आलिंगन-वालिंगन...'

उनके चले जाने के बाद भी बड़ी देर तक दोनों खामोश बैठे रहे। हिमांशु हिंसक भाव से जोर-जोर घास नोचकर फेंक रहा था और मंदिरा सिर झुकाए बड़ी तल्लीनता से साड़ी का किनारा सीधा कर रही थी। इतनी देर की चिल्लाहट के बाद लग रहा था पृथ्वी शब्दहीन है, चारों ओर अजीब सी शांति है थोड़ी देर बाद सिर के ऊपर से एक हवाई जहाज उड़ गया था खामोशी भंग हुई।

हिमांशु धीरे से बोला, 'यहां अब कभी नहीं आऊंगा।'

'तब फिर कहां जाओगे ? सभी जगह तो एक सी है। उस दिन आउट रामघाट की घटना याद है न ?'

'मंदिरा, ये लोग क्या कह गए—सुना है न तुमने ? इन्होंने कहा बेजोड़ प्रेमी। हमको तुमको...'

'तुम भी...क्या इन सब बातों को लेकर बैठ जाते हो। उन्होंने क्या कहा, मैंने सुना नहीं।'

'कह गए हम बेजोड़ प्रेमी हैं।'

'मैंने नहीं सुना।'

'जरूर सुना होगा। कान के पास चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे, बहरा भी सुन लेता। बिना सुने कोई रह सकता है ?'

'रह सकता है। मैं रह सकती हूं। जब तुम्हारे सामने बैठी होती हूं मुझे न और कुछ दिखाई पड़ता है न सुनाई पड़ता है।'

'मंदिरा, तुम मुझे सांत्वना देने की कोशिश कर रही हो लेकिन सारी दुनिया मुझे बार-बार कहती है कि मैं तुम्हारे बगल में फबता नहीं हूं। मैं तुम्हारे काबिल नहीं हूं, तुम नाहक ही मेरे लिए...'

मंदिरा पहले से ही रोने लगी थी। उसके आंसू गालों पर बह आए थे। चेहरा उठाया तो स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। वह बोली, 'फिर किसी दिन तुमने अगर यह बात कही, देख लेना मैं अपनी जान दे दूंगी। सचमुच मैं एक दिन जान दे दूंगी।'

हिमांशु उसके चेहरे को निहारता रहा। देख रहा था कि आंसू कितनी दूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक बह आते हैं। होंठों के पास तक आते ही मंदिरा ने जल्दी से पोंछ डाला। हिमांशु ने हाथ बढ़ाकर मंदिरा के हाथ पर हाथ रखकर दबाया। हिमांशु रो नहीं रहा था पर रोनी सी आवाज में बोला, 'तुम क्यों मरोगी ? मरना तो मुझे चाहिए था। जीने से मेरा क्या फायदा हुआ ? कुछ कर नहीं सकता हूं, मुझमें ताकत नहीं है—मैं एक कमजोर असहाय इंसान हूं...'

'तुम बिल्कुल ही दुर्बल नहीं हो। जल्दी ही तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाएगी।'

'मंदिरा, मुझे लगता है हर कोई मुझे बाधा देने में जुटा हुआ है। तुमसे मुलाकात ही कितनी थोड़ी देर के लिए होती है, सिर्फ शाम को मिलते हैं लेकिन उसमें भी शांति नहीं इतना उत्पात होता है। लगता है सारी दुनिया हमारी दुश्मन है।'

'तुम तो कहते थे कि मैं ही तुम्हारी दुनिया हूं फिर तुम मुझसे ज्यादा बाकी दुनिया की बात सोचते क्यों हो ?'

'इंसान क्या ऐसा कर सकता है ?'

'अरे, यह क्या ? तुम्हें इतना पसीना क्यों आ रहा है ? हवा चल रही है फिर भी...'

'हां, न जानें क्यों, अचानक बड़ा पसीना आ रहा है।'

'जरूर बनियान भीग गई है।'

'नहीं, नहीं, बनियान नहीं भीगी है।'

'हां भीगी है। मुझे पता है...तुम मुझसे हर बात छिपाते क्यों हो ? तुम्हारा भीगी बनियान पहने रहना बिल्कुल ठीक नहीं।'

मंदिरा ने जल्दी से आंखें पोंछकर बैग की चेन खींचकर खोली। बोली, 'सुनो, तुम्हारे लिए मैंने एक जोड़ी नई बनियान खरीदी है, तुम बाथरूम में जाकर गीली बनियान बदल आओ।'

'मेरे लिए तुम बनियान लाई हो ?'

'हां, आज ही खरीदी है—चौंतीस साइज है न तुम्हारा ? चलो, उस चाय की दुकान के बगल में बाथरूम है।'

'लेकिन तुम अचानक बनियान क्यों खरीद बैठीं ? घर में तो मेरे पास बहुत बनियानें हैं।'

'रहने दो, सारी शाम तुम गीली बनियान पहनकर घूमा करते हो जो कि बिल्कुल अच्छी बात नहीं है। मैंने तय किया है कि गर्मी भर मैं अपने पर्स में तुम्हारे लिए एक बनियान रखा करूंगी। तुम मौका पाकर बदल लिया करना।'

अब जाकर हिमांशु हंस दिया। दो-दो बार प्लूरिसी होने से उसका शरीर खोखला हो गया था। ज्यादा गर्मी उससे बर्दाश्त नहीं होती है। ठंड भी ज्यादा पड़े तो सहन नहीं कर सकता है। डाक्टर ने उससे कहा था कि गीली बनियान बदल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिया करे वरना छाती में ठंड लग जाएगी। बातों ही बातों में कभी हिमांशु ने ये बात मंदिरा को बताई थी।

हिमांशु ने हंसते हुए कहा, 'वाह ! तो क्या कोई लड़की अपने प्रेमी को बनियान उपहार में देती है ? लोग क्या कहेंगे ?'

'लोगों की बात सोचने की मुझे बड़ी पड़ी है ! तुम गीली बनियान इसी कागज में लपेट लाना, मैं घर से फींच लाऊंगी।'

'लेकिन सचमुच बदलने की जरूरत नहीं है...ऐसी कुछ गीली नहीं हुई है।'

'ईश ! पसीने से चेहरा भीग गया है जब तब बनियान कैसे नहीं गीली हुई होगी ? मेरी बात मानो...'

'तुम यहां अकेली बैठी रहोगी ?'

'अकेले बैठे रहने में कोई हर्ज नहीं।'

'अगर वही बदमाश फिर आ गए तो...'

'मुझे कुछ कहने की हिम्मत न होगी।'

'तुम्हारे पर्स में रखी बनियान अगर तुम्हारे घर वाले देख लेते तो ? फिर कह रही हो बनियान फींच लाओगी...कैसे...'

'वह मैं कर लूंगी। तुम देर कर रहे हो...जाओ ने।'

2

मंदिरा के दो भाई, भाभियां कोई भी इस रहस्य को समझ नहीं पाता है। मंदिरा ने हिस्ट्री में आनर्स लेकर बी.ए. पास किया है, सुंदर है, खासतौर से स्वास्थ्य उसका बहुत अच्छा है। ऐसी लड़की की कितनी अच्छी शादी हो सकती है पर न जाने उसने हिमांशु सरकार में क्या देखा है। दोनों भाई तीन बार रिश्ता ले आए थे मंदिरा के लिए। एक तो उनमें से डाक्टर था, शादी करते ही पत्नी को साथ लेकर लंदन जाने वाला था पर मंदिरा ने उसकी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखा।

एक बार लड़के वालों को भाई घर ले आए थे पर मंदिरा उनके सामने निकली ही नहीं। इससे बड़े भाई हेमंत बड़े ही अपमानित हुए थे। उन्होंने मंदिरा से बोलचाल ही बंद कर दी। अब जब कभी भी उसकी पत्नी ज्योत्स्ना मंदिरा की शादी का जिक्र छेड़ती है तब हेमंत बिगड़कर कहता है, वह जो जी में आए करे, मुझे उससे कोई सरोकार नहीं—मुझको तंग मत करो।'

इन दिनों ज्योत्स्ना ज्यादा ही मोटी हो गई है। आंखें बड़ी-बड़ी करके बोली, 'अरे वाह सरोकार कैसे नहीं ? कहीं कोई गड़बड़ी हो गई तो ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हेमंत के चेहरे पर सहसा अद्भुत परिवर्तन नजर आया। लुंगी पहना बेढव चेहरा पल भर में बदल गया। अभिजात्यपूर्ण स्वरों में बोला, 'इस वंश की धारा से तुम कहां परिचित हो, तुम तो बाहर की लड़की हो। इस मुखर्जी खानदान के किसी ने भी कभी कोई असम्मान का काम नहीं किया है। उस लड़की को मैं अच्छी तरह जानता हूं। बचपन से ही बेहद जिद्दी है लेकिन किसी तरह की गड़बड़ी करने वाली लड़की वह नहीं है।'

होंठ उलटकर ज्योत्स्ना बोली, 'ओहः ! बड़े आए मुखर्जी वंश वाले। उस दिन अखबार में पढ़ा था एक मुखर्जी ने अनाथालय का रुपया चुराया है।'

'वह दूसरा मुखर्जी है। ये लोग आजकल के एफीडेविट किए मुखर्जी हैं। असली मुखर्जी लोग कभी...'

रतन की बहू खूब नाटक उपन्यास पढ़ना पसंद करती है। उसे आजकल के दिनों में भी लड़के लड़की का देख सुन शादी करना नापसंद है। हालांकि उसकी शादी इसी तरह हुई थी लेकिन शादी से पहले उसने रतन को देखा था इसीलिए अपनी शादी को वह प्रेम करके की हुई शादी सोचकर खुश होती है। और इसीलिए मंदिरा किसी अनजान आदमी से शादी करने को तैयार नहीं है सोचकर ही गोपा खुश है। इसके अलावा एक बात और है, उसकी जिठानी ज्योत्स्ना जिस बात को पसंद करती है वह उसी बात को नापसंद करती है। कभी-कभी ज्योत्स्ना के भाई लोग अपनी मोटर पर यहां मिलने आते हैं इसके लिए ज्योत्स्ना घमंड करती है। लेकिन मोटर है तो क्या हुआ, अनपढ़, अशिक्षित परिवार है। ज्योत्स्ना के दोनों में से एक भी भाई बी.ए. पास नहीं है। बस इनका पॉलीथिन के बैग का व्यवसाय सहसा खूब तरक्की कर गया तो बड़े आदमी बन गए। गोपा लोग इस घर से अलग हो ही चुके होते लेकिन घर के बंटवारे के बाद दोनों भाइयों को तीन कमरे मिले थे। इस घर को छोड़ना कोई अक्लमंदी भी नहीं। फिर डेढ़ कमरे खरीदेगा भी कौन ?

मंदिरा रहती है छत वाले कमरे में। उसकी अपनी अलग ही दुनिया है। मां पिताजी जिंदा नहीं हैं, उसका घर वालों से संपर्क भी नाममात्र का है। दोनों भाई उसे बहुत चाहते थे लेकिन शादी के बाद दोनों ही बदल गए हैं। अब तो दोनों भाइयों के बीच सूक्ष्म सी एक प्रतियोगिता छिड़ी रहती है—किसकी कितनी कमाई है इसी बात को लेकर। भाइयों से मंदिरा की मुलाकात भी कम ही होती है। सुबह के जलपान की जिम्मेदारी मंदिरा ने संभाली है क्योंकि उससे घर के खर्च के लिए कुछ नहीं लिया जाता है। वह अंडे का, दूध का दाम देती है। चाय पावरोटी का खर्च भी वही करती है। नाश्ता खुद बनाती है, दोनों भाइयों के कमरे में पहुंचा आती है। दोनों भाई उस वक्त मुंह के सामने अखबार थामे बैठे रहते हैं—बातचीत प्रायः होती ही नहीं है। ज्यादा से ज्यादा किसी दिन मंदिरा पूछ लेती है 'छोटे भइया,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाय में चीनी ठीक है ? या 'बड़े भइया, तुम्हें और टोस्ट दूं क्या ?' संक्षिप्त सा उत्तर मिलता है, हां या नहीं में।

इसके बाद दोनों भाई और मंदिरा ऑफिस चले जाते हैं। भाई लोग घर देर से वापस लौटते हैं अथवा कभी-कभी वापसा आते ही अपनी-अपनी पत्नियों के साथ सिनेमा जाते हैं। मंदिरा हिमांशु से मिलकर घर लौटती है साढ़े आठ नौ बजे। उसके बाद वह अपने कमरे में ही रहती है।

आजकल लड़कियों का भी पिता की संपत्ति में हिस्सा होता है। इस घर में एक कमरा मंदिरा के हिस्से में आना चाहिए। उसके भाइयों को पता है कि मंदिरा इस तरह का दावा नहीं करेगी। लेकिन उसका पति न मालूम कैसा हो ? पता नहीं कैसे लफंगे लड़के से शादी करे जो इन्हें कानून झाड़ने लगे। इसीलिए भाइयों की इच्छा थी कि उसकी शादी एक अच्छे लड़के से कर दें। उसकी शादी में दोनों भाई जो खर्च करेंगे वह मंदिरा के कमरे के अधिकार को समाप्त कर देगा। खासतौर से वह डाक्टर लड़का, जो शादी के बाद बहू लेकर लंदन चला जाने वाला था। उसके साथ शादी हो जाती तो बहुत अच्छा होता। लड़की सुखी रहती। फिर डाक्टर वगैर परदेश जाकर अपने देश में लौटना ही नहीं चाहते हैं। लेकिन न जाने इस लड़की ने उस दुबले, हड्डी के ढांचे में क्या देखा कि उसे ही पसंद कर बैठी। भाइयों को यह भी पता था कि उनकी बहन बहुत जिद्दी है। उससे कोई काम जबर्दस्ती करवाना चाहेंगे तो उल्टा ही होगा। वे लोग बहन से डरते भी हैं।

हिमांशु का दफ्तर डलहौजी में है और मंदिरा काम करती है लिंडसे स्ट्रीट के पास स्थित एक फार्म में। ऑफिस की छुट्टी होते ही दोनों कर्जन पार्क के ट्राम डिपो पर मिलते हैं। कभी-कभी काम का बहाना बनाकर हिमांशु आना नहीं चाहता है पर मंदिरा नहीं मानती है। अपनी आय वृद्धि के लिए हिमांशु शाम को ट्यूशन करना चाहता है इस बात के लिए मंदिरा किसी तरह से तैयार नहीं। उसका कहना है कि हर रोज हिमांशु से मिले वगैर वह रह नहीं सकती है। उसे हिमांशु के लिए हर समय डर लगा रहता है। मानो हिमांशु को सुरक्षित रहने की जिम्मेदारी मंदिरा की ही है। बच्चों की तरह वह उसे संभालती फिरती है। बीमार पड़ते-पड़ते उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया है—जरा सी बात पर नाराज हो जाता है। उधर ज्यादा नाराज होना उसके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं। लेकिन उसका यह हाल है कि दुनिया भर में हो रहे सारे अत्याचार, लोगों का बुरा व्यवहार उसे पीड़ित करता है। कितने लोग हैं जो अन्याय होते देखकर भी खामोश रहते हैं चुपचाप सब कुछ बर्दाश्त कर लेते हैं लेकिन हिमांशु ऐसा नहीं कर पाता है। वह हर बात का विरोध करने लग जाता है।

जबकि मंदिरा जानती है कि हिमांशु का शरीर कमजोर है। ऐसे इंसान को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो बर्बर शक्ति मिनटों में कुचलकर मार डालेगी। सोचकर मंदिरा का हृदय कांप उठता है। उसे तो मालूम है कि दुर्बल होने पर भी हिमांशु का हृदय कितना विशाल है, पवित्र है। उसके जैसा सच्चा, सचरित्र इंसान आज तक उसने देखा नहीं है। उससे प्यार करके मंदिरा अपने को धन्य समझती है।

लेकिन इन दिनों हिमांशु के मन में एक गलत धारणा पैदा हो गई है कि उससे प्यार करके मंदिरा अपना नुकसान कर रही है। मंदिरा उससे प्यार नहीं, उस पर दया करती है। जब भी हिमांशु यह सब कहता है मंदिरा रो पड़ती है। फिर भी उसका मन नहीं मानता है। कभी-कभी कहता भी है कि तुमको यह तो स्वीकारना ही पड़ेगा कि मुझसे कहीं ज्यादा अच्छा लड़का, जिसका बढ़िया स्वास्थ्य है, अच्छी नौकरी है–तुम्हें पाकर, धन्य हो जाता कि नहीं ?

मंदिरा बोलती, 'क्यों ? मुझमें ऐसा क्या है ?'

हिमांशु की आवाज में कड़ुआहट होती, 'यह तुम मेरे मुंह से सुनना चाहती हो ? तुम्हारा ऐसा स्वस्थ शरीर, लावण्यपूर्ण चेहरा–ऐसी लड़कियां ज्यादा तो होती नहीं है। मैं चित्र बनाता हूं, मुझे मालूम है रूप किसको कहते हैं। उसी हिसाब से कह रहा हूं तुम सचुमुच रूपवती हो, तुममें कुछ भी नकली नहीं है। तुम्हारी तुलना में मैं भला क्या हूं ? एक पैबंद लगा शरीर, आर्टिस्ट भी नहीं हूं–कुछ कर भी नहीं पाऊंगा। अभी तो मैं विज्ञापन का ले-आउट करता हूं...मेरे साथ तुम्हारा...'

मंदिरा हिमांशु को एकटक देखने के बाद बोली, 'प्यार क्या इस तरह से तराजू से तोलकर जांचा जाता है ? प्यार का क्या निश्चित नियम है ?'

'लेकिन मंदिरा प्यार बड़ी ही नाजुक चीज है। मामूली सी चोट लगने से ही टूटने का डर रहता है। अगर हमेशा यह प्यार न रहे तो ?'

'हमेशा रहेगा कि नहीं यह तो मालूम नहीं, कितने दिनों तक जिंदा रहूंगी यह भी पता नहीं लेकिन आज जो मेरे जीवन की सच्चाई है, उसे हमेशा की बात सोचकर क्यों झुठला दूं ?'

'कौन सी सच्चाई, मंदिरा ?'

'तुम्हारे अलावा किसी और से प्यार करना मेरे लिए असंभव है।'

'इसी प्यार के लिए तुम इतना बड़ा आत्मत्याग करना चाहती हो ? यह शायद तुम्हारी मूर्खता है।'

'होने दो मूर्खता–मैं ऐसी ही मूर्ख रहना चाहती हूं। प्यार के मामले में मैं हिसाब छोड़कर चलना नहीं चाहती हूं।'

मंदिरा की समझ में नहीं आता है कि सारी दुनिया की नजरों से हिमांशु को कैसे छिपाए रहे। फ्लैट अगर मिल जाए तो जल्दी से जल्दी शादी कर लेगी। उसे भाइयों की गृहस्थी में बने रहना, जरा भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह अपना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर, अपनी गृहस्थी चाहती है। वह तब हिमांशु को जरा भी कष्ट उठाने न देगी, उसके खाने पीने का पूरा ध्यान रखेगी। अपनी बुआ के साथ रहता है, क्या पता वे लोग क्या खिलाते-पिलाते हैं। इसके लिए कुछ कम देता नहीं है। लगभग पूरी की पूरी कमाई बुआ के हाथों पर धर देता है।

जरा सा ध्यान रखा जाए तो क्या स्वास्थ्य में सुधार नहीं होगा ? प्लूरिसी के बाद तो सभी का स्वास्थ्य ठीक हो जाता है। बस नियमित खाना और आराम करने की जरूरत है। उसके छोटे भाई के एक दोस्त को जब प्लूरिसी हुई तो उसने हंसकर कहा था, 'खैर, प्लूरिसी तो आजकल एक मामूली बीमारी है। ठीक हो जाएगा तो मोटा तगड़ा हो जाएगा।'

3

दफ्तर की छुट्टी के बाद आजकल वे लोग नियमित घर की तलाश में घूमा करते हैं। लेकिन एक भी घर पसंद नहीं आता है। या तो घर पसंद नहीं आता है या किराया बहुत ज्यादा लगता है। सरकारी फ्लैट पाने की उम्मीद बिल्कुल खत्म हो गई हो, ऐसा भी नहीं है।

हिमांशु के पिता के मित्र परेश दासगुप्ता आई.टी. के बड़े अफसर हैं। अपने ही घर में, छुट्टी के दिनों में दोपहर में बहुत बार परेश बाबू को वह ताश खेलते देख चुका था। हालांकि बात बहुत पहले की है, तब परेश दासगुप्ता इतने बड़े अफसर नहीं थे। हिमांशु जब उनसे मिला था तब उसे अपने पिता का परिचय देना नहीं पड़ा था, वे खुद ही उसे पहचान गए थे। हिमांशु ने उनसे एक फ्लैट दिलवा देने का अनुरोध किया था। शुरू-शुरू में उन्होंने भरोसा ही नहीं दिलाया था, उत्साह भी दिखाया था। ख़ुद ही कहा था, 'हां-हां मिल जाएगा। यह कौन सी बड़ी बात है। मौलाली के पास मिला तो ठीक रहेगा ?'

लेकिन अब वह ऐसी बातें नहीं करते हैं। एपॉयंटमेंट लेने के बाद भी मुलाकात नहीं होती है। कुल मिलाकर हिमांशु पांच बार जा चुका है।

मंदिरा को रास्ते के मोड़ पर खड़ा करके हिमांशु उनसे मिलने उनके घर गया था। थोड़ी देर बाद मुंह लटकाकर वापस आ गया। उसका उतरा चेहरा देखकर शंकित होकर मंदिरा ने पूछा, 'क्यों, आज भी भेंट नहीं हुई ? घर में नहीं है क्या ?'

'घर में है और भेंट भी हुई है।'

'तब फिर ?'

'बात कुछ समझ में नहीं आई। पहले ऐसे बोल रहे थे जैसे मेरे नाम से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फ्लैट एलॉट हो चुका है। सब कुछ हो गया है बस चाभी पाने भर की देर है। और अब हाव-भाव कुछ अलग ही नजर आए। कहने लगे देखता हूं, क्या किया जा सकता है।'

'तुमने साफ-साफ पूछ क्यों नहीं लिया कि मिलेगा या नहीं।'

'पूछा था।'

'तो क्या बोले ?'

'हां या नहीं, कुछ भी नहीं बोले। मुझे एक बात का शक हो रहा है...'

'क्या ?'

'मुझे शक हो रहा है कि उनकी शायद घूस लेने की आदत है। मुझे मांग नहीं पा रहे हैं।'

'नहीं...तुमने कैसे जाना ?'

'बार-बार कह रहे थे, सिर्फ इकतीस फ्लैट्स हैं और इनके लिए अर्जियां आई हैं चौदह हजार...आसानी से तो...बहुतों को खुश करने का मामला है...इसके मतलब तो घूस ही हुआ।'

'नहीं भी हो सकता है। शायद वह कहना चाह रहे हों कि काफी परिचित लोगों को देने की बात है इसलिए किसे दें किसे नहीं समझ में नहीं आ रहा है। दोस्त के बेटे से क्या कोई घूस मांग सकता है क्या ?'

'आजकल सब कोई सब कुछ कर सकता है। उनके हावभाव से तो मुझे साफ-साफ लग रहा था...'

'कितना ?'

'कितना मतलब ?'

'एक फ्लैट पाने के लिए कितना रुपया घूस के तौर पर दिया जाता है ?'

अचानक हिमांशु बिगड़ गया, 'इसके मतलब ? तुमने क्या सोचा है मैं घूस देकर फ्लैट लूंगा ? कभी नहीं सरकारी फ्लैट पाने का मुझे हक है। एक पैसा ज्यादा नहीं दूंगा।'

'ओहो, नाराज क्यों हो रहे हो ? थोड़ा बहुत दे देने से अगर जल्दी मिल जाए—अरे हमें तो जल्दी ही चाहिए न ?'

'बिल्कुल नहीं। घूस देकर घर लेने के बदले मैं फुटपाथ पर सोना पसंद करूंगा। वह कहीं अच्छा है। फिर, सरकारी फ्लैट के अलावा क्या दूसरे मकान किराए के लिए नहीं मिलते हैं ? तुम्हे ही फ्लैट का शौक है। हम लोग दूसरा मकान ढूंढ़ लेंगे।'

'जरा ढंग का मकान होगा तो ढेर सारा किराया मांगेंगे। यह अच्छा था, पचासी रुपये किराया, सब कुछ सेपरेट...हमारे बजट में ठीक पड़ता। उस पर नया मकान है, सब कुछ साफ सुथरा...'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'तो क्या घूस देकर लेना पड़ेगा ? मर जाऊंगा पर मैं यह अन्याय नहीं कर सकूंगा। इससे अच्छा होगा जाकर बस्ती में रहना...'

'तुम तो बहुत ज्यादा ही खफा हो रहे हो। आजकल यह तो सिस्टम सा बन गया है। हर जगह देना पड़ता है। इतना अकड़े रहने से आजकल काम नहीं बनता है।'

'मंदिरा, अन्याय तो अन्याय ही है। इसे बढ़ावा देना भी अन्याय है।'

'ओहो, तुम तो हर बात पर—फिर तुम खुद कह रहे हो चौदह हजार अर्जियां आई हैं। तुम जो अपने लिए कह रहे हो वह भी तो एक तरह का...'

चलते-चलते ठिठककर खड़ा हो गया हिमांशु। तीव्र दृष्टि से मंदिरा की ओर देखकर बोला, 'ठीक कहा है, तुमने बिल्कुल ठीक कहा है। मुझे यह बात पहले ही समझ लेनी चाहिए थी।'

'रहने दो हमें वह फ्लैट नहीं चाहिए।'

'मेरे मन में पहले ही खटका सा लग रहा था। मैं क्यों अलग से फेबर मांगूं ? अवश्य ही यह भी अन्याय ही है। अर्जियों की लाटरी निकालने पर जिसका नाम निकलता है उसे ही फ्लैट दिया जाना चाहिए। तुमने मुझे ठीक याद दिलाया है। फिर कभी ऐसी गलती करूं तो तुम मुझे याद दिला देना। मैं अब कभी परेश दासगुप्ता के पास नहीं जाऊंगा। न उनकी दया चाहिए न उनका दिया फ्लैट।'

'वही ठीक होगा, हम दूसरा घर ढूंढ़ लेंगे। यहां हमारी अर्जी तो पड़ी ही है। अगर किस्मत में यह फ्लैट मिलना रहा तो तब चले आएंगे—ठीक है न ?'

'हां।'

दोनों बगल-बगल चल रहे थे पर कुछ खास बातचीत नहीं हो रही थी। मंदिरा ने पूछा, 'तुम क्या अभी भी परेश दासगुप्ता की ही बात सोच रहे हो ?'

'नहीं।'

'तो फिर उस तरह से मुंह क्यों फुला रखा है ? वह सब भूल जाओ—हमने तो तय कर ही लिया है।'

'मैं अब दूसरी जगहों में अच्छी तरह से घर ढूंढूंगा। देखना, महीने भर में घर मिल जाएगा।'

'तुम भी ढूंढ़ो, मैं भी दफ्तर की लड़कियों को कहूंगी पता करने। इस वक्त कहां चलोगे ?'

'बहुत भूख लगी है। चलो कुछ खाया जाए। आज मुर्गा खाने की बड़ी इच्छा हो रही है। ओफ्फो...कितने दिन हो गए मुर्गा खाए।'

'ठीक है, आज मैं तुम्हें खिलाऊंगी। आज मुझे डी.ए. वाले एरियर के रुपये मिले हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'अच्छा ? कितना मिला है ?'

'क्यों बताऊं ? बहुत सारे रुपये हैं—दो सौ आठ...'

हिमांशु हंसते हुए बोला, 'ईश, क्या ही ज्यादा रुपये हैं। देखते ही देखते गायब हो जाएगा।'

'आहा...हा, सुनकर हजरत को अच्छा ही नहीं लगा। एक्स्ट्रा मिला कैसा भी रुपया हो, मिलने पर अच्छा लगता है। सुनो, तुम्हारी कमीज का नाप क्या है ? चौंतीस ?'

'क्यों ? मेरे नाप का क्या करोगी ?'

'इस महीने मैं तुम्हें एक टेरीलिन की कमीज प्रेजेंट करना चाहती हूं। आजकल सभी लड़के टेरीलिन की कमीज पहनते हैं।'

'नहीं-नहीं, वह सब खरीदकर फालतू खर्चे करने की जरूरत नहीं है।'

'यह फालतू खर्च है ही नहीं। मेरी इच्छा हुई है—यह क्या फालतू खर्च कहलाएगा ?'

'लेकिन मैं तो तुम्हें कोई उपहार ही नहीं देता हूं।'

'तुम तो अपने प्यार ही से मुझे मालामाल कर देते हो।'

'तुम भी मुझे प्यार ही दो, टेरीलिन मत दो।'

हिमांशु के बांत में मौजूद अभिमान को मंदिरा ने नजरअंदाज कर दिया। हल्के भाव से बोली, 'अच्छा ठीक है अगर तुम्हें टेरीलिन पसंद नहीं है तो मैं सूती कमीज ले देती हूं। लेकिन तुम्हें मेरे साथ चलना पड़ेगा खरीदवाने के लिए।'

टेस्टूरेंट के सामने एक छोटी मोटी भीड़ इकट्ठा थी। लोग चिल्ला रहे थे। मंदिरा टेस्टूरेंट के भीतर चली गई पर साधारण कौतूहलवश हिमांशु ने भीड़ के भीतर झांककर देखा। देखते ही उसके रोंगटे खड़े हो गए। एक पंद्रह-सोलह साल का लड़का, मैली कुचैली पोशाक पहने, जमीन पर पड़ा कराह रहा था और आठ-दस लोग, अच्छे कपड़े पहने, उसे लगातार लात घूंसे मार रहे थे। उस मारने वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे एक विशाल डीलडौल वाले सज्जन शायद वे इस मोहल्ले के व्यायामवीर थे। वे दांत पीसते हुए कह रहे थे, 'साले, आज तेरी जान ही ले लूंगा। साले, जिससे कि फिर किसी दिन...'

'तोड़ दीजिए साले का हाथ जिससे कि फिर कभी...'

'मार खाने का असर सालों पर नहीं होता है। आदत होती है...'

'रो रहा है लेकिन आंखों में एक बूंद आंसू नहीं...'

हिमांशु धक्का-मुक्की कर भीतर घुस गया। पूछने लगा, 'क्या हुआ है ? क्या हुआ है ?'

'एक आदमी ने निर्लिप्त भाव से कहा, 'जेबकतरा है। आजकल इतना बढ़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया है यह सब...'

'किसका जेब काटा है ? कितना रुपया था ?'

'काट नहीं पाया था आखिर तक...ऐन वक्त पर दादा ने देख लिया...भीड़ का फायदा उठाते हुए जेब में हाथ डाला ही था कि उन्होंने देख लिया। झपटकर पकड़ लिया बस।'

हिमांशु बोला, 'जब ले नहीं पाया है तब इतना मारकर...'

'अभी नहीं ले पाया तो क्या हुआ, दूसरे किसी का लेता। कितने आदमियों का सर्वनाश करते हैं ये लोग...'

'पिछले महीने ही तो मेरे चचिया सुसर का...'

'आप पिछले महीने की बात कर रहे हैं दादा, मैं तो इसी महीने की बात बता रहा हूं—मेरे बड़े भाई, मेरे अपने भाई, माई ओन ब्रदर, उनकी जेब से ढाई सौ रुपये निकाल लिए...'

'पिछले महीने मेरे चचिया ससुर की लड़की की शादी के लिए खरीदफरोश करने निकले थे...'

'मेरे भाई तब अपनी खाली जेब पकड़कर...'

'गड़िहाट के मोड़ पर हमारे दंफ्तर के एक कलीग की जेब से तो पूरे महीने की तनख्वाह ही...'

'मार साले को मार...'

हिमांशु मारकर दृश्य देख नहीं सकता है। लड़के के कपड़े फट चुके थे, गले से आवाज तक नहीं निकल रही थी। बस रह-रहकर बदन कांप उठता था। बालों के बीच और मुंह पर खून देखकर हिमांशु का सिर चकराने लगा। उसने धीरे से कहा, 'अब मत मारिए इंसान तो...'

उसकी बात बगल में खड़े एक आदमी ने सुन ली। सुनते ही वह फुफकार उठा, 'मारें क्यों नहीं महाशय ? इनका जीना जरूरी नहीं बल्कि मर जाना ही अच्छा है। हरामी हैं सब...'

हिमांशु ने एक बार सोचा, यह कुछ करने को है नहीं। मार खाते हुए देखने से अच्छा है इस जगह से हट जाना। मंदिरा की बात वह करीब-करीब भूल ही गया था दो एक कदम पीछे हटने के बाद भी हिमांशु ने उसी व्यायाम वीर को सुनाते हुए ऊंची आवाज में कहा, 'अब छोड़ दीजिए, अब मत मारिए वरना लौंडा मर जाएगा।'

बगल में खड़े एक सज्जन बोल उठे, 'मरेगा तो दुनिया का बोझ कम होगा। इन्हें दुनिया में जिंदा छोड़ देने से कोई फायदा नहीं है महाशय...'

हिमांशु बोला, 'लेकिन मारते-मारते एक लड़के को मार डालना...एक सभ्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश में...लड़के की उम्र भी कोई ज्यादा नहीं है...चेहरे से लगता है वैसा कोई...'

'चेहरा देखकर ऐसे हीरे के टुकड़े पहचाने नहीं जाते हैं।'

'लेकिन कुछ लिया तो नहीं है और फिर आप लोगों से गलती भी तो हो सकती है।'

'गलती ? कहना क्या चाहते हैं आप ?'

हिमांशु का गला सूखने लगा था, शरीर में कंपकंपी शुरू हो गई थी। जरा चिल्लाकर बोला, 'इसी लड़के ने जेब में हाथ डाला था इसका कोई डेफिनेट प्रूफ है आपके पास ?'

'जरूर है। इन दादा ने अपनी आंखों से देखा है। इन िहज ओन आइज...'

'फिर भी—उसे काफी शिक्षा मिल चुकी है, अब छोड़ दीजिए...'

'आप कौन हैं दादा ? दया के अवतार हैं क्या ?'

'मैं कोई नहीं हूं। एक साधारण राहगीर हूं। लेकिन रास्ते पर एक आदमी को बिना सबूत के मार डाला जा रहा है देखकर...'

इस बीच भीड़ काफी बढ़ चुकी थी...उसी तरह चीखना चिल्लाना भी खूब हो रहा था। पीछे से कोई हिमांशु की बात सुनकर बोल उठा, 'कौन है रे ? दल का आदमी है क्या ?'

'क्या पता ! देखने से शरीफ आदमी लगता है।'

'आजकल शरीफ या शैतान को चेहरा देखकर पहचान पाना संभव नहीं। जेबकतरे भी शरीफों जैसे कपड़े पहनते हैं। दादा की इतनी हमदर्दी उसके लिए देखकर तो...'

हिमांशु को साथ न देखकर मंदिरा रेस्टूरेंट से बाहर निकल आई थी। भीड़ से हटकर उदास सी खड़ी थी। समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे। हिमांशु अगर कुछ शुरू कर देता है तब उससे टोका-टाकी बिल्कुल सहन नहीं होती है बल्कि उल्टा ही होता है, वह और गुस्सा हो जाता है। इस वक्त भी वह मंदिरा की बात नहीं सुनेगा। हिमांशु का दुबला पतला शरीर भीड़ में सबसे ऊंचा होने के कारण दिखाई पड़ रहा था। आंखें चमक रही थीं। जी जान से चिल्ला रहा था, 'नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता है।'

एक मध्यवर्षीय सहृदय चेहरे वाले सज्जन बोले, 'ठीक है, अब ज्यादा मारने की जरूरत नहीं है। सिर्फ इसके दोनों हाथों को तोड़ दीजिए जिससे कि जिंदगी भर यह काम न कर सके। भीख मांगकर खाना पड़ेगा।'

यह प्रस्ताव सभी को पसंद आया। तब उस व्यायामवीर ने अपना जूता पहना दाहिना पैर ऊपर उठाया—पैर से उस लड़के का हाथ कुचल डालने का इरादा था। हिमांशु सारी शक्ति लगाकर भीड़ ठेलता आगे बढ़ा और व्यायामवीर का हाथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पकड़कर झटकते हुए बोला, 'क्या कर रहे हैं ? एक स्वस्थ आदमी का हाथ तोड़ डालेंगे ?'

व्यायामवीर अब पलटा। भारी आवाज में बोला, 'आप कौन हैं जनाब ? तब से देख रहा हूं आपके भीतर का तेल बहुत चू रहा है। जाइए-जाइए अपने रास्ते जाइए।'

हिमांशु उस आदमी की धमकी से डरा नहीं बल्कि उसकी आंखों में आंखें डालकर बोला, 'आप ये क्या कर रहे हैं ? आपमें इंसानियत नाम की चीज नहीं है क्या ?'

'फिर बड़ी-बड़ी बात ? कह रहा हूं न रास्ता पकड़िए।'

इस बार हिमांशु ने दृढ़ता से कहा, 'नहीं जाऊंगा। रास्ते पर खड़े होकर दिनदिहाड़े खुल्लमखुल्ला ऐसी घटिया हरकत करेंगे और समझाते हैं कोई विरोध तक नहीं करेगा ? जेबकतरा पकड़ा है तो पुलिस को दीजिए। पुलिस...'

'पुलिस को देने से क्या होगा यह हमें खूब पता है सब साले घूसखोर हैं आप बताइए आपका क्या स्वार्थ है ? तब से फचर-फचर कर रहे हैं ?'

'स्वार्थ की कोई बात नहीं है। अन्याय होते देखकर कोई भी...'

उस आदमी ने एक झटके में हिमांशु के छाती के पास की कमीज मुट्ठी में पकड़कर ऐंठते हुए कहा, 'ओः, खूब रोब दिखाया जा रहा है ?' उसके कमीज पकड़ने से हिमांशु से गला कस रहा था।

हिमांशु बोला, 'आप मुझे मारेंगे ?'

एक आदमी हिमांशु की मदद को नहीं बढ़ा, न ही उसकी बात का समर्थन किया बल्कि मजेदार घटना का हंस-हंसकर आनंद उठाने लगे।

व्यायाम वीर बोला, 'तुम कौन हो बताना तो जरा बच्चा। खुद ही चेहरा भी तो किसी पॉकेटमार से कम नहीं। दूं क्या नक्शा बिगाड़ ?'

हिमांशु ने ठंडी आवाज में पूछा, 'आप मुझे मारेंगे ?'

'साला...'

व्यायामवीर ने घूंसा ताना। वही घूंसा हिमांशु के चेहरे पर पड़ गया होता तो मुंह कुचल जाता। पागलों की तरह दौड़ती हुई मंदिरा आकर दोनों के बीच में कूद पड़ी। आर्त स्वरों में चिल्ला उठी, 'छोड़ दीजिए।'

हिमांशु तीव्र दृष्टि से मंदिरा को देखकर बोला, 'तुम हट जाओ। क्या होता है मुझे देखना है। मार डालेंगे न ? मारें।'

व्यायामवीर ने मंदिरा से पूछा, 'ये आपके कौन हैं ?'

'मेरे पति हैं।'

'मदिरा, तुम हट जाओ।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
'मेरी तबीयत खराब हो रही है। मुझसे अब खड़े रहते नहीं बन रहा है...'

'जरा और रुक जाओ। मैं यहां से भाग नहीं सकता हूं। ये लोग जो मर्जी में आएगा करेंगे और हम बर्दाश्त करते रहेंगे ?'

'मुझे चक्कर आ रहा है...पकड़ो...टैक्सी...मुझसे अब नहीं...,' अक्समात मंदिरा वहीं जमीन पर आंख बंद करके बैठ गई। बिल्कुल उस जेबकतरे लड़के के निर्जीव पड़े शरीर से सटकर। पल भर में जनता स्तब्ध हो गई—मानो एक नाटक का चरम मुहूर्त हो। इसके बाद ही गुंजन। कुछ लोग एक साथ चिल्ला उठे, 'एक औरत बेहोश हो गई है, औरत बेहोश हो गई है...टैक्सी, टैक्सी...'

टैक्सी मिलने में देर नहीं हुई। मंदिरा को पकड़कर खड़ा नहीं करना पड़ा, किसी तरह से लड़खड़ाते हुए वह उठकर खड़ी हो गई। विह्वल भाव से हिमांशु उसका हाथ पकड़े रहा। सीट पर सिर रखकर मंदिरा ने आंखें बंद कर लीं। टैक्सी के छूटते ही तीन टिप्पणियां सुनने में आईं।

'कसम से, ये सब क्या मामला है रे ?'

'जाः साला, खूब बच गया इस बार। जा साला, बीबी के आंचल में जाकर छिपा रह।

'मांग में सिंदूर नहीं, कैसी बीवी है समझ ही ले।'

काफी देर तक बेहोश सी पड़ी रही मंदिरा। हिमांशु बहुत घबरा गया था, उसका चेहरा लाल हो रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था क्या करे। अगर मंदिरा जल्दी होश में न आई तो इस हालत में उसे कहां ले जाएगा ? उसके घर पहुंचा दे ? वहां अगर मंदिरा को पकड़कर उतारना पड़ा तो ? आज तक हिमांशु मंदिरा के घर कभी नहीं गया था—आज जाना ही पड़ जाएगा, और कोई चारा नहीं है। मंदिरा के सिर पर हाथ फेरते हुए फुसफुसाकर कहने लगा हिमांशु, 'डरने की कोई बात नहीं है, अभी ठीक हो जाओगी।'

एसप्लेनेड के इलाके में टैक्सी आ गई तो मंदिरा हिली। आंखें खोलकर बोली, 'कम हो गया है। ठीक हो गई हूं।'

'तुम्हें हुआ क्या था ?'

'अचानक न जाने तबीयत कैसी...'

'मुझे तो तुमने बुरी तरह से डरा दिया था...'

'तुमने भी मुझे कम नहीं डराया था। तुम्हारा खाना भी नहीं हुआ। चलो, कहीं बैठकर खाएंगे, मुझे भी भूख लगी है।'

'सचमुच बताओ तो तुम्हें क्या हुआ था ?'

'बताया तो कि अचानक सिर में चक्कर आ जाने से...'

'मोनी, पहले तो तुम्हारी तबीयत इतनी खराब थी नहीं ? सिर चकराना तो

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमजोरी के लक्षण हैं।'

'अचानक तो किसी को भी कुछ हो सकता है।'

'नहीं, तुम्हारा इतना अच्छा स्वास्थ्य था–मेरे साथ टहल-टहलकर, या छूत लगने से तुम्हें तो कुछ नहीं हो गया है ?'

'प्लूरिसी छूत की बीमार बिल्कुल नहीं है।'

'तुम्हारे पीठ में दर्द होता है ?'

'जाः पागल ! कह तो रही हूं वह सब कुछ नहीं है। अचानक सिर चकरा उठा था...'

'लेकिन अचानक ऐसा होगा क्यों ?"

'ये तो बड़ी मुश्किल बात है। हुआ तो मैं क्या करूं ?'

'मोनी, सच-सच बताओ, तुम्हें कुछ हुआ था या मुझे बचाने के लिए...'

हड़बड़ाकर मंदिरा सीधे होकर बैठी। हिमांशु के पास आकर क्रुद्ध स्वरों में बोली, 'उससे पहले मेरी एक बात का जवाब दोगे ?'

'क्या ? पूछो।'

'तुम दुनिया भर की बात सोचोगे, सिर्फ मेरी बात जरा भी नहीं सोचोगे ?'

'क्यों ? यह बात क्यों कह रही हो ?'

'तुम भीड़ के बीच में मुझे अकेली छोड़कर उन लोगों से मारपीट क्यों करने लगे ? एक बार भी मेरी बात नहीं सोची ?'

'मैं कहां मारपीट करने गया था ?'

'क्या मेरी इच्छा नहीं होती है कि शाम को हम दोनों जरा एकांत में बैठकर बातें करें, हंसें बोलें, खुश रहें ? सो नहीं, वे सब पहलवान जैसे आदमी जो मारने के नशे में पागल हो रहे हैं, उनके बीच में गंवारों की तरह तुम क्यों घुस गए झगड़ा करने के लिए ? अगर वे लोग तुम्हें उस पॉकेटमार की तरह मारते तो मेरी क्या हालत होती, सोचो ?'

हिमांशु पल भर के लिए खामोश रहा। मंदिरा के कंधे से हाथ हटाकर बोला, 'मोनी, मैं क्या करूं बताओ ? मुझमें क्या कोई भी काबिलियत नहीं है ? मैं अन्याय के खिलाफ कुछ कह ही सकता हूं क्यां ?'

'नहीं, तुम इस तरह की बातों का प्रतिवाद करने की कोशिश कभी नहीं करोगे।'

'मुझे मालूम है तुम ऐसा क्यों कह रही हो। मेरे शरीर में ताकत नहीं है, मैं कमजोर हूं इसीलिए मेरा अन्याय के खिलाफ प्रतिवाद करना शोभा नहीं देता है।'

'ये सब ताकत दर्शाने की बातें नहीं हैं। इतने सारे लोग जहां इकट्ठा हों उनमें से एक भी अगर न्याय अन्याय की बात न समझना चाहे तो तुम अकेले कहकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
क्या कर लोगे ? इसके अलावा इस तरह की अन्यायपूर्ण घटनाएं तो आजकल रोज ही घट रही हैं। लेकिन दुनिया भर के अन्याय के प्रतिकार की जिम्मेदारी तुम्हीं को लेनी है—यह भी कोई बात हुई क्या ?'

'दुनिया भर के अन्याय का प्रश्न नहीं है। आंखों के सामने ऐसी वीभत्स घटना होते देखकर प्रतिवाद भी अगर न करूं तो मेरा जीना किस काम का ? मैं जीऊं किस बात के लिए ?'

'तुम मेरे लिए जीओगे...'

'लोग जिंदा रहने दे कहां रहे हैं ? हर समय...'

'हम चाहें तो लोगों को नजरअंदाज कर अपने ढंग से जी सकते हैं अलग से...'

'नहीं-नहीं जी सकते हैं। सभी दुश्मनी जता रहे हैं। मेरे साथ तुम्हारा मिलना-जुलना लोग बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। टैक्सी पर चढ़ने के बाद लोगों ने क्या कहा था, सुना था न ?'

'नहीं, मैंने नहीं सुना था। तुम्हीं को जरूरत क्या थी सुनने की ?'

'न सुनता तो क्या करता ? गला फाड़-फाड़कर कहा तो...'

'मुझे तो फिर भी नहीं सुनाई पड़ा।'

'सुनने को तुम बाध्य हो। वे लोग कह रहे थे मैं तुम्हारे आंचल के नीचे छिपकर...'

मंदिरा ने अंगुली से हिमांशु के होंठ बंद करते हुए कहा, 'चुप ! मुझे ऐसे बातें मत सुनाओ। मैं उनकी बातें सुनती ही नहीं हूं। अगर कोई मेरे कानों के पास आकर भी चिल्लाकर कहेगा तो भी मैं नहीं सुनती हूं। औरतों में ये क्षमता होती है। दक्षयज्ञ के समय सती ने शिव की निंदा सुनी थी क्या ?'

'मैं शिव नहीं हूं। बुराई करने लायक मुझमें बहुत कुछ है।'

'तुम मुझे और कितना कष्ट दोगे बोलो ? तुम क्या मुझ पर जरा भी विश्वास नहीं कर सकते हो ? तुम सोच रहे हो, मैंने बीमारी का अभिनय किया था ? वास्तव में मेरी सांस रुक रही थी, मुझे तकलीफ हो रही थी। अगर तुम बार-बार यही कहोगे तो देख लेना मैं सचमुच एक दिन मर जाऊंगी।'

'मोनी तुम समझ नहीं रही हो...अरे, अरे, तुम इस तरह से क्यों कर रही हो ? मोनी, मंदिरा, नहीं-नहीं, में वादा करता हूं फिर कभी ऐसी बात नहीं कहूंगा, मेरी अच्छी मोनी, मेरा विश्वास करो...'

मंदिरा हिमांशु के सीने में मुंह छिपाकर फफक-फफककर रोने लगी। दोनों हाथों से हिमांशु को मुक्के मारने लगी। टैक्सी वाले ने पीछे मुड़कर देखते हुए मुस्कराकर पूछा, 'अब किधर जाऊं सर ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मोनी, सीधी होकर बैठो, अब किधर जाना है बताओ ?'

'पार्क स्ट्रीट।'

'पार्क स्ट्रीट ? वहां कहां जाओगी ? पार्क स्ट्रीट क्यों जाना चाहती हो ?'

'मेरी मर्जी।'

अब जाकर हिमांशु हंसा। मंदिरा को गुस्सा होते देख वह बिल्कुल नहीं डरता है। बल्कि उसे रोते देख हक्का-बक्का रह जाता है, कमजोर पड़ जाता है। हंसते हुए बोला, 'ठीक है, जिधर तुम्हारी मर्जी उधर ही जाएंगे। तुम्हारे आगे मैं आत्मसमर्पण करता हूं।'

आंखें पोंछते हुए मंदिरा सीधी होकर बैठी, 'करते हो न ? आज के बाद फिर कभी मेरी बातों के खिलाफ नहीं जाओगे न ? तब फिर, इस वक्त हम पार्क स्ट्रीट के किसी दुकान से मुर्गे को रोस्ट खरीद लेते हैं और गंगा के किनारे बैठकर रोटी के साथ खाएंगे। हमारी पिकनिक भी हो जाएगी।'

'ओहो...टैक्सी का बहुत किराया लग जाएगा। उस पर, पार्क स्ट्रीट की दुकान से खाना...बहुत ज्यादा पैसा खर्च हो जाएगा।'

'जाने दो...एक दिन की ही तो बात है।'

पार्क स्ट्रीट से खाना खरीदकर आउट रामघाट पर आकर उन्होंने टैक्सी छोड़ दी। गंगा के किनारे-किनारे चलते हुए वे लोग एकांत सी जगह ढूंढ़ने लगे। हंस-हंसकर उन्हें बातें करते देख कोई भी सोच सकता था कि दुनिया के सबसे सुखी लोग ये ही हैं। मनपसंद जगह न मिलने पर भी उन्हें खीज नहीं हो रही थी।

अचानक पानी बरसना शुरू हो गया। बहुत जोरों से। कहीं खड़े होने की जगह न पाकर मंदिरा बोली, 'चलो आउट रामघाट के शेड के नीचे चलें। दौड़ो...' कहकर मंदिरा तेजी से दौड़ने लगी। हवा में बाल उड़ने लगे, साड़ी का आंचल फड़फड़ाने लगा फिर भी वह तेज दौड़ी। हाथों में खाने का पैकेट संभाले हिमांशु भी उसके साथ-साथ दौड़ने लगा।

इतना जरा सा दौड़कर कमजोर हिमांशु थककर हांफने लगा। जब वे शेड के नीचे पहुंचे हिमांशु धौंकनी की तरह सांस खींच और छोड़ रहा था। सारा शरीर भीग गया था।

मंदिरा उसे देखकर बोली, 'ईश, तुम तो बिल्कुल ही भीग गए हो और आज ही मैं बनियान नहीं लाई हूं। अगर फिर तुम्हें ठंड लग गई तो ?'

पानी में भीगना हिमांशु को अच्छा लगा था। हंसते हुए बोला, 'जाने दो...एक ही दिन की तो बात है, कुछ नहीं होगा। इतनी सावधानी बरत सकना संभव नहीं।'

'तुम्हारा रूमाल भी गीला हो गया है ?'

'हां।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आओ, मैं अपनी साड़ी के आंचल से तुम्हारा सिर पोंछ दूं।'

'नहीं, नहीं, उधर इतने सारे लोग खड़े हैं—देखेंगे तो आवाजें कसेंगे...'

'कसने दो—मुझे थोड़े ही उनकी परवाह है। तुम दयाकर के उधर कान मत दो—सब इतना ही काफी होगा। आओ इधर...'

लाचार हिमांशु ने सिर झुका दिया। आंचल से उसका सिर पोंछते हुए अचानक मंदिरा खिलखिलाकर हंसने लगी।

हिमांशु ने पूछा, 'यह क्या ? हंस क्यों रही हो ?'

'देखा न, उन लोगों ने जो कहा था, वही हुआ। तुमने तो मेरे आंचल में अपना मुंह छिपा लिया है।'

'इस तरह से आंचल के नीचे मुंह छिपाना मुझे अच्छा ही लगता है—भले ही कोई कुछ कहे...'

पानी बरसता ही जा रहा था। उनका खाना ठंड होने लगा। एकाएक हिमांशु बोला, 'अब मुझसे सब्र नहीं हो रहा है—चलो, खड़े-खड़े ही खाते हैं।'

मंदिरा बोली, 'अब तक क्यों नहीं कहा था ? लाओ।'

उन लोगों ने आराम से मुर्गा खाना शुरू किया। कुछ लोगों ने देखा, कुछ न टीका टिप्पणी भी की पर इन लोगों ने उधर ध्यान ही नहीं दिया। खाना खत्मकर बरसात के पानी में हाथ धोते हुए हिमांशु बोली, 'पानी बरसने का कोई माने हुआ ? आज हमने सोचा कहीं बैठकर पिकनिक करेंगे और आज ही पानी बरसने लगा यह बड़ा भारी अन्याय है।'

मंदिरा हंसकर बोली, 'इस अन्याय के लिए तुम किसी का प्रतिवाद नहीं कर सकोगे। भगवान के तो तुम मानते नहीं हो।'

हिमांशु ने भी हंसते हुए उत्तर दिया, 'लग रहा है भगवान को मानता तो अच्छा करता। तब फिर हर न्याय-अन्याय के लिए उसे ही जिम्मेदार ठहरा सकता है।'

4

अंत तक मंदिरा ने ही एक घर पसंद कर डाला। उसके ऑफिस की लड़कियों ने पता बताया था। दो छोटे कमरे, बाथरूम, रसोई, किराया एक सौ पैंतीस। था निचली मंजिल में लेकिन सामने ही बड़ा रास्ता था, हवा रोशनी की असुविधा नहीं थी। मंदिरा तनख्वाह पाती है एक सौ अस्सी, कटने कटाने के बाद हिमांशु पता है दो सौ अड़तालीस—दोनों मिलकर किसी तरह से चला लेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शादी वाले दिन हिमांशु की बुआ नहीं आईं। अपनी बिरादरी के बाहर की लड़की, उस पर रेजिस्ट्री वाली शादी—बुआजी को इन बातों से चिढ़ है। बुआजी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि हिमांशु उनकी मर्ज़ी के खिलाफ जाएगा और गैर जाति की लड़की से शादी करेगा। उन्होंने मन ही मन हिमांशु के लिए अपने बगल वाले पड़ोसी की लड़की पसंद कर रखी थी। गोलमटोल, सीधी शांत सी लड़की। मंदिरा को पहली बार देखा तो पसंद नहीं आई थी। यद्यपि बाद में एक दिन फूफाजी घर आए थे, आशीर्वाद कर गए थे और मंदिरा के लिए पंद्रह रुपये की एक साड़ी भी ले आए थे।

लेकिन मंदिरा के दोनों भाइयों ने अंतिम समय में अक्लमंदी का परिचय दिया था। बहुत गुस्सागुस्सी, बहसाबहसी और रोने-धोने से जरा भी फायदा नहीं हुआ। मंदिरा ने अपने शादी की बात छिपाई नहीं थी, साफ शब्दों में कह दिया था कि उनतीस नवंबर, शनिवार, दोपहर दो बजे वेलिंग्टन के रेजिस्ट्रार ऑफिस में उसकी शादी है, उसकी चौबीस साल की उम्र है अतएव उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ करना अक्लमंदी की बात नहीं होगी। शनिवार सुबह तक भाई लोग हिमांशु के लिए उल्टी-सीधी बातें करते रहे, मंदिरा का इरादा बदलने की कोशिश करते रहे लेकिन अंत में दोपहर में वे लोग खुद ही मंदिरा को साथ लेकर शादी करवाने गए।

मंदिरा के दोनों भाइयों ने पलंग और अलमारी दी। हिमांशु ने मंदिरा के लिए बनारसी साड़ी खरीदी थी और उसने अपनी जमा की पूंजी से हिमांशु के लिए गरद का कुर्ता और सफेद कश्मीरी शाल खरीदा था। हिमांशु और मंदिरा, दफ्तर के दोस्तों को रेजिस्ट्री के बाद साथ लेकर होटल में खाने गए। वहां हंसी मजाक का ऐसा माहौल बना कि छोटा-मोटा शादी का घर लगने लगा। सभी खुश थे, मंदिरा हिमांशु की खुशी से सब खुश थे। शादी के तीन दिन बाद ही वे लोग अपने नए घर में रहने आ गए।

जाड़े के दिन थे, साग सब्जी सस्ती थी, हिमांशु का स्वास्थ्य काफी ठीक हो गया था। पहले की तरह उसे कमजोरी महसूस नहीं होती थी, गुस्सा आने पर शरीर भी अब थरथर नहीं कांपता था। इसके अलावा मंदिरा उसे गुस्सा करने का मौका ही नहीं देती है। दोनों बांहों से उसे घेर रखा था। गृहस्थी के लगभग सभी कामों से उसे छुटकारा दिला दिया है। मंदिरा उसके स्वभाव को समझती है। कुछ लोग हर दिन के बंधे बंधाए काम से ऊबते हैं एक नौकरानी रखी है, बाजार का काम वही कर देती है। दूध का राशन का कार्ड हिमांशु को बताए वगैर ही मौका निकालकर मंदिरा ने बनवा लिया है।

सुबह दोनों खा-पीकर एक ही साथ दफ्तर के लिए निकलते हैं, मोड़ की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुकान से पान खरीदकर खाते हैं फिर एक ही बस पर चढ़ते हैं। छुट्टी के बाद अब दोनों एक साथ नहीं लौटते हैं बल्कि जिसे पहले मौका मिलता है वही पहले घर आ जाता है। हिमांशु के कभी भी अधिक दोस्त नहीं थे, न ही वह चाय की दुकान में बैठकर गप्पें हांकता है इसलिए शायद ही वह कभी देर करता है। मंदिरा भी ज्यादातर अपनी सहेलियों को घर ले जाती है, छोटे-मोटे काम करते हुए बातें करती है। दोनों की कमाई बहुत थोड़ी है मगर इसी में मंदिरा ने सब ठीकठाक कर लिया है। देखकर लगता है कोई अभाव नहीं है, अशांति नहीं है।

मंदिरा की विवाहिता सहेलियां अक्सर कहती हैं, 'सच मंदिरा, तुझसे जलन होती है। तू हर समय खुश कैसे रहती है रे ?' मुस्कराकर मंदिरा कहती, 'मुझे किसी चीज की कमी नहीं है इसलिए। मुझे जीवन में जितना मिला है, उसे ही मैं बहुत समझती हूं।'

दफ्तर से लौटकर, कपड़े बदलकर मंदिरा खाना बनाने बैठती है और हिमांशु बातें करता है, चित्र बनाता है। अपनी मर्जी से तस्वीरें बनना उसने लगभग छोड़ ही दिया है लेकिन उसकी कुछ तस्वीरें खरीदने की बात हो रही है। उसे ही बना रहा है ध्यान से...साधारण देवी देवताओं के चित्र...बन जाने पर साढ़े आठ सौ रुपये मिलेंगे। उसने सोच रखा है इन रुपयों के मिलने पर वह मंदिरा के साथ पुरी जाएगा और महीने भर रह जाएगा। नए घर में आते ही मंदिरा घर गृहस्थी के कामों में उलझ गई है—दफ्तर का काम, घर कर काम—सारा दिन काम ही काम...उसे छुट्टी की जरूरत है। पुरी जाने के बारे में उसने मंदिरा से कुछ नहीं कहा था। रुपया मिलते ही टिकट खरीदकर उसे चौंका देगा। शादी के बाद यही उनका हनीमून होगा।

अब हिमांशु और मंदिरा की अलग ही दुनिया है। वे एक-दूसरे में ही खोए रहते हैं। दूसरों के साथ मिलते-जुलते हैं, बातें करते हैं पर उन्होंने अपने आसपास ही दुनिया को समेट रखा है। पहले कभी-कभी हिमांशु सोचता था कि हमारे प्यार का कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है, किसी तीसरे पुरुष या नारी ने कोई समस्या नहीं खड़ी की है लेकिन बाकी सारी दुनिया के लोग उनके मिलन में बाधक हैं। अब वह दुनिया भी बीच से हट गई है वे दोनों सुखी हैं।

बड़े सुख से दिन बीत रहे थे। फिर भी एक दिन रविवार की सुबह दरवाजे की कुंडी जोरों से बज उठी। पायजामा बनियान पहने हिमांशु ने दरवाजा खोला। देखा लगभग आठ दस युवक सामने प्रसन्नचित्त खड़े हैं। उनमें से एक बोला, 'नमस्ते सर, आप इस मोहल्ले में नए आए हैं इसीलिए हम आपसे जान पहचान करने आए हैं।'

हिमांशु ने झट सोच लिया कि इन दिनों को पूजा वगैरह तो है नहीं कि चंदा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मांगने आए होंगे। चंदे के अलावा जान-पहचान बढ़ाने का और क्या कारण होगा ? उसने उन्हें भीतर बुलाकर बैठाया नहीं—भीतर बैठ गए तो आसानी से जाएंगे नहीं। फिर ज्यादा देर तक इन लोगों से बातें करना उसके लिए संभव भी नहीं।

हंसने की चेष्टा करते हुए हिमांशु बोला, 'नए कहां, लगभग ढाई महीने हो गए हैं यहां आए।'

'कभी-कभी आप लोग दिखाई पड़ जाते हैं। आप और आपकी वाइफ एक ही साथ दफ्तर जाते हैं। क्या आप दोनों एक ही दफ्तर में काम करते हैं ?'

'नहीं।'

'आपका कौन सा ऑफिस है ?'

'डलहौजी में, एक छोटा सा फार्म है।'

'खैर हम उपेन मित्र के पक्ष से आए हैं।'

'कौन उपेन मित्र ?'

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 4637
Dated 19/3/..

'वाह ! सुना नहीं है ? वह तो इस मोहल्ले से कार्पोरेशन के कौंसिल के लिए खड़े हो रहे हैं। इस मोहल्ले में सभी उपेन दा को पहचानते हैं। संग्रामी जनता की तरफ से...'

हिमांशु समझ नहीं पा रहा था कि उससे इन्हें क्या चाहिए। वोट के लिए नारेबाजी उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। इसके अलावा वह कर ही क्या सकता है ? ये लोग क्या उससे पोस्टर बनवाना चाहते हैं ? क्या इन्हें पता चल गया है कि वह चित्र बनाता है ? पेट के लिए चित्र बनाने पड़ते हैं लेकिन वह इलेक्शन के लिए पोस्टर नहीं लिखेगा।

सर्तक भाव से हिमांशु बोला, 'इलेक्शन में मैं क्या करूंगा ? मुझे तो ये भी नहीं पता कि वोट दे सकता हूं या नहीं।'

'वह सब हम देख लेंगे। सब ठीक हो जाएगा। यद्यपि विरोधी पक्ष हमारे जेनूईन वोटरों को दबा देने की कोशिश कर रहे हैं पर हम इसके लिए फाइट कर रहे हैं। वोट तो आप अवश्य ही उपेन दा को दीजिएगा, आप यंग प्रोग्रेसिव आदमी हैं...'

'हां, मेरा नाम रहा तो जरूर वोट देने जाऊंगा।'

'हम इस वक्त उसके लिए नहीं आए हैं। हम एक दूसरी जरूरत से आए हैं—आपको कुछ मदद करना होगा।'

'मैं क्या मदद कर सकता हूं बताइए ?'

'कुछ चंदा...'

'वोट के लिए चंदा ? वोट भी क्या कालीपूजा दुर्गापूजा की तरह हो गया है ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिमांशु ने अपनी बात हंसकर ही कहनी चाही। लड़के बिल्कुल दरवाजे के पास आ गए थे, प्रश्रय मिला नहीं कि घर के भीतर घुस आएंगे। हिमांशु दरवाजा रोके खड़ा था। भौंहें सिकोड़कर उसने फिर पूछा, 'वोट के लिए चंदे की क्या जरूरत है ?'

'एक इलेक्शन में क्या कम खर्चे होते हैं ? जनता के संग्राम में शामिल होने के लिए हमने सबको पुकारा है। यह लड़ाई हमारे जिंदा रहने की लड़ाई है—इसे सफल बनाना ही है। हमने हर फैमिली के नाम पर पंद्रह रुपये चंदा चढ़ा रखा है।'

'पंद्रह रुपये ? इस महीने के अंत में...'

'नहीं-नहीं, महीने के अंत में देने की जरूरत नहीं है, अगले महीने शुरू में ही दे दीजिएगा।'

'लेकिन वोटिंग तो इसी महीने के सत्ताईस तारीख को है...'

'तो क्या हुआ ? बाद में काफी उधार चुकाना रहता है...'

'मुझे तो आप माफ ही करें।'

'ठीक है—आप दस ही रुपये दे दीजिए।'

'सुनिए, मैं एक बात बताऊं ? मैं शांतिप्रिय इंसान हूं, किसी भी राजनैतिक दल में शामिल नहीं होना चाहता हूं। वोटर्स लिस्ट में अगर मेरा नाम होगा तो जाकर अपना वोट जरूर दे आऊंगा...और कुछ कर सकना मेरे लिए संभव नहीं।'

'आपको और कुछ करना नहीं हो...बस दस रुपये...'

'दस रुपये मेरे लिए मामूली नहीं है। मैं गरीब आदमी हूं। फिर किसी राजनैतिक दल में शामिल होना भी नहीं चाहता हूं।'

'शामिल होने की जरूरत नहीं है। आपको सिर्फ कुछ रुपये देने हैं...'

'रुपये देने के मतलब ही यह है।'

'नहीं-नहीं, बृहत्तर जनगंण के स्वार्थाथ...'

'मुझे माफ कीजिए।'

'चल-चल, ये किसी का दलाल मालूम होता है।'

'दूसरी पार्टी वाले पहले ही हथियार चुके होंगे।'

'कुछ पाता वाता होगा...'

'स्वार्थी दलालों के दिन पूरे होने वाले हैं—'

'सबों का सिर तोड़ देंगे एक दिन—'

'तभी कहा था, दिन भर घर में घुसा रहता है, मोहल्ले में किसी से मिलता-जुलता नहीं है जरूर कोई मामला है।'

धड़ाम से बाहर का दरवाजा बंद करके कांपते हुए हिमांशु भीतर आया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रसोई से बाहर आते हुए मंदिरा बोली, 'वे लोग चले गए ? तुमने ठीक कहा था, हम उनके पार्टी फंड में पैसे क्यों दें ? कौन है उपेन मित्र, न जान, न पहचान...इन लोगों ने मान ही लिया है कि यह सब हमें जानने की जरूरत नहीं है। सिर्फ वोट दो और रुपये दो। हुः ! तुम इतना उत्तेजित न हो।'

'खबरदार ! फिर कभी ये लोग तंग करने आएं तो तुम दरवाजा मत खोलना।'

'ये किस पार्टी के हैं ?'

'ये किसी पार्टी के नहीं हैं। इनमें से कई लड़कों को देखा है, काम-काज करते नहीं है, चौराहे पर खड़े होकर गप्पें हांका करते हैं, लड़कियों को देखकर सीटी बजाते हैं, गंदी बातें करते हैं। इलेक्शन आने पर ये लोग किसी भी पार्टी में घुस जाते हैं। अगर सचमुच ही पार्टी के मेंबर हैं तो चंदा की क्या जरूरत है ? चंदा मांगकर खुद खाएंगे, मौज करेंगे...'

दो दिन बाद एक और पार्टी आई। वैसे ही आठ-दस लोग, वैसे ही विगलित हंसी। इन लोगों में हिमांशु से परिचय बढ़ाने की कोशिश न कर, ऐसा भाव दिखाया जैसे पूर्व परिचित हों। सीधे उसे नाम ही से पुकारते हुए दल के नेता ने कहा, 'अरे भई हिमांशु बाबू, हमें हरिपद दा ने आपके पास भेजा है।'

'हरिपद दा कौन हैं ?'

'हरिपद दा मिश्र। इस बार कार्पोरेशन के इलेक्शन के ऐतिहासिक जातीय गणतांत्रिक दल के कैंडीडेट।'

इतने दिनों में हिमांशु मोहल्ले की गंदी दीवारों को देखकर जान चुका था कि किस दल से कौन खड़ा हो रहा है। हर दीवार पर बड़े-बड़े अक्षरों में तारकोल से उन्हीं लोगों के नाम लिखे हैं—नजर तो पड़नी ही है। उसे यह भी पता चल गया था कि उसका और मंदिरा कर नाम वोटर्स लिस्ट में नहीं है।

अतएव हिमांशु सहज भाव से बोला, 'हमें मालूम है कि वोटर्स लिस्ट में हमारा नाम नहीं है। हम आपके किसी काम नहीं आ सकते हैं।'

'आपके पास सर एक खास काम से आए थे। आपको राजी होना ही पड़ेगा।'

'मेरे जैसे मामूली आदमी से क्या खास काम हो सकता है समझ में नहीं आ रहा है।'

'आपका बैठक तीन दिन के लिए चाहिए।'

'मेरा बैठक ? क्यों ?'

'सुना है सर आपने फलां पार्टी को चंदा नहीं दिया है तब तो आप हमारी ही पार्टी के हुए न ?'

'मैं किसी भी पार्टी में नहीं हूं। इसके अलावा मैंने किसे चंदा दिया है किसे नहीं, आपको कैसे मालूम हुआ ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'वह सब हम पता कर लेते हैं। पार्टी के न सही, सपोर्टर तो हैं न ? वैसी गुंडा पार्टी को आप जैसे शरीफ लोग क्या सपोर्ट कर सकते हैं ?'

'कौन गुंडा पार्टी है न मैं जानता हूं न ही मैं उस बारे में आलोचना करना चाहता हूं। दया करके मुझे इसमें लपेटिए नहीं। किसी भी पार्टी को न ज्वाइन करने की आजादी तो आदमी को है न ?'

'कुछ भी हो, हम आपके बैठक में तीन दिन के लिए अपना दफ्तर खोलेंगे।'

'मेरे बैठक में ? असंभव। हमारे पास सिर्फ दो ही कमरे हैं, हम कैसे दे सकते हैं ? आप लोग दया करके किसी और घर में कमरा ढूंढ़ें—जिनके अपने मकान हैं, ज्यादा कमरे हैं—'

'आपका घर ठीक रास्ते पर है—बिल्कुल ठीक जगह है। मोड़ पर पोलिंग सेंटर होगा—उससे सौ गज दूर भी है—यही आइडियल है...'

'माफ कीजिएगा, मुझे दुःख है कि यह कमरा छोड़ना मेरे लिए संभव नहीं। दो ही कमरे हैं और इस कमरे में हमारे काम की चीजें हैं। फिर किसी राजनैतिक पार्टी के काम के लिए अपना काम बंद रखूं—इसके पक्ष में मैं नहीं हूं।'

'ठीक है। हमारे मिश्रजी ने कहा है अगर आप हमारे कहने पर कमरा देने को तैयार न हों तो तीन दिन के लिए तीस रुपया रेंट के तौर पर आपको दे दें। आपको भी इस तरह से तीस रुपये मिल जाएंगे।'

हिमांशु का चेहरा कठोर हो उठा। कर्कश आवाज में बोला, 'आपके मिश्रजी को रुपयों की गर्मी हो सकती है लेकिन मुझसे इस तरह की बातें मत करिए। मिश्रजी से कहिएगा तीस रुपया क्यों, तीस हजार रुपया खर्च करके वह रास्ते पर इलेक्शन ऑफिस बना सकते हैं।...मैं अपना कमरा नहीं दूंगा।'

'आप मिश्रजी का अनुरोध पालन नहीं करेंगे ?'

'आपके मिश्रजी को मैं पहचानता नहीं हूं। वह अगर अन्याय करें तो भी मुझे मानना होगा ?'

'आप पानी में रहकर मगर से झगड़ा करेंगे ?'

'यहां मगर बहुत सारे भले ही हों मैं बिल्कुल ही पानी में नहीं रहता हूं। मैं एक सभ्य देश में रहता हूं। यहां हर आदमी को निजी राय देने का अधिकार है। अच्छा, नमस्ते मेरे पास बात करने का समय नहीं है।'

'इतनी गर्मी कैसी ? ऐं ? बड़ा तेल...'

'चेहरे से ज्यादा तो गले की आवाज है।'

'किस मोहल्ले में आया है, जानता नहीं है अभी...'

'एक दिन भेजा उड़ाकर छोड़ूंगा।'

हिमांशु एक शब्द नहीं बोला। दरवाजे के सामने चुपचाप खड़ा रहा। वे लोग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धमकियां देते हुए चले गए। जब तक वे लोग दिखाई पड़ते रहे, देखता रहा।

फिर भीतर आकर हिमांशु बोला, 'एक चीज देखी है तुमने मंदिरा ? ये सब लोग बात शुरू करते हैं बड़ी शराफत से। पता है क्यों ? सारी रटीरटाई बातें होती हैं। फिर जब इनसे हमारे विचार नहीं मिलते हैं तब असली शक्ल सामने आ जाती है। असली बोली बाहर आ जाती है। तब डराते हैं।'

'वैसे तुम जो भी कहो इन्हें नाराज करना ठीक नहीं।'

'मैंने कहां उन्हें गुस्सा दिलाया ? वे ही मुझे गुस्सा दिलाने आए थे।'

'आजकल सभी जानते हैं, ये लोग इसी तरह का व्यवहार करते हैं। तुम्हारे अकेले के प्रतिवाद करने से कुछ नहीं होगा। वे लोग यूं ही धमकियां नहीं देते हैं—जाने कब क्या कर बैठें...'

थोड़ी देर तक हिमांशु मुंह फुलाए बैठा रहा। फिर अपने आपसे कहने लगा, 'अगर डर ही दिखाना था तो उससे पहले शराफत दिखाने की क्या जरूरत थी ? छीन लेते। चंदा न मांगकर सड़क चलते मेरी जेब से रुपये पैसे छीन लें। हमारे घर से सामान निकालकर फेंक देते। शारीरिक शक्ति में तो मैं उनसे जीत नहीं सकता हूं। न ही मुझमें छुरा-चाकू चलाने की क्षमता है। पर इसके ये मतलब तो नहीं कि वे डराएंगे इसीलिए मैं उनकी हर बात मान लूं ? कभी नहीं—कभी नहीं मानूंगा। हजार हो मैं मर्द हूं।'

मंदिरा पास आकर प्यार भरे हाथों से उसे छूती है। थोड़ी देर तक चुपचाप उसे देखती रही फिर बोली, 'मुझे लेकिन बड़ा डर लग रहा है। यह मोहल्ला अच्छा नहीं है।'

हिमांशु बोला, 'मोहल्ला कोई भी अच्छा नहीं है। भागते फिरने से कोई बच नहीं पाता है।'

5

शादी से पहले मंदिरा और हिमांशु शाम को रोज ही घूमने जाते थे। किसी-किसी दिन हिमांशु मंदिरा के दफ्तर के सामने आकर खड़ा रहता था। छुट्टी के बाद दोनों पैदल टहलते हुए मैदान चले जाते। मंदिरा ही हिमांशु को बुलाती थी। वरना, ऑफिस के युवा सहकर्मी मंदिरा का साथ ही नहीं छोड़ना चाहते थे। कोई उसे घर तक छोड़ देना चाहता तो कोई कहता कहीं बैठकर एक कप चाय पी लें। मंदिरा किसी को नाराज करना नहीं चाहती थी पर इन लोगों के हाथों से बचना भी मुश्किल था। हिमांशु के आ जाने पर वह किसी की तरफ देखे वगैर सीधे आगे बढ़ जाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किसी-किसी दिन अगर मंदिरा को ऑफिस से निकलने में देर होती या हिमांशु को दफ्तर में ओवरटाइम करना पड़ता तो दोनों पहले से तय करके सीधे मैदान में एक जगह पहुंच जाते। मैदान में अगर हिमांशु पहले पहुंच जाता तो किसी मूर्ति के नीचे बैठकर चुपचाप सिगरेट पीता रहता। और अगर मंदिरा पहले आती तो वह बैठती नहीं आसपास टहलती रहती। मैदान में किसी युवती का अकेले बैठे रहना ठीक भी नहीं। फिर भी, चाहे कोई पहले आता वह कभी भी बेचैन नहीं होता था, बार-बार घड़ी नहीं देखता था या कभी शक तक नहीं करते कि दूसरा आज नहीं आएगा। ऐसी बात कभी हुई भी नहीं थी। दफ्तर की छुट्टी के बाद दोनों मिलते ही थे।

इसके बाद वे कभी चले जाते गंगा की तरफ, या फिर विक्टोरिया मेमोरियल की तरफ। दोनों धीरे-धीरे टहलते हुए तन्मय होकर बातें करते—उनकी दुनिया एक दूसरे में सिमटकर रह जाती।

शादी के बाद काफी दिनों तक दोनों घूमने नहीं जा पाए। नई-नई गृहस्थी, मंदिरा घर को सुव्यवस्थित करने में लगी रही। दफ्तर से लौटते ही वह घर के कामकाज में लग जाती। ऊपर की मंजिल वाली बहू से जान पहचान होते ही उनसे मशीन मांगकर पर्दे सिलाई करने लगी।

और हिमांशु घर की आमदनी बढ़ाने के लिए एक ट्यूशन करने लगा। रविवार के अलावा हर दिन जाना पड़ता है, अस्सी रुपये मिलते हैं—कम क्या है ? दफ्तर से निकलकर हिमांशु एक दुकान में चाय टोस्ट खा लेता है फिर उल्टी तरफ की बस पकड़कर बेलगाछिया चला जाता है छात्र को पढ़ाने। हालांकि इस ट्यूशन के बिल्कुल खिलाफ थी मंदिरा। हिमांशु का स्वास्थ्य ठीक नहीं ज्यादा मेहनत वह कर नहीं सकता था। दो बड़े ही शरारती लड़कों को पढ़ाना पढ़ता है उसे...लौटते-लौटते रात के साढ़े नौ बज जाते हैं। खूब थक जाता है। खाना खाते ही नींद आ जाती है उसे। मंदिरा रोज ही शिकायत करती—कहती 'तुम यह ट्यूशन छोड़ दो। तुमसे तो बात ही नहीं कर पाती हूं। सुबह उठते न उठते दफ्तर जाने की जल्दी रहती है। फिर शाम अगर इस तरह से...'

इसके अलावा मंदिरा चाहती थी हिमांशु शाम को घर लौटकर चित्र बनाया करे। हिमांशु ने आर्ट कॉलेज से पूरा कोर्स किया था कभी वह एक बड़ा चित्रकार बनने के सपने देखा करता था। आज उस कला को जीवित रखने का समय ही नहीं है उसके पास। मंदिरा का मन है कि हिमांशु फिर से चित्र बनाए। उसे पता है कि इससे हिमांशु के मन में जो अशांति है वह किसी हद तक दूर हो जाएगी।

मंदिरा की बातें सुनकर हिमांशु हंसकर बोला, 'चित्र बनाकर होगा क्या ? हमारे देश में चित्रों की कोई कदर नहीं है। यह बात अगर तब समझ गया होता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो आर्ट कॉलेज में भर्ती ही नहीं होता। तस्वीर खरीदेगा कौन बताओ ? हमारे देश के अमीर लोग ही ज्यादातर रुचिहीन और मूर्ख हैं। और जिन्हें कला की समझ है वे गरीब हैं। उनके पास रुपया नहीं है। और फिर तस्वीकर खरीद भी लें तो टागेंगे कहां ? सामानो से लदे फदे कमरे में तो तस्वीर टांगी नहीं जाती है।

मंदिरा बोली, 'बिकती न हो तो न बिके। तुम अपनी खुशी के लिए बनाओ। देखो न कविता लिखने से क्या मिलता है ? फिर भी लोग कविता लिखते ही हैं।'

'कविता लिखने में कुछ पैसा खर्च नहीं होता है। लेकिन चित्र बनाने में जान निकल जाती है। रंग का कितना खर्च है जानती हो ? ट्यूशन छोड़ दूंगा तो रंग के लिए पैसे कैसे लाऊंगा ?'

फिर भी मंदिरा बच्चों जैसी जिद को दृढ़ता से बोली, 'मैं तुम्हें रंग के लिए पैसे दूंगी तुम ट्यूशन छोड़ दो। मैंने भी तो गाना सीखा है, छोटी लड़कियों को गाना सिखा सकती हूं। घर पर ही अगर एक छोटा सा गाने का स्कूल खोल लूं, इस छोटे कमरे में...तो तुम दूसरे कमरे में काम कर सकोगे।'

अन्यमनस्क सा होकर हिमांशु बोला, 'एक घर की स्त्री कमाई बढ़ाने के लिए काम करे और पति चित्रकारी जैसी विलासिता करें ये बात शोभा नहीं देती है। मर्द इससे खुश नहीं होते हैं। तुम तो बहुत कुछ कर रही हो। मैं अगर गृहस्थी के खर्चों के लिए मदद कर सकूं तो...'

मंदिरा चुप हो गई। उस बार की बीमारी के बाद हिमांशु का स्वास्थ्य ठीक नहीं हुआ था। एक खाट अकेले खींचना पड़ जाए तो वह हांफने लग जाता है। उसे मंदिरा से मदद मांगनी पड़ती है। इसके लिए वह काफी दुःखी भी था।

सौभाग्य की बात थी कि ट्यूशन के बदले हिमांशु को शाम के लिए एक अच्छा काम मिल गया। एक मशहूर शिशु प्रतिष्ठान में वह चित्रकला सिखाएगा। केवल शनिवार रविवार–तनख्वाह एक सौ रुपये। मंदिरा ने ही इस काम की सूचना दी उसकी एक सहेली के चाचा इस प्रतिष्ठान के सर्वेसर्वा थे। पर आश्चर्य की बात यह थी कि हिमांशु इस खबर को सुनकर उतना खुश नहीं हुआ। तरह-तरह के बहाने बनाकर टालने लगा। उसे लगा कि यह काम मंदिरा के परिचित के मार्फत मिल रहा है इसलिए यह उसका अपना नहीं है।

हिमांशु बोला, 'धत् ! यह काम मुझसे नहीं होगा। छोटे बच्चों को चित्रकारी सिखाने का अभ्यास नहीं है मुझे। मैं कैसे कर सकूंगा ?'

मंदिरा बोली, 'इसमें अभ्यास की क्या बात है ? छोटे बच्चों को सिखाना ही क्या होगा ? एक चिड़िया या एक फूल। छोटे बच्चों को अंग्रेजी या सवाल पढ़ाने का अभ्यास क्या पहले से था तुम्हें ?'

'ठीक है नहीं था पर वे तो दो ही हैं। ये तो पूरा क्लास होगा...अगर चिल्लाना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शुरू कर दें ?'

'देखना, दो एक दिन में तुम्हारी आदत पड़ जाएगी। फिर से तुम्हारे दफ्तर से ज्यादा दूर नहीं है और सिर्फ दो ही दिन जाना रहेगा। बाकी दिनों में हम पहले की तरह घूमने जा सकेंगे। तुम ट्यूशन छोड़ दो।'

'अचानक छोड़ दूं ? बच्चों के इम्तिहान होने तक तो...'

'तुम्हें इम्तिहान की फिक्र करने की जरूरत नहीं है। उन्हें अभी दूसरा मास्टर मिल जाएगा। फिर ट्यूशन में तो वे ही लोग जब जी में आता है ट्यूटर को हटा देते हैं। ये काम पक्का है...'

हिमांशु हिचकते हुए बोला, 'ठीक है...तुम जब कहती हो तो...अच्छा एक काम करते हैं। ये काम भी करते हैं और अभी ट्यूशन भी नहीं छोड़ते हैं। इससे आय ढंग की हो जाएगी...तुम एक ड्रेसिंग टेबिल खरीदने की बात कह रही थीं, कुछ महीनों में रुपये इकट्ठा कर...'

मंदिरा आश्चर्य प्रकट कर बोली, 'ऑफिस के बाद तुम दो दो काम करोगे ? उसके बाद ? तुम बीमार पड़ गए तो क्या होगा ?'

'जाओ, बीमार क्यों पड़ूंगा ? मैं अब काफी ठीक हूं। प्लूरिसी कोई बीमारी होती है क्या ?'

'बीमार भले ही न पड़ो, तुम दो-दो काम करने की जरूरत नहीं है।'

'वाह ! तुम्हीं कह रही थीं कि ड्रेसिंग टेबिल खरीदना जरूरी है।'

'हमने क्या खाट, ड्रेसिंग टेबिल आल्मारी खरीदने के लिए शादी की है ? और उन्हें खरीदने के लिए जान निकालकर मेहनत करना होगा ? हमारा अपना कोई समय नहीं होगा ? क्या तुम्हारी भी इच्छा नहीं होती है मेरे साथ बातें करने की, घूमने-फिरने की ?' हंसते हुए हिमांशु बोला, 'नहीं, इच्छा नहीं होती है।'

मंदिरा स्थिर दृष्टि से उसे देखते हुए बोली, 'सच-सच बताओ।' उसी तरह हंसते हुए हिमांशु ने जवाब दिया, 'तुम समझती नहीं हो ? यह भी क्या कहने की बात है ? पहले तो मेरे मन की बात सब समझा करती थीं।'

मंदिरा ने पास आकर हिमांशु के सीने में सिर रखा। हिमांशु ने उसे बांहों में भर लिया। होंठों से उसके कान के पास गुदगुदाने लगा। मंदिरा बोली, 'तुम्हें रुपये पैसे की इतनी चिंता करने की जरूरत नहीं है।'

'नहीं, करूंगा। तुम तो घर चला ही ले रही हो—मुझे तो कुछ सोचने देती नहीं हो।'

अब हफ्ते में पांच दिन हिमांशु के पास शाम को कोई काम नहीं रहता है। दफ्तर से घर लौट आने पर भी मंदिरा को साथ लेकर घूमने नहीं जा पाता। कुछ दिनों की बेहद गर्मी के बाद अचानक बरसात शुरू हो गई। कीचड़, जगह-जगह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ट्रैफिक जाम—ऐसी हालत में घूमने जाने का मूड कहां बनता है ?

प्लूरिसी के कारण हिमांशु का पानी में भीगना एकदम मना है। फिर भी इतनी सावधानी बरतने के बाद भी हिमांशु को बुखार आ गया। मंदिरा का चेहरा चिंता से उतर गया। लेकिन कोई कठिन बीमारी नहीं हुई थी इस बार मामूली इंफ्लूयेंजा था। सात दिन में ठीक हो गया। छुट्टियां लेने के कारण, ऑफिस में काम बहुत बढ़ गया था। लौटते-लौटते सात-आठ बजे जाते।

हिमांशु स्वस्थ होकर ऑफिस जाने लगा तो आराम से मंदिरा बीमार पड़ी। ऐसा लग रहा था लेकिन हिमांशु को स्वस्थ होने की इंतजारी में उसने बिस्तर नहीं पकड़ा था। पिछले पांच सालों से दोनों परिचित हैं और इस बीच हिमांशु दो बार बीमार पड़ चुका था, मंदिरा एक दिन भी नहीं। इस बार की बीमारी ने उसे खूब कमजोर बना दिया।

हिमांशु के कोई खास दोस्त नहीं है, कहीं जाने की जगह नहीं है इसलिए छुट्टी होते ही घर आकर मंदिरा के पास बैठ जाता।

मंदिरा कहती, 'तुम सारे दिन ऑफिस में बैठे रहते हो फिर शाम से घर में फंस जाते हो। तुम्हें खुली हवा की जरूरत है। जाओ, जरा बाहर का चक्कर लगा आओ...'

'अकेले-अकेले कहां जाऊं ?'

'जरा पार्क-वार्क घूम आओ या जाकर कोई पिक्चर देख आओ...सारे दिन मरीज के बिस्तर के पास...मुझे ऐसा कुछ नहीं हुआ है...'

'तुम्हें अकेले कमरे में लेटा छोड़कर मैं घूमने जाऊं या सिनेमा चला जाऊं ? मनी, तुमने यह बात सोची कैसे ?'

'वाह ! तो क्या ?'

'तुम ठीक हो जाओ उसके बाद एक साथ...'

शादी के बाद कितना कुछ करने भी योजना थी। शादी के पहले उनका सोचना था कि शादी के बाद वे पूरी तरह से आजाद हो जाएंगे। दोनों के ही रिश्तेदार ज्यादा नहीं हैं। गृहस्थी के लिए ज्यादा सिर दर्द नहीं मोल लेंगे—जहां जी चाहे घूमेंगे दफ्तर की छुट्टी होगी तो बाहर घूमने चले जाएंगे...बाकी दुनिया से रिश्ता तोड़ अलग अपनी दुनिया बसाएंगे लेकिन घर गृहस्थी अक्टोपास जैसी चीज है—एक तरफ से छुटकारा मिल जाए तो दूसरी तरफ से जकड़ लेता है।

मंदिरा ठीक हो गई तो एक दिन सचमुच दोनों घूमने निकले। दोनों उस दिन दफ्तर नहीं गए थे। दोपहर में चौरंगी में दोनों ने एक फिल्म देखी। उस दिन मंदिरा ने रात का खाना नहीं बनाया था—किसी दुकान से खाना खाकर लौट जाने का इरादा था। उससे पहले दोनों घूमेंगे-फिरेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इडेन गार्डेन में पहुंचकर अच्छी सी जगह देखकर बैठे ही होंगे कि दो ही मिनट बाद अचानक भयंकर शोर मचाते, चिल्लाते हुए बहुत सारे लोग इधर ही दौड़ते हुए आने लगे। घबराकर ये लोग उठ खड़े हुए। ये लोग गुंडे या बदमाश नहीं थे—भीड़ी थी—दौड़ रहे थे। आज तो कोई जुलूस भी नहीं निकलना था।

खेल के मैदान में गड़बड़ी हुई है। मारपीट शुरू हो गई थी जो अक्सर ही हुआ करती है पुलिस ने भी लाठी चार्ज कर दिया तो दर्शक जान बचाकर सबको धक्का मारते हुए भागने लगे।

हिमांशु और मंदिरा को सुरक्षित जगह में पहुंचने का मौका तक नहीं मिला...प्रबल वेग से वही हजारों लोगों की भीड़ उन्हें धकेलती ठेलती चली गई। दोनों दो तरफ छिटक गए। हिमांशु जब भीड़ छंटने के बाद संभला तब मंदिरा उसे कहीं भी नहीं दखाई पड़ी।

हिमांशु ने जोर से पुकारा, 'मंदिरा ! मंदिरा !' लोग उस वक्त भी दौड़ रहे थे—किसी को ढूंढ़ निकाल पाना बिल्कुल संभव नहीं था। हिमांशु वहां से हटकर एक पाम के पेड़ के नीचे चुपचाप खड़ा हो गया। भीड़ छंट जाने पर उसने कोना-कोना छान डाला पर मंदिरा नहीं मिली। डर के मारे उसकी छाती पत्थर सी भारी हो गई।

जबकि दोनों में से कोई भी नाबालिग नहीं है। सिर्फ इतना ही न हुआ है कि भीड़ ने धक्का मारकर दोनों को दो तरफ पहुंचा दिया है। मंदिरा आराम से घर लौट जा सकती है। मंदिरा को कोई बहला-फुसलाकर भी नहीं ले जाएगा क्योंकि वह कमजोर स्वभाव की लड़की नहीं है—हिमांशु यह बात अच्छी तरह से जानता है। पर अभी पांच ही महीने उनकी शादी को हुई है और घूमने के लिए निकलकर क्या वे दोनों साथ-साथ घर नहीं लौटेंगे ? इसके अलावा मंदिरा के खो जाने के लिए हिमांशु खुद को अपराधी मान रहा था। पुरुष होते हुए भी वह मंदिरा को भीड़ के धक्कों से बचा न सका ? वह पागलों की तरह मंदिरा को इधर-उधर को ढूंढ़ने लगा।

भीड़ के धक्के मंदिरा संभाल न सकी और दूर चली गई। कुछ देर तक उसे हिमांशु दिखाई नहीं पड़ा। फिर काफी दूर पर हिमांशु जैसा एक आदमी और उसके जैसी शर्ट देखकर पीछा करते-करते पार्क के बाहर निकल आई। बाद में जाना कि वह आदमी हिमांशु नहीं है। लेकिन अब भीतर लौट जाना संभव नहीं था। पुलिस के परेशान करने के कारण अनिच्छावश दौड़ना पड़ा।

मंदिरा की चिंता का कारण और था। उसे अपने लिए चिंता नहीं हो रही थी, वह तो घर लौट जा सकती है। लेकिन हिमांशु कमजोर आदमी है—भीड़ के धक्के खाकर गिर गया तो उसे चोट लग सकती है। फिर वह गुस्सेबाज आदमी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है, किसी के साथ भी झगड़ सकता है। रात को उन्होंने चौरंगी में ही खाने का इरादा किया था लेकिन किस रेस्ट्रा में खाएंगे सोचा नहीं था। अगर पहले से तय किया रहता तो मंदिरा वहीं चली जाती।

इधर-उधर ढूंढ़ने के बाद मदिरा फिर इडेन गार्डेन में गई। पर हिमांशु वहां भी नहीं मिला। साढ़े नौ बजे मंदिरा घर लौटी, देखा थककर चूर-चूर सा हिमांशु सीढ़ियों पर बैठा हुआ है।

तिक्त स्वरों में हिमांशु बोला, 'फिर कभी हम घूमने नहीं जाएंगे। इस घिनौने शहर में कहीं कोई घूमने जा सकता है ?'

हालांकि छुट्टी के बाद आजकल भी वे सीधे घर नहीं लौटते हैं। पर घूमने नहीं, मकान ढूंढ़ने के लिए जाते हैं। अभी जिस घर में हैं वहां कोई असुविधा उन्हें नहीं है, दो कमरे हैं, बाथरूम रसोई थोड़े छोटे भले ही हैं पर अपने हैं। शादी से पहले मंदिरा कभी किराए के मकान में नहीं रही थी फिर भी यहां सब ठीक-ठाक कर लिया था। उसमें छोटी जगह को सजाकर रखने का शौक है। लेकिन यह मोहल्ला बुरा है। गली के मोड़ पर गुंडे किस्म के लड़के हर समय इकट्ठा रहकर चिल्लाया करते हैं, हल्ला मचाते हैं। कभी-कभी तो बम भी फेंकते हैं। मंदिरा लोग निचली मंजिल में सड़क के किनारे रहते हैं—इन झमेलों को मुंह बंद रखकर सुनना पड़ता है। इसके अलावा चंदे के मामले में हिमांशु से मोहल्ले के लड़कों की अनबन हो चुकी है। किसी की धमकियों से डरने वाला हिमांशु नहीं है। आजकल कोई भी मोहल्ले के इन नए लौंडे लफाड़ियों को असंतुष्ट करने का साहस नहीं करते हैं लेकिन हिमांशु इन बातों की परवाह ही नहीं करता है।

मंदिरा ही घर बदलने के लिए उतावली हो गई थी। आजकल इस मकान में उसे काफी ऐब नजर आने लगे हैं जैसे रसोई की नाली से पानी नहीं निकलता है, बरसात के पानी की छींट पड़ने से बारामदा भीग जाता है वगैरह-वगैरह। असल में उसे पता है कि मोहल्ले के लड़कों के साथ झगड़ा करने के बाद यहां रहना सुरक्षित नहीं—खासतौर से हिमांशु जैसे विवेकशील इंसान के लिए। आदमी आजकल बड़ा ही नृशंस हो गया है।

अखबारों में मकान खाली के विज्ञापन देख-देखकर दोनों काफी चक्कर काट चुके थे। पर एक भी मकान लेने लायक नहीं थे। आजकल इश्तहार देते वक्त मकान मालिक लोग काफी झूठी खबरें छापते हैं—जैसे वर-वधू के इश्तेहारों में भी बहुत सी झूठी बातें लिखी रहती हैं।

विज्ञापन में अगर लिखा होगा दो कमरे तो जाने पर पता चलेगा रसोई को भी एक कमरे में शामिल कर रखा है। और बारामदे के कोने में एक छोटी सी जगह को रसोई बताते हैं। चौबीसों घंटे पानी आता है—जाने पर मालूम हुआ कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
घर के सामने ट्यूबवेल है, वहीं से पानी भरकर लाना होगा। तब भी मंदिरा ने हिम्मत नहीं छोड़ी—एक के बाद एक मकान देखती जा रही है।

वे लोग चाहते थे ज्यादा से ज्यादा दो सौ रुपये के भीतर दो कमरे बाथरूम किचन वाला सेपरेट सेट। किराया आय की तुलना में अधिक ही था पर मंदिरा का कहना था कि रहने की जगह अगर ठीक और पसंददीदा नहीं होती है तो आधा मजा ही किरकिरा हो जाता है।

कभी-कभी मकान पसंद आ जाता है लेकिन मोहल्ला ठीक नहीं लगता है। फिर भी दफ्तर से निकलकर वे लोग कम-से-कम तीन चार मकान तो देख ही डालते थे। अखबारों में निकले इश्तेहारों के अलावा साथ काम करने वाले कलीग भी मकान का पता देते हैं। हालांकि हिमांशु मकान के लिए किसी से कुछ नहीं कहता है पर मंदिरा जहां चलने को कहती है—उसके साथ चला जाता है।

चंद दिनों पहले ब्याहे इस जोड़े के पास अब कोई काम नहीं, न खुशियां रहीं—बस सिर्फ घर ढूंढ़ना उनका एकमात्र लक्ष्य हो गया। उसके बाद हर दिन की तरह रात को मुंह लटकाए घर लौटना, और खा पीकर सो जाना।

मंदिरा को भवानीपुर में देखा एक मकान बहुत पसंद आ गया। उसके ऑफिस की एक लड़की इस मकान का पता ले आई थी। अच्छा सुंदर दुमंजिला मकान, नीचे का हिस्सा पूरा किराए पर देंगे—मोहल्ला भी ठीक और शरीफों का जान पड़ा।

पता ढूंढ़कर मकान की बेल दबाते ही एक छोटे से नौकर ने दरवाजा खोला। घर देखने की बात सुनकर बोला, 'देखिए'। वह ऊपर चला गया। इन्हें तो उम्मीद ही नहीं थी कि इतना अच्छा घर होगा। कमरे दोनों ही काफी बड़े-बड़े थे, बीच में आंगन, चौड़ा बारामदा और सब कुछ साफ सुथरा। रसोई में काफी ताखें थीं यह क्या कम बड़ी बात थी ? मंदिरा उसी वक्त इसे किराए पर ले लेना चाहती थी।

लड़का वापस ही नहीं लौटा। हिमांशु ने जोर से आवाज लगाई, 'कोई है ?'

एक मध्यवर्षीय व्यक्ति उतर आए। नंगे बदन, छाती पर बड़े-बड़े बाल।

'क्या चाहिए ?'

हिमांशु ने कहा, 'हम किराए का मकान लेने आए हैं।'

'यह मकान तो उठ गया है।'

'किराए पर उठ गया है ?'

'हां। कल ही दो आदमी...'

मंदिरा थोड़ा आगे बढ़कर बोली, 'किराए पर उठ गया है ? लेकिन मुझे तो आज ही मालूम हुआ है कि अभी भी खाली है।'

उस आदमी ने शायद पहले मंदिरा को देखा नहीं था। इस बार उसे अच्छी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तरह से देखते हुए कोमल स्वरों में बोला, 'किराए पर उठ गया है माने, कल दो लोग आकर पसंद कर गए हैं, आज आकर एडवांस दे जाने की बात है—हालांकि अभी तक आए नहीं हैं। खैर आपको क्या घर काफी पसंद आया था ?'

मदिरा बोली, 'हां, बहुत पसंद आया था।'

'आपके फैमेली मेंबर कितने हैं ? ज्यादा बच्चे तो नहीं हैं न ?'

'नहीं-नहीं बच्चे नहीं हैं—हम लोग सिर्फ दो लोग हैं।'

'ठीक है—तब आपको दे सकते हैं। मुझे झंझट बिल्कुल पसंद नहीं है। मैं ऊपर अकेले रहता हूं—बस एक छोटा सा नौकर है। नीचे किराएदार अगर हंगामा न करे तो ठीक है। हां तो आप लोग कब आना चाहते हैं ?'

अब हिमांशु ने पूछा, 'किराया कितना है ?'

'दो सौ तीस।'

'दो सौ तीस ? तब तो बहुत ज्यादा है। माने हमारे बजट के बाहर है।'

इस समय जहां रहते हैं वहां एक सौ पैंतीस देते हैं, यहां ज्यादा से ज्यादा दो सौ दे सकते हैं इससे ज्यादा तो... । मंदिरा ने आंख से इशारा करके हिमांशु से कुछ कहना चाहा। हिमांशु डर गया। क्या मंदिरा दो सौ तीस ही में लेना चाहती है ?

व्यंगात्मक हंसी हंसकर मकान-मालिक बोला, 'जब बजट के बाहर है तब क्या किया जा सकता है ?' फिर मंदिरा की तरफ देखकर उदार भाव से बोला, 'मैं झंझट रहित टेनेन्ट पसंद करता हूं। आप लोग जब दो ही जने हैं तब ठीक है। दो सौ दस दे सकेंगे ? इससे कम में नहीं होगा।'

उत्साहित मंदिरा बोल बैठी, 'दो सौ दस में हम ले सकते हैं—क्यों जी ? अच्छा, क्या आज ही एडवांस पैसे देने होंगे ?'

'हां।'

'कितना ?'

'यही, जो आजकल सभी देते हैं। एक महीने का किराया डिपॉजिट और करेंट महीने का किराया...'

प्रस्ताव बिल्कुल न्यायसंगत था। मंदिरा ने हिमांशु की तरफ देखा। अप्रत्याशित रूप से हिमांशु बोल उठा, 'हम एडवांस का रुपया एक दो दिन बाद आकर दे जाएंगे।'

अरे, हिमांशु ने ऐसा क्यों कहा ? इतना अच्छा मकान क्या हाथ से जाने देना चाहिए ? रुपया तो मंदिरा के हैंडबैग में है यह बात क्या हिमांशु भूल गया है ? मंदिरा ने बैग उठाकर दिखाया लेकिन हिमांशु ने उधर देखकर भी नहीं देखा।

मकान-मालिक फिर व्यंगात्मक हंसी हंसे, 'दो दिन बाद एडवांस देंगे। दो दिन बाद आएंगे इसकी तो कोई श्योरिटी नहीं है। हम वेट नहीं कर सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दूसरी किसी पार्टी ने अगर रुपया ऑफर किया तो...,' फिर मंदिरा की तरफ देखकर बोला, 'पूरा रुपया अगर न हो तो कुछ दे जा सकती हैं।'

इस बार हिमांशु कठोर भाव से बोला, 'नहीं, हम बाद ही में आएंगे। और दो चार मकान देखें अगर मनपसंद मकान नहीं मिला तब यहां...चलो मंदिरा...'

उदास होकर वह बोला, 'और मकान देखेंगे ? ठीक है, देखिए।'

बाहर आते ही मंदिरा बोली, 'यह क्या ? तुमने यह क्या किया ? इतना अच्छा घर मिला फिर भी...

'मकान अच्छा नहीं है।'

'अच्छा नहीं है ?'

'ऐसा क्या अच्छा है ? मकान-मालिक जरा भी अच्छा नहीं है। मुझे पहले देखकर बोला, किराए पर उठ गया है। फिर तुम्हें देखकर राय बदल डाली। एक ही बात पर दो सौ तीस से दो सौ दस पर उतर आया। शुरू से आखिर तक तुम्हारी तरफ इतनी गंदी तरह से देख रहा था कि...'

'वाह ! यह सब तुम क्या कह रहे हो ?'

'मैं ठीक कह रहा हूं।'

'इस तरह से चलोगे तो अंत तक कोई भी मकान...अरे उसके साथ हमारा कोई संपर्क तो रहता नहीं—सब सेपरेट है।'

हिमांशु ने दृढ़ता से कहा, 'मकान मुझे पसंद नहीं आया है।' उसने 'मुझे' शब्द पर जोर डाला। मंदिरा चुप हो गई।

कुछ देर तक चुपचाप चलने के बाद मंदिरा फिर बोली, 'ऐसा भी तो हो सकता है कि वह आदमी भला ही हो और इसीलिए किराया कम कर दिया हो। कुछ अच्छे लोग अभी भी तो हैं।'

मंदिरा सोच रही थी कि शायद हिमांशु अपनी राय बदले तो लौटकर एडवांस दे आए। ज्यादा दूर आए नहीं हैं। एक अच्छा मकान जुटा पाना कितना कठिन है वह अब समझ गई है। मिलने पर भी हाथ से निकल जाने देना...'

क्रुद्धभाव से हिमांशु ने कहा, 'अच्छा आदमी ? कोई अच्छा आदमी किसी भी अपरिचिता महिला के सामने नंगे बदन नहीं आता है।'

'बहुत लोग इन बातों पर ध्यान नहीं देते हैं।'

'चुप रहो। इंसान को पहचाने में मुझसे गलती नहीं होती है। वह तुम्हारी तरफ इतने कुत्सित नजरों से देख रहा था कि उसे इंसान नहीं नरपशु कहना उचित होगा।'

मंदिरा फिर चुप हो गई। हिमांशु का गुस्सा देखकर आगे कुछ कह सकने का साहस न जुटा सकी। मगर घर हाथों से निकल जाने का दुःख उसे अभी भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हो रहा था। उसने ध्यान ही नहीं दिया था कि वह आदमी उसे कैसे देख रहा है। उसे बार-बार यही लग रहा था कि जब सब कुछ सेपरेट है तब मकान-मालिक से संपर्क ही कहां होना है ?

थोड़ी देर बाद मंदिरा से रहा न गया तो बोली, 'मैं इतनी मुश्किलों से मकानों के पते ढूंढ़कर ले आती हूं और तुम सबको कैंसिल कर देते हो। इतना बढ़िया मकान क्या फिर मिलेगा ?'

अब हिमांशु अपने गुस्से पर काबू न रख सका। बीच रास्ते पर रुककर चिल्लाने लगा, 'तुम कहना क्या चाहती हो ? हैं। गृहस्थी तुम्हारी अकेले की है ? मेरी दी राय की कोई कीमत नहीं है ? मैं कह रहा हूं मकान मुझे पसंद नहीं आया है लेकिन तुम फिर भी...'

मंदिरा सिर झुकाए खड़ी रही—एक शब्द नहीं बोली। इससे पहले इस तरह से हिमांशु ने उसे डांटा नहीं था। उसे रोना आ गया लेकिन मंदिरा दृढ़ स्वभाव की लड़की है, यहां आंसू निकलने नहीं देगी।

काफी देर तक दोनों चुपचाप चलते रहे। हरीश मुखर्जी रोड पर चलते-चलते वे लोग विक्टोरिया मेमोरियल के सामने आ गए। अब तक हिमांशु अनुतप्त हो चुका था। बीच रास्ते पर रुककर वह मंदिरा को इस तरह से डांटेगा यह बात उसने कभी सोची ही नहीं थी।

नम्र स्वरों में पूछा, 'मोनी, तुम नाराज हो ?'

मदिरा ने उत्तर नहीं दिया।

'मेरा एकाएक दिमाग, खराब हो गया था। तुम्हारे मन को चोट पहुंचाते हुए मुझे कुछ नहीं कहना था।'

'नहीं, मुझे चोट क्यों लगेगी।'

'प्लीज नाराज न हो मोनी। तुम्हें अगर बहुत पसंद है तो चलो, लौट चलते हैं...'

'नहीं।'

'नहीं क्यों ? चलो रुपया जमा कर आएं।'

'नहीं। मकान-मालिक ठीक न हो तो उस मकान में रहना ठीक नहीं। मैं समझ नहीं सकी थी।'

'ठीक है। अब से मैं भी अपने जान-पहचान वालों को मकान के लिए, कह दूंगा। या फिर अगर कोई ब्रोकर मिल जाए...'

'हम लोग कहां से बस पकड़ेंगे ?'

हिमांशु थोड़ी देर चुप रहा फिर बोला, 'अभी से घर लौटकर क्या करेंगे ? चलो, इधर थोड़ा घूमते हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आज रहने दो।'

'क्यों, इधर जब आ ही गए हैं...'

'न जाने फिर कब क्या गड़बड़ी शुरू हो जाए...'

'नहीं-नहीं आज कोई गड़बड़ी नहीं होने वाली है। चलो, मैदान की तरफ चलते हैं।'

'देखो, कैसे बादल हो रहे हैं...'

'होने दो, अभी पानी नहीं बरसेगा...'

हिमांशु की बात को झूठा साबित करने के लिए ही शायद भयंकर जोरों से पानी आया। मैदान में कहीं खड़े होने की जगह नहीं। उस दिन जैसे हजारों लोगों ने आकर उन्हें परेशानी में डाल दिया था, आज उसी तरह से असंख्य पानी की बूंदें थीं। घबराकर काफी इधर-उधर दौड़ने के बाद वे लोग एक गुलमोहर के पेड़ के नीचे जाकर खड़े हुए। पूरी तरह से बच न सके—खड़े-खड़े भीगने लगे। हिमांशु का भीगना उचित नहीं—मंदिरा को उसके लिए डर लगने लगा।

क्लांत स्वरों में हिमांशु बोला, 'मोनी, दुनिया में हमारे लिए घूमने-फिरने की कोई जगह नहीं है। हमारे लिए कहीं भी अच्छा घर नहीं है—हर जगह बाधा ही बाधा। इतना ढूंढ़ना-ढांढ़ना सब व्यर्थ है।'

मंदिरा हिमांशु के और पास चली आई उसका एक हाथ पकड़ा। खूब कोमल स्वरों में आंतरिक आवाज में बोली, 'सिर्फ हमारे दोनों के मनों में हम दोनों के लिए ब...हो...त जगह है। वहां कभी कोई बाधा न आए।'

6

'कौन आया था ?'

दरवाजा बंद करके मंदिरा लौट आई, 'एक गेरुआ वस्त्र पहना आदमी—किसी आश्रम के लिए चंदा मांग रहा था।'

'तुमने चंदा दिया क्या ?'

'दिया, आठ आना।'

'बिला वजह आठ आने दे दिए। रसीद दिया है ?'

'नही। कॉपी में चढ़ा लिया है।'

'कॉपी में चढ़ाने से क्या होगा ? जो भी आकर पैसा मांगेगा और तुम उसे...'

'मिशन के साधू संत मुझे पसंद हैं। तब भी तो वह लोग दूसरों के लिए कुछ करते हैं...'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
'सचमुच का साधू था या नहीं यह देख लिया था ? आजकल कितने चोर उचक्के इसी तरह से...'

'तुम आठ आने के लिए इस तरह से क्यों कह रहे हो ?'

'आठ आना पैसा कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन बेकार ही में ठगने की कोई जरूरत तो है नहीं...'

मंदिरा हंसी। बिस्तर पर बैठते हुए बोली, 'नहीं देती तो वह आदमी आसानी से जाना नहीं और देर तक खड़े-खड़े दिमाग खाता। मुझसे किसी के मुंह पर दरवाजा बंद करते नहीं बनता है। इसीलिए दे दिया।'

हिमांशु ने मंदिरा के हाथ पर हाथ रखकर कहा, 'मैं कंजूस नहीं हूं। आठ आने के लिए कुछ बनता बिगड़ता भी नहीं है पर देने से पहले मंदिरा उससे पूछ तो सकती थी। ऐसे लोग चुन-चुनकर दोपहर के वक्त ही आते हैं। उन्हें मालूम रहता है कि इस वक्त घर पर मर्द लोग नहीं रहते हैं। यही ठगने का सही वक्त है। जिस समय मैं घर पर न रहूं कोई भी बुलाए, तुम हर्गिज दरवाजा मत खोलना।'

मंदिरा कैसे कहे कि ऐसा संभव नहीं है। कुछ लोग तब तक दरवाजा पीटते रहते हैं जब तक की दरवाजा खोला न जाए। फिर भी हंसकर बोली, 'अच्छा।'

यद्यपि दोपहर में मंदिरा घर पर रहती ही कहां है ? वह भी तो दफ्तर जाती है। रविवार के दिन दोनों ही घर पर रहते हैं। आज तो दोनों ने दफ्तर से छुट्टी ली है। मंदिरा को घर ठीक-ठाक करना है। खिड़की के पर्दे सिले ही नहीं जा रहे थे—आज उन्हें सिल डालने का निश्चय किया है। हिमांशु ने भी ताव में आकर छुट्टी ले ली—आज वह दोपहर में आलस्य न करके मंदिरा से बातें करेगा। शादी को इतने दिन हो गए, दोनों कहीं घूमने ही नहीं गए।

मकान-मालिक की पत्नी सहसा मंदिरा से कुछ ज्यादा ही अच्छा व्यवहार कर बैठीं। सिलाई की मशीन मांगते हुए मंदिरा को शर्म आ रही थी। बहुत लोग होते हैं जो अपनी ऐसी चीजें दूसरों को इस्तेमाल करने नहीं देते हैं पर दर्जी को ढेर सारे पैसे देकर मंदिरा सिलवाना नहीं चाहती थी। इसीलिए बड़े ही संकोच से उसने मकान-मालकिन से यह बात कही थी। उनकी उम्र यही कोई पैंतालिस साल होगी, गोरा रंग और काफी मोटी—पर थुलथुल नहीं मजबूत गठीला बदन था। उन्हें मंदिरा चाचीजी पुकारती थी।

मंदिरा का प्रस्ताव सुनकर बड़े उत्साह से बोली, 'अरे ले जाओ न, मशीन तो पड़ी ही है। मैं आजकल सिलाई-विलाई नहीं करती हूं। ले जाओ न, नीचे ले जाओ।'

'नहीं-नहीं चाचीजी, नीचे नहीं ले जाऊंगी। यहीं बैठकर कर लूंगी।'

'यहां क्यों ? नीचे ले जाओ। कोई जल्दी नहीं है। तुम्हें जब वक्त मिले तब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करती रहना।'

'नहीं-नहीं, सचमुच नीचे ले जाने की जरूरत नहीं है।'

'अरे इसमें इतना तक्कलुफ क्यों कर रही हो ? रुको मैं हरी से कहती हूं। वह पहुंचा आएगा। बहुत भारी है, तुम न उठा सकोगी।'

नीचे आकर मंदिरा ने मशीन पर हाथ लगाया ही था कि मकान-मालकिन नीचे उतर आईं। ठीक से मशीन का इस्तेमाल हो रहा है यह देखने या गपशप करने, कौन जानें। सीधे बिन बुलाने कमरे में घुस आईं।

पूरे कमरे में कपड़े फैलाकर मंदिरा सिलाई करने बैठी थी। उसके पास ही हिमांशु एक मोढ़े पर बैठा था—इधर-उधर की बातें हो रही थीं। उन्हें देखकर मंदिरा बोली, 'अरे चाचीजी ! आइए।'

पर हिमांशु को देखकर वह दरवाजे के पास ही ठिठककर खड़ी रहीं। अभी भी पराए मर्दों के सामने आसानी से निकलती नहीं हैं। अतएव हिमांशु को ही उस कमरे से चलने आना पड़ा। मुंह लटकाकर बिस्तर पर लेट गया। सोचा था मंदिरा के साथ बैठकर गपशप करेगा, अब न जाने मकान-मालिक की बीवी कब जाएगी। न जाने क्यों लोग समझते नहीं हैं कि जिनकी नई-नई शादी हुई है उनके पास हर समय कहने के लिए बहुत कुछ रहता है उन्हें एकांत में छोड़ देना चाहिए। लेकिन तरह-तरह के बहाने बनाकर नवदंपत्ति के पास लोग आते हैं, 'मकान-मालिक की बीवी क्या बोली ?'

मंदिरा ने कहा, 'क्या कहेगी ? बस अपनी ही बातें, ननद के साथ झगड़े के किस्से—वह भी जी भरकर—मैंने तो एक शब्द नहीं कहा। मैं तो उस महिला को पहचानती तक नहीं हूं।'

'यह सब सुनाने के लिए क्या और कोई नहीं मिला ?'

'मुझ जैसी धैर्यवती महिला उसे मिलेगी कहां ? वह तो जबर्दस्ती सुना रही थी।'

खाना खाकर सौंफ मुंह में डालकर दोनों बिस्तर पर बैठे ही थे कि फिर वही गेहुंआ वस्त्रधारी साधू आ धमका। उसे विदा कर दोनों बगल-बगल लेट गए—मंदिरा हिमांशु के दाहिने हाथ से खेल रही थी, और हिमांशु अपने बचपन के किस्से सुनाते-सुनाते अचानक-अचानक मंदिरा की गर्दन चूम ले रहा था। कह रहा था, जानती हो मंदिरा, मेरा बचपन बड़े कष्ट से गुजरा था। प्यार, स्नेह नहीं मिला था। आर्ट कॉलेज की पढ़ाई खत्म होने से पहले ही बीमार पड़ गया, स्वास्थ्य चौपट हो गया। मेरा तो जीने का उत्साह ही जाता रहा। तब क्या पता था, एक दिन मेरा भाग्य इस तरह बदलेगा, मैं फिर किसी से प्यार कर सकूंगा और कोई मुझे प्यार करेगा...'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मंदिरा कुछ कहने की जा रही थी कि बाहर की कुंडी खड़खड़ा उठी।

हिमांशु अत्यंत खीज उठा। बोला, 'ओफ्फो ! अब तो बर्दाश्त नहीं होता है। फिर कौन आया ?'

मंदिरा उठते हुए बोली, 'तुम लेटे रहो, मैं देखती हूं।'

'नहीं, दरवाजा मत खोलो।'

कुंडी, खड़खड़ाती ही रही।

हिमांशु बोला, 'रुको, मैं देखता हूं।'

मंदिरा उसे जाने देना नहीं चाहती थी। छोटी-छोटी बातों में उसे गुस्सा आ जाता है। बिलावजह डांटना डपटना शुरू करके झमेला खड़ा कर देता है। फिर भी हिमांशु कुढ़ता हुआ गया।

दरवाजा खोला तो देखा, दो दस-बारह साल के लड़के खड़े हैं।

'क्या है ? कुंडी क्यों खटखटा रहे हो ? क्या चाहिए' लड़के विचलित नहीं हुए। बिना घबराए आंखें मिलाकर बोले, 'आपके बाहर वाले कमरे की खिड़की से भीतर बॉल चली गई है—वही लेना है।'

'हिमांशु डांटने वाला ही था कि न लिखना-पढ़ना, दोपहर भर बॉल खेलना ? नालायक लड़कों, स्कूल जाने का नाम नहीं...'

लेकिन इस बीच मंदिर आ चुकी थी। उसने लड़कों से कहा, 'आओ, ढूंढ़ लो...'

हिमांशु धमकी न दे सका। वह भी लड़कों के साथ बैठक में गया। गेंद का कहीं पता ही नहीं। दोनों लड़के चूहा ढूंढ़ने की तरह कमरे का कोना-कोना, हर सामान को इधर-उधर करके देखने लगे। हिमांशु को लगा, लड़कों ने अवश्य ही झूठ कहा है। उसे हैरान करने के लिए गेंद का बहाना बनाया है। उसने एक का कान पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि एकाएक मंदिरा बोल उठी, 'वह है, दरवाजे के पास...दिखाई पड़ा ?'

गंदी कैनवस की गेंद दरवाजे के पल्ले के पीछे पड़ी थी। उन्होंने देखा नहीं था। लड़कों ने गेंद उठाकर मंदिरा की तरफ देखा और फिर बिना कुछ कहे दौड़कर बाहर निकल गए।

हिमांशु बोला, 'अच्छी मुसीबत है। दफ्तर से छुट्टी लेकर एक दिन आराम से गुजारूं इसका भी उपाय नहीं।'

'ऐसी एक आध घटनाओं से तो समझौता करना ही पड़ेगा। तुम इतनी जल्दी धैर्य क्यों खो बैठते हो ?'

'एक के बाद एक, इंसान कितना बर्दाश्त कर सकता है ? लड़कों के साथ मैं बात तो कर रहा था, तुम क्यों उठ आईं ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मैंने देखा कि तुम बहुत ज्यादा गुस्सा कर रहे हो। मोहल्ले के बच्चों को असंतुष्ट करना क्या ठीक है ? फिर तो जब भी बाहर निकलोगे वे लोग गंदी-गंदी बातें कहेंगे।'

'बच्चे बूढ़े किसी को भी असंतुष्ट करने का उपाय नहीं है। सिर्फ हमें ही खुश रहने का अधिकार नहीं है। मुझे गुस्सा आ रहा है, तुमने कैसे जाना ?'

'वह मुझे फौरन पता चल जाता है। लेकिन तुम नाहक ही नाराज हो रहे थे—वे तो बच्चे थे...'

'बच्चे हैं इसलिए स्कूल न जाकर गेंद खेलेंगे ?'

'इन दिनों तो स्कूल बंद है। गर्मी की छुट्टियां हैं।'

'होगी छुट्टी। इस भरी दोपहर में लोगों को तंग करना...'

'तुम क्या बचपन में खेलते नहीं थे ? बच्चे तो इसी तरह खेलते हैं। मां-बाप के मना करने पर भी...'

मंदिरा से तर्क में हारने से नहीं पर दूसरी वजह से वह उदास हो गया। सच कहती है मंदिरा छोटे बच्चों के बॉल खेलने पर उसे इतना नाराज होना नहीं चाहिए। उन्हें डांटने जा रहा था वह—अन्याय करता। मंदिरा ने ठीक वक्त पर पहुंचकर उसे बचा लिया। मंदिरा सब संभाल लेती है, उसके कमजोर क्षणों को ठीक संभाल लेती है।

हिमांशु बोला, 'यह सोचकर दुःख होता है कि सचमुच ही बचपन में मुझे इस तरह से खेलने का मौका ही नहीं मिला था। बुआ के घर पर रहता था, वहां कठोर शासन था। और फिर मैं आश्रित था, मुझे कुछ मांगने का अधिकार ही नहीं था।'

'शायद तुम्हारे लिए यही अच्छा हुआ था।'

'मतलब ?'

'इसीलिए अपने पैरों पर खड़े होने की तुमने जी जान से कोशिश की। अगर लाड़ मिलता तो शायद ऐसा नहीं होता। तुम्हारे फुफेरे भाई दोनों तो एकदम ही निकम्मे हैं।'

'तुम्हें यह बात मालूम है ?'

दोबारा आकर लेटे ही थे और एक-दूसरे का शरीर छुआ ही था कि फिर दरवाजा पीटने की आवाज हुई। यह आवाज जानी पहचानी थी। नौकरानी आई थी। और, और दिनों में वह शाम को आती थी पर आज दीदीजी दफ्तर नहीं जाएंगी सुनकर जल्दी आने को कह गई थी।

मंदिरा ने उठकर दरवाजा खोल दिया। नौकरानी मशीन की तरह काम करती है, उसके पास बातें सुनने का समय नहीं है। यहां के बाद उसे चार-पांच घरों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और जाना है, वह दमकल की तरह व्यस्त थी। आते ही झाड़ू लगाना शुरू कर दिया।

इसके बाद बगल-बगल लेटना संभव न था। मंदिरा ने जाकर चूल्हे पर चाय का पानी रख दिया। और हिमांशु और कुछ नहीं मिलता तो पुराना अखबार आंखों के सामने खोलकर लेटा रहा।

उन्होंने शाम को एक फिल्म देखने का इरादा किया। आमतौर पर हिमांशु फिल्म देखने का शौकीन नहीं है। सारी जिंदगी में मुश्किल से उसने दस बाहर फिल्में देखी होंगी। लेकिन कभी मंदिरा को फिल्में देखने का बहुत शौक था, जैसा कि अधिकांश लड़कियों को होता है लेकिन जब से उसे हिमांशु से प्यार हुआ और हिमांशु में उत्साह की कमी देखकर उसका फिल्म देखना कम हो गया था। शादी के बाद तो घर गृहस्थी के चक्कर में और भी नहीं हो पाता था। आज हिमांशु सिनेमा जाने को राजी हो गया क्योंकि पति-पत्नी एक साथ कुछ देर तक गुजार सकें इसके लिए सिनेमाघर से अच्छी जगह और क्या होगी ?

चाय नाश्ते के बाद मंदिरा साड़ी बदलने जा रही थी कि तभी परमेश और उसकी पत्नी आईं। उन्हें देखकर हिमांशु अवाक् रह गया। आज वह दफ्तर नहीं जाएगा। इस बात का पता परमेश को लगा कैसे ? और किसी दिन तो साढ़े पांच बजे शाम तक न हिमांशु घर लौटता है न मंदिरा। उन दिनों तो कोई आता नहीं है, आज ही...

परमेश बोला, 'क्यों रे ? कहीं जा रहा है क्या ?'

हिमांशु की समझ में नहीं आया कि क्या करे। बहाना बनाते हुए बोला, 'नहीं...सोच रहा था...'

'कहीं कोई जरूरी अपॉयंटमेंट तो नहीं है ?'

'नहीं।'

'तब बैठ जा। तूने तो कभी निमंत्रण दिया नहीं इसीलिए हम लोग खुद ही तेरी गृहस्थी देखने आ गए। नंदिता बहुत दिनों से कह रही थी...'

नंदिता और परमेश की शादी को आठ साल हो गए थे। तब वे दोनों कॉलेज में पढ़ते थे। हिमांशु ने गवाही दी थी उनकी शादी के वक्त। अब सारी बातें पुरानी हो गई हैं। बाल बच्चे नहीं हुए हैं शायद इसीलिए नंदिता मोटी होती जा रही है।

मंदिरा ने कहा, 'आप लोग आए, अच्छा ही हुआ। हम सोच रहे थे कि फिल्म देखें—आप लोग भी चलिए न ?'

प्रस्ताव सुनकर हिमांशु चौंक उठा। एक तो उसे सिनेमा देखना पसंद नहीं, सिर्फ मंदिरा के साथ देखने जाने के इरादे से राजी हो गया था—पर झुंड बनाकर जाने का कोई मतलब नहीं। इसके अलावा टिकट का पैसा कौम देगा इस बात

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
को लेकर परमेश और हिमांशु के बीच देर तक कोल्ड वौर छिड़ा रहेगा—इस तरह की बातें उसे जरा भी पसंद नहीं। उसने मंदिरा की तरफ कनखियों से देखा।

खैर परमेश ने ही उसकी रक्षा की। बोला, 'धत् ! सिनेमा जाकर क्या होगा ? आइए भाभी—बातचीत करें। हिमांशु मेरा कॉलेज का दोस्त है। लेकिन आपसे मेरा अच्छी तरह से परिचय ही नहीं हुआ है। नंदिता रोज ही कहती है...'

बाद में बातचीत से पता चला कि जो तीन बंगला फिल्में लगी हुई हैं वह तीनों नंदिता की देखी हुई हैं। वे लोग प्रायः नाइट शो देखने जाते हैं—हालांकि परमेश हॉल में जाकर सोता है फिर भी पत्नी का अनुरोध टालने का साहस उसमें है नहीं।

आर्ट कॉलेज से पास करने के बाद हिमांशु जब नौकरी ढूंढ़ रहा था तभी परमेश ने अपना स्टूडियो खोला था। आज उसका व्यवसाय बढ़िया चल रहा है। परमेश ने हिमांशु को उसके साथ काम करने के लिए कहा था लेकिन हिमांशु राजी नहीं हुआ था। वह दोस्त के अधीन काम नहीं करना चाहता था इससे तो अच्छा है किसी मारबाड़ी के पास काम करना।

परमेश बोला, 'मेरे दफ्तर में फोन किया था। पता चला तू दफ्तर गया नहीं है। समझ गया, घर पर होगा। इसीलिए चला आया। नंदिता भी कह रही थी...'

गृहस्थी के मामले में मंदिरा कितनी अनाड़ी है अपने हावभाव से नंदिता समझाने लगी। इसके अलावा हर बात पर जताने लगी कि उसके पास घर गृहस्थी का कितना ज्यादा सामान है और मंदिरा के पास उसकी तुलना में कुछ नहीं है। मंदिरा डबलरोटी सेंकती है तार के मामूली जाल में नंदिता बोली—एक टोस्टर खरीद लो न। किसी फालतू कंपनी का मत खरीदना, जो पॅप ॲप होते हैं...तुम लोग फूल के बर्तनों में खाते हो ? इसमें बहुत झमेले हैं—हमने तो सब स्टेनलेस स्टील कर लिया है...'

लगभग आठ बजे बड़ी जोर से पानी आया। घर लौटने का उपाय नहीं रहा, परमेश नंदिता को बैठना पड़ गया। साढ़े नौ बज गए पानी रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। नंदिता कहने लगी कि महाराज को कहकर नहीं आई है कि क्या खाना बनेगा। तब मंदिरा ने प्रस्ताव रखा कि खिचड़ी चढ़ा देती हूं, सब कोई एक साथ खाएंगे। कुछ अंडे हैं और कुछ खास नहीं है...'

परमेश बोला, 'ग्रैंड ! ग्रैंड आइडिया। मुझे खिचड़ी बेहद पसंद है। देख लीजिए आपने तो हमें दावत करके बुलाया नहीं लेकिन भगवान ने हमें दावत खिला दिया। ठीक वक्त पर पानी बरसा कर...'

कॉलेज के दोस्त परमेश से अब हिमांशु बहुत दूर हट गया था। अब उसके पास बात करने के लिए विषय ही नहीं है। फिर इंसान का स्वभाव बदल आता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। कभी परमेश का स्वभाव बच्चों जैसा सरल था पर आज सफल व्यवसायी होने के गर्व से धरती पर पांव नहीं पड़ रहे थे। हालांकि आज भी बेवकूफ ही लग रहा है—बेवकूफ नहीं होता तो क्या खुद पर इतना गर्व करता ?

परमेश लोग पौने ग्यारह बजे गए। मोड़ तक हिमांशु साथ गया, टैक्सी पर बैठा आया। लौट कर आया तो लेट गया। मंदिरा छोटे-मोटे काम निपटा रही थी। सब कुछ ठीकठाक किए वगैर उसे चैन नहीं पड़ता है।

'सो गए क्या ?' मंदिरा ने हिमांशु के शरीर पर हल्के से हाथ रखा। हिमांशु सचमुच ही सो गया था। जल्दी से उठ बैठा। छोटी बच्ची की तरह मंदिरा पैर नचाती हुई बोली, 'आज सारे दिन तुम्हारा मिजाज गर्म है न ?'

'नहीं तो।'

'हां है—मैं अच्छी तरह से समझती हूं। तुम्हारा पुराना दोस्त उसकी पत्नी आए, तुमने उनसे ठीक से बात ही नहीं की।'

'और क्या बात करता ?'

'वाह ! यह मैं क्या जानूं ? तुम्हारा दोस्त है तुम जानो। बत्ती बुझा दूं ?'

मंदिरा को बांहों में भरते हुए हिमांशु बोला, 'तुम्हें मैं जी भरकर पास क्यों नहीं पाता हूं—यह बताओ ?

'पाया तो है।'

'यह सही है रात को तुम्हें पास पाता हूं लेकिन सुबह दोपहर शाम...इनकी भी तो अलग पृष्ठभूमि है। उस वक्त क्या तुम्हें पूरी तरह से कभी न पा सकूंगा ? सारी दुनिया के लोग आकर बाधा डालते हैं।'

'ऐसा तो होता ही है—इन्हें मानना ही पड़ता है। इसी तरह से जीना पड़ता है। न चाहने पर भी लोगों को दुनिया की बहुत सी बातें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं।'

हिमांशु ने लंबी सांस छोड़ते हुए कहा, 'कभी-कभी मेरा मन करता है दुनिया को हम दोनों के बीच से बिल्कुल ही हटा दें। तब हम दोनों अपनी अलग दुनिया बसाएंगे।'

ममता भरे हाथों से हिमांशु का गाल छूआ मंदिरा ने, 'तुम क्या दुनिया को हटा सकोगे ? दुनिया बहुत बड़ी है।'

7

ट्राम से उतरकर दोनों पैदल चलकर डाकखाने तक आए। उसके बाद ही हिमांशु खड़ा हो गया। बोला, 'अब तुम जाओ, मैं नहीं जाऊंगा।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मंदिरा बोली, 'अरे, तुम घर तक तो चलो। थोड़ी देर बैठकर चले जाना।'

'नहीं आज रहने दो। फिर किसी दिन।'

'फिर किसी दिन मतलब ? तुम हमारे घर एक दिन भी नहीं आए। भइया भाभी लोग क्या सोचती होंगी।'

'मुझे अजीब सा लगता है। इसके अलावा मुझे इधर कुछ काम भी है। जब इधर आया हूं तो काम निपटा ही लूं।'

'तुम्हारा मुंह बता रहा है कोई काम नहीं है। आओ, चाय पीकर चले जाना। तुम्हें ज्यादा बातचीत करनी नहीं पड़ेगी।'

लेकिन हिमांशु के खड़े रहने के ढंग से साफ-साफ पता चल रहा था कि वह अपना इरादा बदलने वाला नहीं। मंदिरा ज्यादा कहने की हिम्मत नहीं जुटा सकी। एक बार हिमांशु अगर 'नहीं' कह देता है तो उसे जबर्दस्ती करने पर नाराज हो जाता है। मंदिरा दुःखी होकर बोली, 'तो क्या मैं अकेली वापस जाऊंगी ?'

'किस वक्त लौटोगी बताओ ? मैं तब आ जाऊंगा।'

'ठीक है, घंटे भर बाद तुम मुझे घर के दरवाजे पर आवाज लगाना। तुम्हारे साथ चली आऊंगी।'

'नहीं, मैं तुम्हारे घर तक नहीं जाऊंगा। मैं इसी पोस्ट ऑफिस के सामने खड़ा रहूंगा—अभी साढ़े छः बजे हैं—आठ बजे ? ठीक रहेगा न ? तुम आठ बजे आ जाना, देर मत करना...'

इस बार दुःखी होकर नहीं बल्कि हंसकर मंदिरा बोली, 'रहने दो, तुम्हें बेकार में सड़क पर खड़े रहने की जरूरत नहीं है। तुम्हारा काम हो जाए तो तुम घर लौट जाना, मैं अकेली ही चली आऊंगी। ज्यादा देर नहीं होगी...'

मंदिरा के जाने के बाद भी कुछ देर तक हिमांशु खड़ा रहा। यहां से मंदिरा का घर दिखाई पड़ता है—जरा सा गली के भीतर जाना पड़ता है। गली में घुसने से पहले मंदिरा ने एक बार इधर देखा—मानो हिमांशु जानता था कि मंदिरा इधर देखेगी और एक बार देखे वगैर वह वहां से नहीं जाएगा। मंदिरा नजरों से ओझल हो गई तो वह धीरे-धीरे चलने लगा। इस वक्त सचमुच उसके पास कोई काम नहीं था।

शादी से पहले जैसे, शादी के बाद भी हिमांशु मंदिरा के यहां नहीं गया था। शादी को छः महीने हो गए थे पर आज तक हिमांशु ने अपने ससुराल का मुंह नहीं देखा था। उनकी रेजिस्ट्री द्वारा शादी हुई थी सुहागरात उन्होंने अपने किराए के मकान में मनाई थी। हालांकि अंत में मंदिरा के दोनों भाइयों ने शादी के लिए हामी भर दी थी लेकिन शादी से पहले वे हिमांशु को फूटी आंख पसंद नहीं करते थे। उसके लिए स्क्राउंड्रेल, लोफर जैसे विशेषणों का प्रयोग कर चुके थे। हिमांशु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बात को आज तक नहीं भूला है। जबकि इन बातों को भूल जाने का ही नियम है। पुरानी बातों को मन में जिला रखना स्वास्थ्यकर भी नहीं होता है। हिमांशु को भी अब कोई गुस्सा नहीं है फिर भी कभी जो लोग उसे नापसंद करते थे उनके साथ वह हंस-हंसकर बातें कर सकता है। मंदिरा के मां-बाप तो हैं नहीं अतएव कोई शिकायत करने वाला भी खास नहीं है।

सामने का दरवाजा खुला ही था, मंदिरा भीतर चली गई। उसका यह घर है, इसी घर में वह पैदा हुई थी, जीवन के चौबीस साल उसने इसी घर में गुजारे थे, केवल छः महीने की शादी के बाद लग रहा था वह यहां की कोई नहीं। शादी के बाद सिर्फ दो बार यहां आई थी। किसी ने बुलाया नहीं था, अपने काम से ही आई थी। अपना सामान ले जाने आई थी। पिछले दो महीनों से इधर नहीं आई थी।

पुरानी नौकरानी आंगन में बर्तन मांज रही थी, मंदिरा को देखकर भी नहीं पहचान सकी।

मंदिरा ने ही पूछा, 'क्यों रानू की मां, कैसी हो ?'

'ओ मां, छोटी दीदी ! ठहरो-ठहरो, जरा अच्छी तरह से तो देखूं। शादी करके तो इस घर को भूल ही गई हो।'

राख से सने दोनों हाथ शून्य में उठाकर नमस्ते कर धुंधली आंखों से मंदिरा को देखती रही। फटी-फटी आवाज में बोली, 'मां और बाबूजी आज जिंदा होते तो कितने प्यार से लड़की दामाद को घर बुलाते। तुम्हारे पति कहां ? उन्हें नहीं लाई हो ?' प्रसंग परिवर्तित करने के इरादे से मंदिरा ने कहा, 'फिर किसी दिन आएंगे। तुम्हारी तबीयत कैसी है ? तुम्हारे लड़के को काम मिला है ?'

'सीढ़ी से उतरते हुए बड़ी भाभी ज्योत्स्ना ने मंदिरा को देखा। बोलीं, 'कौन आया है ? खूकी को क्या ? चलो, हमारा ख्याल तो आया। आ, ऊपर आ...'

बड़ी भाभी मंदिरा की मां जैसी हैं। वह जब इस घर में ब्याह कर आई थीं तब मंदिरा पांच साल की थी। इसके तीन साल बाद ही मां की मृत्यु हो गई थी। जब तक अपने बाल बच्चे नहीं हुए थे तब तक वह मंदिरा को बहुत चाहती थीं। मंदिरा को अपने साथ बिस्तर में लेकर सोती थीं।

आजकल बड़ी भाभी खूब मोटी हो गई थीं। कमर में उनके खूब दर्द रहता है। इसलिए उनका मन भी ठीक नहीं रहता है।

ज्योत्स्ना ने मंदिर से हिमांशु के न आने की बात पूछी ही नहीं। उन्हें मंदिरा की यह शादी कतई पसंद नहीं थी।-खासतौर से इसलिए भी कि ब्राह्मण की लड़की होकर उसने कायस्थ लड़के से शादी की थी। इन बातों को वह बर्दाश्त नहीं कर सकती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मंदिरा उनके बच्चों के लिए चॉकलेट लाई थी। उन्हें बैग से निकालने लगी।

ज्योत्स्ना बोली, 'अरे उस कुर्सी पर क्यों बैठी, खाट पर बैठ न। इन कुछ महीनों में बड़ी दुबली हो गई है।'

'नहीं भाभी, दुबली कहां हुई हूं ?'

'हुई है। जरूर हुई है। मेरी आंखों को धोखा दे सकती है क्या ?'

'भइया कहां हैं ? अभी तक घर नहीं लौटे हैं ? छोटे भइया भाभी तो हैं न ?'

'थोड़ी देर पहले देखा तो था।'

काफी दिनों से दोनों भाभियों के बीच अनबन चल रही है। हालांकि खुलकर चिल्ला-चिल्लाकर दोनों झगड़ती नहीं हैं पर मौका पाने पर ताने मारने से बाज नहीं आती हैं। बड़े भइया की आय अधिक है लेकिन बड़ी भाभी को घर द्वार संभालना, सजा संवारकर रखना आता नहीं है। उनका हर काम जैसे-तैसे होता है। वह तो अपने बच्चों तक को नहीं संभाल सकती हैं। लेकिन छोटी भाभी सफाई पंसद हैं। सब कुछ सलीके से रखना, घर द्वार साफ, झकाझक। उनकी खिड़कियों के पर्दे तक कभी मैले नहीं हो पाते हैं। बच्चे न होने के कारण उन्हें वक्त भी काफी मिल जाता है। छोटी भाभी का नाम है गोपा।

मंदिरा समझ गई, दोनों भाभियों के बीच मनमुटाव और बढ़ा है क्योंकि छोटी भाभी का नाम लेते ही बड़ी भाभी गंभीर हो गईं। और छोटी भाभी भी इधर नहीं आईं। क्या उन्हें मंदिरा की आवाज नहीं मिली है ? मंदिरा को पता है कि इस वक्त अगर वह छोटी भाभी के पास गई तो फिर बड़ी भाभी उससे ठीक से बात नहीं करेंगी इन दोनों का एक साथ यहां रहने का कोई अर्थ नहीं है। छोटी भाभी तो जाने कब से जाना चाहती हैं–बस इस मकान के कारण पड़ी हुई हैं। पैत्रिक घर है, सभी का बराबर हिस्सा है–अपना-अपना हिस्सा बेच नहीं सकते हैं। अलग रहेंगे तो किराया भरना पड़ेगा।

ज्योत्स्ना ने पूछा, 'तू आज रहेगी न ? आज तू न जा सकेगी।'

'नहीं बड़ी भाभी–रह कैसे सकती हूं।'

'तो फिर आज रात यहीं खाना खा, तब जाना। इस वक्त चाय पीने की जरूरत नहीं है। चाय पी-पीकर ही तो रंग काला हो गया है।'

'नहीं-नहीं, खाना खाकर नहीं जाऊंगी। मैं थोड़ी देर बाद ही चली जाऊंगी। मुझे घर जाकर खाना बनाना है।'

'खाना बनाने के लिए किसी को रखा नहीं है ?'

सुनकर मंदिरा मुस्कराई। नई गृहस्थी में रोज ही खींचातानी चल रही है, खाना बनाने वाली कहां से रखेगी ? हंसते हुए मंदिरा ने उत्तर दिया, 'दो जने तो हैं, इसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिए किसी को रखना क्या ? एक नौकरानी है।'

'तूने नौकरी कब छोड़ी ?'

'छोड़ी नहीं है। नौकरी क्यों छोड़ूंगी ?'

बड़ी भाभी ने ऐसे गोल-गोल आंखें करके देखा जैसे कोई भयंकर दृश्य देख रही हों अपने सामने।

बोलीं, 'तू नौकरी भी करेगी और फिर घर का कामकाज करेगी, खाना बनाएगी ? खूकी, तू क्या शूईसाइड करना चाहती है ?'

सुईसाइड शब्द का उच्चारण भाभी ने किया शूईसाइड। कभी-कभी बड़ी भाभी ऐसे-ऐसे अंग्रेजी शब्द बोलेंगी कि सुनकर हंसी आ जाती है।

मंदिरा बोली, 'तुम तो ऐसे कह रही हो भाभी जैसे यह सब दुनिया में कोई करता ही नहीं है। हमारे दफ्तर में तो कितनी लड़कियां...'

'उन लड़कियों की बात छोड़। इससे पहले तूने कभी खाना बनाया था क्या ?'

'खाना बनाना ऐसा कोई मुश्किल काम नहीं है। जरूरत पड़ने पर सभी सीख जाता है।'

बड़ी भाभी खोद-खोदकर हर तरह की बातें पूछने लगीं। मंदिरा को जवाब देना बुरा नहीं लग रहा था। बड़ी भाभी उसके स्वास्थ्य की इतनी चिंता कर रही हैं सोचकर बहुत अच्छा लग रहा था। हालांकि मंदिरा का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है।

लेकिन काफी देर तक बातें करने पर भी ज्योत्स्ना ने हिमांशु का नाम तक नहीं लिया तो वह खीज उठी। नई ब्याहता लड़की से अगर कोई उसके पति के बारे में न पूछे तो क्या कम अपमान की बात है ? बड़ी भाभी हिमांशु को सोचती क्या हैं ? वह क्या ऐसा वैसा आदमी है ? असल में लोग सिर्फ बाहर का ही रूप देखता है—अच्छा ही है कि हिमांशु यहां आता नहीं है। हिमांशु की अनुभूति बड़ी सूक्ष्म है—बड़ी भाभी की अवहेलना उसके दिल को आघात पहुंचाती।

मंदिरा बोली, 'जाऊं जरा छोटी भाभी से मिल लूं तुम भी उनके कमरे में आओगी क्या ?'

ज्योत्स्ना जम्हाई लेते हुए बोली, 'नहीं तू जा, मेरे पास बहुत काम है।'

अर्थात् भाभियां आजकल एक-दूसरे के कमरों में जाती नहीं हैं। अच्छा ही हुआ है, मंदिरा यह घर छोड़कर चली गई है। ऐसे परिवेश में रहने से तो मन बोझिल हो जाता है। जब तक मंदिरा यहां थी तब तक दोनों के बीच का झगड़ा इस तरह से उभरा नहीं था लेकिन अब शर्म हया भी नहीं रही।

मंदिरा उठ ही रही थी कि ज्योत्स्ना बोलीं, 'बैठ, बाद में चली जाना। इतनी भी क्या गरज है ? वही तुझसे मिलने कहां आई ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'छोटी भाभी क्यों आएंगी ? मैं ही जाती हूं।'

'चली जाना। बैठ तो, संदेश लाने के लिए भेजा है।'

'नहीं-नहीं बड़ी भाभी, मैं संदेश नहीं खाऊंगी। मैं क्या मेहमान हूं जो तुम मेरी खातिरदारी कर रही हो ?'

पर ज्योत्स्ना किसी तरह से न मानीं, जबर्दस्ती मंदिरा को रोक रखा और दो संदेश खा लेने के बाद ही छोड़ा। इतनी जोरा-जोरी क्यों की गई, थोड़ी देर बाद ही मंदिरा जान गई।

लंबे बारामदे के दूसरे छोर पर छोटी भाभी का कमरा है। गोपा की उम्र छत्तीस-सैंतीस होने पर भी उम्र की तुलना में चेहरा युवतियों जैसा ही था। देखने पर तीस से कम ही की लगती है। दुबला-पतला शरीर, लंबा कद और आंखों पर चश्मा। खिड़की के सामने बैठी एक किताब पढ़ रही थी लेकिन साफ पता चल रहा था कि मंदिरा की प्रतीक्षा कर रही थी। मंदिरा आई है पता चल गया था लेकिन अपने आपसे मिलने नहीं जाएगी। गोपा किताब रखकर उठ खड़ी हुई। उसने पहला सवाल किया, 'खूकू तुम अकेले आई हो ? हिमांशु कहां ?'

'वह आज नहीं आए हैं।'

'आया नहीं ? तुम्हारे मियां से तो परिचय ही नहीं हुआ।' मंदिरा चुप रही।

गोपा फिर बोली, 'हालांकि आएगा ही क्यों ? नया-नया दामाद बिना निमंत्रण के कहीं आता है ? हमने उसे निमंत्रण ही नहीं दिया।...घर की बड़ी बहू को ही अगर इस बात का ध्यान न रहे...'

मंदिरा बोली, 'नहीं-नहीं, बड़े भाइयों ने उसे कई बार आने के लिए कहा है लेकिन वह इतना शर्मीला है...आना ही नहीं चाहता है—'

'तो क्या घर के दामाद के साथ हम मिलेंगे नहीं ?'

'छोटी भाभी, तुम भी तो कभी हमारे घर नहीं आई। मैंने तुम्हें कितनी बार कहा था।'

'मेरा तो जाने को जी करता है लेकिन मुझे कोई ले जाएगा तब न जाऊंगी ? अपने छोटे भइया को तो जानती ही हो, जरा भी वक्त नहीं मिलता है उन्हें। अक्सर ही दफ्तर के काम से बाहर जाना रहता है। मेरा तो घूमने-घामने का मन करता है लेकिन बड़ी दीदी को कोई शौक ही नहीं है।'

'ठीक है, मैं ही एक दिन आकर तुम्हें ले जाऊंगी। छोटे भइया नाराज तो नहीं होंगे ?'

'क्यों ? गुस्सा क्यों होंगे ? नहीं-नहीं, अब वह सब कोई बात नहीं है...इसके अलावा मैं क्या तुम्हारे छोटे भइया के गुस्से को डरती हूं ?'

मंदिरा यह बात जानती है। बल्कि छोटे भइया ही छोटी भाभी से बेहद डरते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हैं। छोटी भाभी-कभी चिल्लाकर झगड़ा नहीं करती है लेकिन बोलना बंद कर देती है। वही बड़ी भारी सजा होती है।

गोपा ने उठकर मिटसेफ से कुछ संदेश निकाले। मंदिरा को देते हुए बोली, 'कैसे बने हैं जरा खाकर देखो।'

'मंदिरा दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए बोली, 'मैं अब एक भी संदेश न खा सकूंगी—पेट बिल्कुल भरा है।'

'एक तो खाकर देखो। मैंने खुद बनाया है।'

'तुमने खुद बनाया है ?'

'हां भई। विश्वास नहीं हो रहा है ? आजकल अपन हाथों से एक आध चीजें बनाती हूं। वक्त काटना है कि नहीं ?'

मंदिरा समझ गई कि बड़ी भाभी ने क्यों बाजार से मंगवाकर जबर्दस्ती संदेश खिलाया था। उन्हें जरूर छोटी भाभी के संदेश बनाने की बात मालूम है। मंदिरा ने एक टुकड़ा तोड़कर मुंह में डालते हुए कहा, 'वाह, बहुत बढ़िया बना है।'

तुरंत गोपा बोली, 'चार-पांच संदेश घर ले जाना, हिमांशु को खिलाना। उसे तो कभी कुछ खिला नहीं सकी हूं। उसका शरीर पहले से ठीक है ? बहुत दुबला है।'

'मोटा तो नहीं हुआ है लेकिन बीमार-वीमार नहीं पड़ा है।'

'दुबला है तो क्या हुआ, चेहरा बहुत सुंदर है। कैसी बड़ी-बड़ी आंखें हैं।'

मंदिरा को शर्म आ गई। इस समय छोटी भाभी बड़ी सगी जान पड़ीं। बड़ी भाभी ने तो एक बार भी हिमांशु का नाम नहीं लिया था। छोटी भाभी कितने अपनेपन से बातें कर रही हैं।

एकमात्र छोटी भाभी ने ही मंदिरा की शादी का समर्थन किया था। बल्कि ये कहना चाहिए कि भाइयों से उसने मंदिरा के लिए सिफारिश ही की थी। गोपा को बंगला उपन्यास, खासतौर से प्रेम कहानियां पढ़ने का बड़ा शौक है। मंदिरा स्वयं पसंद करके, घरवालों के राजी न होने पर भी एक आदमी से प्यार कर उससे शादी कर रही है यह बात गोपा के लिए एक नए उपन्यास पढ़ने जैसी खुशी की बात थी। गोपा को व्यर्थ प्रेम के किस्से बिल्कुल ही नापसंद थे अतएव वह नहीं चाहती थी कि हिमांशु और मंदिरा की शादी टूट जाए।

गोपा बोली, 'तेरा दूल्हा उसे विज्ञापन ऑफिस में ही काम करता है ?'

'हां।'

'तब तुम एक अच्छा सा कैलेंडर मुझे देना। तुम लोगों को बहुत कैलेंडर मिलेंगे—'

मंदिरा हंसी, 'ठीक है, साल तो खत्म हो। अभी तो जून का महीना है।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हिमांशु छुट्टी के बाद सीधे घर लौट आता है ? या कि और कहीं जाता-वाता है !'

'नहीं, घर ही लौटते हैं। ज्यादातर तो हम दोनों साथ ही लौटते हैं।'

'उसके बाद ? जरूर खूब बातें करते हो ? कितनी रात तक बातें चलती हैं ?'

'बाप रे ! सिर्फ बातें कैसे कर सकती हूं ? घर का काम-काज नहीं है ? मुझे खाना बनाना रहता है–''

मंदिरा दफ्तर में काम करती है फिर घर आकर खाना बनाती है, सुनकर बड़ी भाभी चौंक पड़ी थीं लेकिन गोपा पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ। बल्कि उसने अप्रत्याशित भाव से कहा, 'हिमांशु जरूर खूब बढ़िया बातें करता है–है न ?'

'बिल्कुल नहीं। वह वैसे ही चुपचाप रहने वाले इंसान हैं–ज्यादा बातें नहीं करते हैं।'

'जाने दो, फालतू बातें मत करो। सुंदर-सुंदर बातें न करता होता तो तुमसे प्रेम कैसे होता है ?'

'तो क्या प्रेम बात करने से होता है ?'

'नहीं –ये बात नहीं है। प्रेम होता है जब परस्पर के हृदय एक हो जाते हैं लेकिन बातों के माध्यम से ही तो हृदय के भाव प्रकट होते हैं...'

गोपा के कहने के ढंग से स्पष्ट था कि किसी सस्ते उपन्यास में पढ़े लाइनों को बोल रही है। लेकिन इस समय मंदिरा हंस नहीं सकती है। सामने बैठी गोपा काफी सीरियस है। गोपा थोड़ी दूर पर खड़ी थी, अब मंदिरा से सटकर बैठी। उद्ग्रीव भाव से दबी आवाज में पूछा, 'एक बात पूछूंगी ठीक-ठीक उत्तर देना...'

'क्या ?'

'सच बोलोगी–है न ? अच्छा, शादी से पहले जब तुम दोनों मिलते थे तब तुम्हें, मतलब, एक दिन भी हिमांशु ने किसविस किया था ?'

'धत्।'

'अरे, बताओ न। अब कहने में कौन सी शर्म ? तुम लोग कहां मिलते थे ?'

'उन सब बातों को छोड़ो।'

'अच्छा, एक और बात पूछती हूं। रात को लेटने के बाद भी देर तक जगे रहते होगे। अपने छोटे भइया को तो जानती ही हो, बिस्तर पर लेटते ही सो जाते हैं। हिमांशु जरूर तुम्हें किस्से सुनाता है, प्यार-व्यार करता है...'

मंदिरा उठकर खड़ी हो गई, 'छोटी भाभी, अब मैं जाऊंगी–'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'बैठो भी ! अभी से क्या जाओगी ?'

'नहीं, मैं अपने कमरे से एक आध चीजें लूंगी उसके बाद घर जाना है...'

अब उसका मन छोटी भाभी से बातें करने का नहीं हो रहा था। मंदिरा की नई-नई गृहस्थी, गोपा का उसके सुख-दुःख की कोई चिंता नहीं बस हिमांशु के बारे में ही उपन्यासों वाले कौतूहल से पूछती जा रही है। उनकी प्रेम कहानी सुननी है उसे। गोपा खुद बड़े ही अंधविश्वासी घर की लड़की है। पिता के घर पर कड़ा अनुशासन था। यहां भी आकर फंस गई है, पति काम की अधिकता के कारण घर पर ज्यादा रहता नहीं है अपने जीवन में रोमांटिक प्रेम का स्वाद तो मिला नहीं इसलिए मंदिरा से पूछकर उसका रसास्वादन कर लेना चाहती है। दोनों भाभियों का स्वभाव चरित्र बिल्कुल भिन्न है। इन दोनों में से किसी से भी बात करके सुख नहीं मिलता है। मायके आने का आकर्षण ही नहीं है।

एक मकान के तिमंजिले में एक कमरा है जो मंदिरा का कमरा था। मां-बाप के मरने के बाद से वह इसी कमरे में रह रही है। दुःखी होती तो तकिए में मुंह छिपाकर रोती है, खुश होती थी तो शीशे में अपना चेहरा देखती थी।

गोपा भी मंदिरा के साथ तिमंजिले पर चली आई। कमरे में ताला बंद था। मंदिरा ले अपने पर्स से चाभी निकालकर ताले में लगाई तो पाया दूसरा ताला है। जिज्ञासू दृष्टि से देखा तो गोपा बोली, 'पिछली बार तुम ताला बंद करना भूल गईं थीं इसीलिए बड़ी दीदी ने दूसरा ताला लगा दिया है।'

हो सकता है मंदिरा ताला बंद करना भूल गई होगी। यद्यपि ऐसी गलती उससे कभी होती नहीं है। इस कमरे में उसकी काफी जरूरी चीजें आज भी हैं—बहुत सारी किताबें, कागज, इतने दिनों से इकट्ठा की गई छोटी-छोटी चीजें।

बड़ी भाभी के पास से चाभी लाने की बात मंदिरा सोच ही रही थी कि देखा वह खुद ही ऊपर आ रही हैं। चाभी भी हाथ में थी। बड़ी भाभी ने पूछा, 'आज क्या कुछ ले जाएगी ? तेरे वहां कितने कमरे हैं ? जगह है कि नहीं ?'

'कमरे सिर्फ दो ही हैं वह भी छोटे। चीजें रखने की जगह नहीं है। मेरा एक टेबिल लैंप है उसे ही ले जाऊंगी। ये कभी-कभी देर रात तक काम करते हैं...'

'तेरे दो ट्रंक भी हैं—ले नहीं जाएगी ?'

'नहीं—अभी उनको यहीं रहने दो। जगह कहां है ? अगर कोई दूसरा मकान लिया तो...'

ताला खोलकर कमरे में झांकते ही मंदिरा के मुंह से चीख निकल गई, 'ये क्या ? मेरे कमरे का यह क्या हाल हुआ है ?'

बेकार पड़े गोदाम की तरह पुराने टूटे-फूटे सामानों से भरा पड़ा था। मंदिरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का पलंग, उसकी पढ़ने की मेज अभी भी कमरे में थे जरूर लेकिन उस पर ढेर लगाकर जाड़े की रजाई कंबल के बंडल रखे थे, टूटी स्टूल, मेज-कुर्सी, टूटा बिजली का हीटर रखे थे। मंदिरा हमेशा अपना कमरा साफ-सुथरा रखती थी चमकता रहता था कमरा—आज वही कमरा पहचान में नहीं आ रहा था। फर्श पर फटी किताबें बिखरी पड़ी थीं। पुराने पत्राओं के बीच से एक चूहा निकल भागा।

गुस्से और क्रोध से मंदिरा की आंखें भर आईं। बड़ी भाभी की तरफ देखकर पूछा, 'ये सब मेरे कमरे में किसने रखा है ?'

ज्योत्स्ना और गोपा काफी दूर खड़ी थीं। अभी तक उन्होंने आपस में एक बात नहीं की थी।

ज्योत्स्ना ने उत्तर दिया, 'छोटे बच्चे ने शायद अपनी पुरानी किताबें यहां रखी हैं।'

'बच्चों ने ? और ये रजाई कंबलों का ढेर ?'

'अरे, तू तो रहती नहीं है यहां। खाली ही तो पड़ा है। ये चीजें कमरे में पहाड़ सी रखी थीं—'

'और इसीलिए तुमने मेरे कमरे का ये हाल कर दिया ? सीढ़ी के नीचे वाले कमरे का क्या हुआ ?'

'वहां चूहे झींगर काट डालते हैं।'

'तो इसके अर्थ हुए फिर कभी भी यहां नहीं रह सकूंगी ? अगर आज रात को रह जाती है ?'

मंदिरा को लगा बड़ी भाभी ने उसकी पवित्रता नष्ट कर दी है। वह इतनी निर्दयी हो जाएंगी उसने सोचा नहीं था। सांत्वना पाने के लिए उसने गोपा की तरफ देखा।

गोपा अपने आप ही बोली, 'अगर रह जाती तो क्या इस घर में कहीं और सोने का इंतजाम नहीं हो सकता था ? अगर तुम कभी दो एक दिन रहो तब कुछ इंतजाम हो जाएगा।'

झुंझलाकर मंदिरा बोली, 'इंतजाम मानें ? इस घर में आऊंगी तो मैं अपने कमरे में ही रहूंगी।'

बड़ी भाभी बोलीं, 'ये तू कैसी बात कर रही है खूकी ? तू यहां नहीं रहेगी, कमरे बेकार ही में खाली पड़ा रहे, कुछ इसमें रखा न जाए—ये कैसे हो सकता है ?'

'चीजें रखने के मतलब क्या ये कूड़ा-कर्कट रखोगी ? कम-से-कम मुझसे एक बार पूछ तो लिया होता।'

गोपा बोली, 'इधर कुछ महीनों से तो तुम आईं नहीं। इस तरह की चीजें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो लोग छत वाले कमरे में ही रखते हैं। पहले तुम रहती थीं तो अलग बात थी। अब जब खाली पड़ा है...'

मंदिरा ने देखा गोपा की भी कुछ चीजें इस कमरे में हैं। उसने यह भी देखा कि दोनों भाभियों में चाहे कितना भी झगड़ा क्यों न हो, एक-दूसरे की सोच अलग हो—इस एक मामले में दोनों एकमत थीं। इसके बाद शायद इस कमरे पर किसका अधिकार अधिक है और किसका अधिक सामान रहेगा, इस बात पर दोनों लड़ेंगी।

मंदिरा के जबड़े कठोर पड़ गए। कहने वाली थी कि मैं चाहूं तो तुम लोगों का सारा सामान एक झटके में निकालकर फेंक सकती हूं—इस कमरे पर मेरा कानूनन हक है।'

पर वह कह न सकी। उसे रोना आ गया। आंखें आंसुओं से धुंधली पड़ गईं। उसे एक दूसरा कमरा नजर आया जहां हिमांशु उसकी राह देख रहा है। मंदिरा समझ गई दुनिया में उसकी वही एक जगह है। कितना भी दुःख क्यों न हो—यह सब छोड़ना ही होगा।

8

बात न चीत, अचानक एक शाम को दो ट्रेन की टिकट खरीदकर हिमांशु घर लौटा। मंदिरा से कहा, 'अगले सोमवार को हम देवघर जा रहे हं, सामान ठीकठाक करना शुरू कर दो।'

मंदिरा तो आसमान से गिरी, 'देवघर जाना है ? अचानक ? तुम क्या कह रहे हो ?'

मुस्कराकर हिमांशु ने कहा, 'इस तरह से अचानक नहीं गए तो जाना नहीं होगा। प्लॉन और प्रोग्राम बनाकर जाने में बड़ी बाधाएं आती हैं।'

'नहीं, अभी जाना नहीं हो सकेगा। रुपया कहां है ? मैं सोच रही थी कि एक ड्रेसिंग टेबिल खरीदूंगी।'

हिमांशु जेब से टिकट निकालकर मंदिरा के आंखों के सामने हिलाते हुए बोला, 'अब कुछ नहीं हो सकता है टिकट खरीदा जा चुका है।'

'तुम सचमुच टिकट खरीद लाए हो ? हटो, इस समय घूमने जाने का कोई मतलब होता है ? रुपया कहां मिला ?'

'दफ्तर के प्रॉवीडेंट फंड से पांच सौ रुपया उधार ले डाला है—पांच सौ में काम नहीं चलेगा ?'

'घूमने जाने के लिए तुमने प्रॉवीडेंट फंड से रुपया निकाल लिया ? कोई इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तरह से करता है क्या ?'

वैसे मंदिरा ही अफसोस किया करती थी कि कहीं घूमने जाना नहीं होता है। अब सचमुच घूमने जाने की बात सुनकर उसे चिंता होने लगी। सिर्फ रुपये के लिए। हिमांशु को बड़ा मजा आने लगा। शादी से पहले मंदिरा को कभी रुपये पैसों की चिंता नहीं करनी पड़ती थी। अमीर घर से न होने पर भी वह स्वच्छल परिवार की लड़की थी। लेकिन बेघरवार के हिमांशु से शादी करने के बाद उसे रुएये की कीमत का पता चल गया था पर इसके लिए वह क्षोभ प्रकट नहीं करती है। जितनी कमाई है उसी में किफायत से गृहस्थी चलाने की कोशिश करती है।

मंदिरा फिर बोली, 'एक ड्रेसिंग टेबिल का खरीदना बहुत जरूरी है, मैं उसके लिए रुपये जमा कर रही हूं और तुम पांच सौ रुपया घूमने-फिरने में नष्ट करोगे ?'

कमीज उतारकर अलगंडी पर रख हिमांशु ने सिगरेट सुलगाया। फिर मंदिरा की ठोढ़ी को प्यार से हिलाकर बोला, 'घूमने-फिरने में रुपया नष्ट नहीं होता है। देखना, मन कैसा फ्रेश हो जाएगा। अगर मन में ताजगी न रही तो ड्रेसिंग टेबिल का क्या होगा ?'

मंदिरा कुछ कहने वाली थी कि हिमांशु उसे चुप कराते हुए बोला, 'आप इंकार मत क्यों ? जब जाना तय कर लिया है तब खुशी-खुशी ही जाना ठीक होता है न ? अब तुम मुझे चाय तो पिलाओ। चाय पीते-पीते सारा प्लॉन बनाएंगे।'

दोनों चाय लेकर बगल-बगल बैठे। मंदिरा बोली, 'तुम तो ताव में आकर टिकट खरीद बैठे—जरा यह तो बताओ कि देवघर जाकर रहोगे कहां ? रहने की जगह तय होनी चाहिए न ?'

रहस्यात्मक ढंग से हिमांशु बोला, 'क्यों, धर्मशाला में न रह सकोगी ?'

'धर्मशाला में ? हट, धर्मशाले में रहकर क्या घूमा-फिरा जा सकता है ? धर्मशाला में तीर्थ करने वाले ठहरते हैं—हम तीर्थ करने थोड़े ही जा रहे हैं। कितने दिन रहेंगे ?'

'यही दस-पंद्रह दिन।'

'पहले से रहने का इंतजाम किए बगैर इतने दिनों के लिए कोई जाता है भला ?'

'वहां किराए पर बहुत मकान मिलते हैं। पहुंचकर एक मकान किराए पर ले लेंगे।'

'और अगर नहीं मिला ? इतना पैसा खर्च करके गए भी और अगर ठीक से रहने को नहीं मिला तो...' मंदिरा भौंहें सिकोड़कर कुछ सोचने लगी। हिमांशु मंद-मंद मुस्कराता रहा।

मंदिरा बोली, 'मेरी सझली मौसी का देवघर में एक मकान है—कल पता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करूंगी अगर वह मिल जाए। वैसे तो बहुत दिन हो गए हैं सझली मौसी से मुलाकात नहीं हुई है। हम लोग शनिवार को जाएंगे न–अभी चार दिन का समय है। मैं अगर कहूंगी तो सझली मौसी जरूर दे देंगी। हालांकि अगर खाली हुआ तो–,'

बाहर जाने की बात सुनते ही मन ही मन मंदिरा बहुत कुछ तय करने लग गई। उसे मालूम है कि अधिकांश जिम्मेदारी उसी के मत्थे होगी। ठीक वक्त पर स्टेशन पहुंचना देवघर पहुंचकर मकान ठीक करना, रुपये पैसे का हिसाब रखना–सब। सब कुछ। हिमांशु से ये सब होता नहीं है–वह कभी भी प्रैक्टिकल नहीं है।

हिमांशु ने उठकर कमीज की जेब से एक चाभी लाकर दिखाई, 'यह देखा।'

'क्या ? किसकी चाभी है ?'

'देवघर के एक पूरे मकान की। अगले रविवार से लेकर पूरे पंद्रह दिनों के लिए यह घर हमारा होगा। तुम सोचती हो तुम ही सब ठीक से कर सकती हो। मैं कुछ नहीं कर सकता हूं ?'

खुशी और विस्मय के मिश्रित भाव से काफी देर तक मंदिरा हिमांशु को देखती रही। फिर बच्चों सी खुश होकर बोली, 'कहां मिली ? किसने दिया ?'

हिमांशु में आत्मसम्मान की भावना इतनी प्रबल है कि वह किसी से कोई चीज मां ही नहीं सकता है। अगर उसकी कोई मौसी वहां होती तो भी उससे हिमांशु चाभी नहीं मांगता।

हिमांशु के दफ्तर के मि. दासगुप्ता सपरिवार देवघर से घूमकर लौटे थे। लंच ऑवर में वो देवघर के सस्ते दूध और असली घी के किस्से सुना रहे थे। मुर्गी कितनी सुलभ है, सब्जी कितनी ताजी है। लालचियों की तरह खाने-पीने की बात सुनना हिमांशु को पसंद नहीं लेकिन जिस वक्त मि. दासगुप्ता त्रिकुट पहाड़ पर घूमने की बात या गिरीडीह जाकर ऊर्शी झरना में स्नान करने का किस्सा सुना रहे थे तब हिमांशु का मन कुलबुला उठा। खुद वह कलकत्ते से बाहर बहुत कम गया है। उसके मां-बाप बचपन में ही चल बसे थे। बुआ के घर पर रहकर पला, बड़ा हुआ था। कहां जाता भला ? एक बार फुफेरे भाइयों के साथ खड्गपुर गया था और एक बार बुआ के साथ काशी। इतना सा ही उसका भ्रमण का अनुभव है। जब आर्ट कॉलेज में था, उसके साथ के लड़के लड़कियां अक्सर स्केच करने के लिए बाहर जाते थे। वह कभी नहीं जा सका था। उसने प्रकृति का रूप ठीक से देखा ही नहीं था। आजकल तो चित्रकारी लगभग बंद ही थी।

शादी के बाद सभी लोग कहीं न कहीं घूमने जाते हैं। मंदिरा को साथ लेकर वह कहीं नहीं जा सका है। उसके लिए मंदिरा ने बहुत त्याग किए हैं–वह अपने मन में किसी तरह का दुःख नहीं पालती है–उसके लिए हिमांशु ने कुछ नहीं किया है। सहसा उसका हृदय भर आया। वह जरूर मंदिरा के साथ कहीं घूम आएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देवघर में ही क्या खराबी है ? जिस तरह के किस्से मि. दासगुप्ता से सुनने को मिले हैं...' उसने मि. दासगुप्ता से पूछा था, 'अच्छा, वहां होटल-वोटल है ? अचानक अगर कोई घूमने जाए तो रहेगा कहां ?'

'होटल ? हैं तो लेकिन वहां रहने लायक नहीं है। कम-से-कम हमारे जैसे लोगों के लिए ठीक नहीं। वहां रहने की जगहों की कोई कमी नहीं है। बहुत घर खाली पड़े हैं, वह ही किराए पर मिल जाते हैं।'

'पहले से ठीक करना पड़ता है या वहां पहुंचकर बात करनी पड़ती है ?'

'क्यों ? आज जाएंगे क्या ?'

'सोच रहा हूं।'

'अरे साहब, मेरे पास एक घर की चाभी है। उसे ले लीजिए न। मेरे बड़े साले का घर है। मैंने दो महीने के लिए लिया था लेकिन मैं तो एक ही महीने में लौट आया हूं। जाइए, घूम आइए—आनंद आएगा। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है—वहां चेंज हो जाएगा।'

उसके बाद मि. दासगुप्ता काफी जबर्दस्ती करने लगे। उन्होंने चाभी भी जबर्दस्ती ही दे दी। हिमांशु ने किराया देने की बात की पर उन्होंने सुनी अनसुनी कर दी।

'वहां सांस लेने से पता चलता है कि यहां की हवा शुद्ध है। कलकत्ते की तरह धुआं धूल नहीं है—'

मंदिरा हंसकर बोली, 'हवा कहीं भागी नहीं जा रही है—बाद में भी बहुत सांस लोगे। इस वक्त खाना पीना है या नहीं ? वह घर जिस जगह पर है, पूछ लिया है या नहीं ? मालिक को चिट्ठी डाल दी है या नहीं ?'

वैद्यनाथ धाम में ट्रेन सुबह साढ़े सात बजे पहुंची। यहां के लिए अलग बोगी में इनकी सीट रिजर्व होने के कारण रास्ते में कोई तकलीफ नहीं हुई। कल रात कलकत्ता कितना गर्म था, एक ही रात में जैसे दूसरी ही दुनिया में पहुंच गए थे। बढ़िया ठंडी हवा चल रही थी, धूप की गर्मी बुरी नहीं लग रही थी—कुल मिलाकर बड़ा अच्छा लग रहा था।

हिमांशु ने कहा, 'ठहरो, परेशान क्यों हो रही हो ? पहले और लोग चले जाएं तब आराम से जाएंगे। तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है। अभी तक मैं ही ठीक-ठीक व्यवस्था करता आ रहा हूं न ?'

बात तो ठीक थी। घर की ही व्यवस्था नहीं, ट्रेन का रिजर्वेशन, हावड़ा स्टेशन पर कुलियों के साथ पैसा तय करना—सभी कुछ हिमांशु ने ही किया था। साधारणतः हिमांशु मेहनत वाले काम करना पसंद नहीं करता है—लोगों से बात करने में भी कतराता है। उसे दायित्वहीन नहीं कहा जा सकता है, असल में ज्यादा काम-काज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का झमेला वह झेल नहीं सकता है। पर इस बार बाहर जाने के लिए खुद ही सारी दौड़-धूप वही कर रहा था। इससे मंदिरा के लिए उसके प्यार की गहराई का अनुमान लगाया जा सकता है।

जब तांगा आकर मकान के सामने रुका तो दोनों ही बहुत खुश हुए। उन्होंने सोचा ही नहीं था कि इतना अच्छा घर होगा। गुलाबी रंग का दुमंजिला मकान, चारों तरफ तस्वीर सा सजा बड़ा भारी बाग। सामने लोहे का फाटक, वहां से मकान तक लाल सुरकी बिछी हुई—दोनों तरफ यूकेलिप्टस के पेड़ों की कतार।

एक माली और उसकी पत्नी रहती है—वे ही लोग खाना-वाना बना देते हैं। मंदिरा और हिमांशु पूरी तरह से मुक्त थे—घर गृहस्थी का कोई झंझट ही नहीं—सचमुच की छुट्टी थी। गृहस्थी के झंझटों से छुट्टी पाने का स्वाद कितना मधुर है ?

शादी को आठ महीने हो गए थे लेकिन हिमांशु को लगा यहीं मंदिरा उसे पूरी तरह से मिली है। चांदनी रातों में वे बाग में बैठे रहते। बहुत दिनों बाद मंदिरा ने खुलकर गाना गया। कलकत्ते के किराए के घर में दबी आवाज में गाना भी संभव नहीं था। खासतौर से मंदिरा जैसी नवविवाहिता के लिए। शादी के बाद जैसे खुशियों पर पाबंदी लग जाती है।

हिमांशु रोज बाज़ार जाता, प्रायः ठग जाता फिर भी मंदिरा उसकी लाई चीजों की तारीफ करती। उसका लाया पेड़ा, भले ही चीनी का ढेला क्यों न हो, मंदिरा कहेगी, इतना बढ़िया पेड़ा पहले कभी नहीं खाया था। चीजें लाने के लिए नहीं बल्कि खुद अपने आप उत्साहपूर्वक ये सब काम कर रहा है, मंदिरा को यही अच्छा लग रहा था।

मि. दासगुप्ता ने जैसा कहा था वैसा नहीं था देवघर। न ही दूध घी सस्ता था। घी में मिलावट है हिमांशु समझता था। मुर्गे भी बिखरे पड़े हों ऐसा नहीं था। बल्कि अगर सुबह तड़के बाजार नहीं गए तो मछली या गोश्त मिलता ही नहीं था। फिर भी कलकत्ते से बहुत अच्छा था। वहां के बाजार की तरह धुक्कम-धुक्का नहीं, स्वार्थीपन नहीं था। हिमांशु को इसलिए अच्छा लग रहा था।

यहां आकर जैसे उनका बचपना लौट आया था। वे माली के लड़के के साथ गेंद खेलते, भाग-दौड़ करते। हिमांशु हंसकर कहता, 'यहां हमारा कोई पहचान वाला नहीं है। यहां हम अपनी मर्जी माफिक रख सकते हैं।'

मंदिरा कहती, 'इतने दिनों बाद तो हम पहचान वालों की नजरों से दूर आ सके हैं। कलकत्ते के घर में तो दो मिनट के लिए अकेले नहीं बैठ पाते थे—या तो मकान-मालकिन या धमकती नहीं तो पड़ोसी के बच्चे आ जाते—'

हिमांशु बोला, 'अगर चाहें तो हम अपने नाम भी बदल सकते हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे दोनों हर रोज नंदन पहाड़ पर घूमने जाते थे। हिमांशु भोर को उठकर बाजार चला जाता और तब तक मंदिरा नाश्ता तैयार कर लेती। उसके बाद दोनों एक साथ घूमने जाते। हिमांशु कमजोर आदमी था, सीढ़ियां चढ़कर पहाड़ की चोटी पर पहुंचते-पहुंचते थक जाता लेकिन मुंह से इस बात को कहता नहीं। ऊपर पहुंचकर मंदिर के चबूतरे पर बैठ जाता था।

सिर पर फैला नीला आकाश—जहां तक दिखाई देता नीचे खेत ही खेत—फसलें देखकर लगता गुड़ियां खड़ी हैं। पृथ्वी मानो खिलौना बन गई हो। जसीडी की तरफ बादल की तरह खड़ा है डिगविया पहाड़, एक रहस्यात्मक गंभीरता समेटे। यह सब देखकर हिमांशु का मन आनंद विभोर हो उठता, सारी थकावट पल भर में दूर हो जाती। उसे अफसोस होता कि चित्र बनाने का सामान साथ नहीं लाया है। एक बात का दुःख बहुत ज्यादा होता कि बचपन में यहां क्यों नहीं आया।

'तुम मंदिरा हो न ?'

मंदिरा ने मुंह घुमाकर देखा तो ठगी सी रह गई। उस लड़के को वह पहचानती थी। उसका नाम है दीपांकर, उसके बगल वाले घर में रहता था।

मंदिरा ने उदासीन भाव से कहा, 'हां। क्या हालचाल हैं ?'

दीपांकर उत्साह प्रकट करते हुए बोला, 'अरे, कितने दिनों बाद मुलाकात हुई है। आजकल कहां रहती हो ? ये ही तुम्हारे पति होंगे। परिचय तो करवाओ।'

परिचय होने पर भद्रता दर्शाते हुए हिमांशु ने नमस्ते किया लेकिन बात नहीं की। वह दोस्ती बढ़ाना नहीं चाहता था। वह और मंदिरा एक-दूसरे को संपूर्ण रूप से पाने के लिए यहां आए थे—इसमें तीसरे आदमी को पास आने देने के पक्ष में वह नहीं था। कलकत्ते में एक न एक झंझट लगा ही रहता है—इसीलिए तो यहां आए हैं ?

दीपांकर बोला, 'किस्मत से आप लोगों से भेंट हो गई—गपशप करने वाला मिल गया। कब तक हैं यहां ?'

'कोई आठ-दस दिन।'

'ओफ ! बात करने के लिए पागल हो रहा था। मेरी मां को दमा है, डाक्टर बहुत दिनों से चेंज की बात कर रहे थे लेकिन मौका ही नहीं मिल रहा था। इसीलिए इस बार महीने भर की छुट्टी लेकर—आप लोग कहां रह रहे हैं ?'

दीपांकर का स्वास्थ्य बहुत अच्छा था, बाल सलीके से कढ़े थे, सनग्लास पहन रखा था मानो दुनिया का स्वाभाविक रंग वह देखना नहीं चाहता था।

हिमांशु ने यहां आकर शेव करना छोड़ दिया था। मंदिरा ने ही कहा था, कलकत्त में तो रोज शेव करते हो, यहां दो-चार दिन छोड़कर किया करो न। हिमांशु यहां पहरावे पर भी ज्यादा ध्यान नहीं देते थे। लेकिन दीपांकर ऊपर से नीचे तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टिपटाप।

दीपांकर बोला, 'चलिए—लौटेंगे न ? एक साथ ही चलते हैं।'

हिमांशु उसी वक्त नहीं जाना चाहता था फिर भी उठ खड़ा हुआ। वापस लौटते वक्त दीपांकर बराबर बोलता रहा। हिमांशु बिल्कुल चुप, मंदिरा ही कभी-कभी 'हां' 'हूं' कर रही थी।

दीपांकर किसी कंपनी में सेल्समैन का काम करता है। उसका चरित्र हल्के किस्म का था। शादी से पहले उसने मंदिरा को कम तंग नहीं किया था। बगल-बगल मकान, दीपांकर की खिड़की से मंदिरा का कमरा स्पष्ट दिखाई पड़ता था। मंदिरा यथासंभव उधर की खिड़की नहीं खोलती थी लेकिन दक्षिण की तरफ थी खिड़की। गर्मी के दिनों में अगर खोलती तो दीपांकर को मुंह फाड़े इधर ही देखता पाती। आंखें मिलते ही हंसता। इसके अलावा सड़क की मोड़ पर खड़ा रहना तो उसका रुटीन था। जब कॉलेज में पढ़ती थी तब उसे अक्सर ही गेट के सामने सड़क के उल्टी तरफ खड़ा पाती थी। मना किया था, डांट चुकी थी मंदिरा लेकिन दीपांकर अपनी हरकतों से बाज नहीं आता था।

वह एक अजीब किस्म का लड़का है। उसने कभी मंदिरा के आगे प्रेम निवेदन नहीं किया था, उसके घर शादी का प्रस्ताव नहीं भेजा था पर जहां मंदिरा दिखाई पड़ जाती, कहता चलो जरा गंगा किनारे घूमने चलें। या तुम्हारे लिए फलां पिक्चर का टिकट काटूं ? अर्थात् शादी नहीं, प्रेम नहीं—बस एक लड़की के साथ मजे करने का मौका ढूंढ़ता। सबकी नजर बचाकर उसका बदन छूए, उसके साथ मस्ती करे। हिमांशु के साथ मंदिरा का परिचय होने के बाद भी उसने देखा था दीपांकर उन्हें दूर से देख रहा है। धीरे-धीरे दीपांकर ने ही उम्मीद छोड़ दी थी।

मंदिरा ने हिमांशु को कभी भी उसके बारे में नहीं बताया था। हिमांशु बड़े ही सूक्ष्म अनुभूति संपन्न इंसान है—जरा सी बात पर नाराज हो जाता है। उसके इसी गुण के कारण ही तो मंदिरा ने उसे चाहा था। बाहर से भले ही वह अत्यंत साधारण इंसान जान पड़े वास्तव में वह एक सच्चा आदमी था।

हिमांशु लोगों का घर पहला पड़ता था, दीपांकर और आगे रहता था। गेट के सामने ठहरकर दीपांकर बोला, 'वाह, आप लोगों का मकान तो बहुत बढ़िया है।'

अब शराफत कहती है कि उसे घर में आने के लिए कहा जाए। मंदिरा का परिचित है, उसे ही कहना चाहिए था पर उसने कुछ नहीं कहा। हिमांशु ही बोला, 'आइए, चाय पीकर जाइएगा।'

चाय पीकर देर तक बातें करने के बाद दीपांकर उठा। बोला, 'आप लोग गिरीडीह जरूर जाइएगा। चलिए, एक साथ चलने का प्रोग्राम बनाएं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदासीन भाव से हिमांशु बोला, 'हम जाएंगे या नहीं, कुछ तय नहीं है।'

दूसरे दिन वे लोग नंदन पहाड़ पर घूमने नहीं गए। इस बारे में आलोचना न करने पर भी दोनों ही जानते थे कि दीपांकर वहां मिल जाएगा। दोनों ही उससे मिलना नहीं चाहते थे।

एक जीप किराए पर लेकर दोनों त्रिकूट पहाड़ पर गए। बहुत बढ़िया सड़क थी...धीरे-धीरे करीब आता हुआ पहाड़ देखकर बहुत अच्छा लग रहा था। बीच-बीच में छोटी-छोटी नदियां। एक जगह जीप रोककर हिमांशु मंदिरा के लिए फूल तोड़ लाया। वे अनुभव कर रहे थे इस तरह जीने में कितना आनंद है। एक साथ सारे सुंदर दृश्यों का उपभोग करते हुए उन्हें लग रहा था कि न केवल हृदय, शरीर भी एकाकार हो गया है।

त्रिकूट पहाड़ पर साधु के आश्रम के पास गिर रहे झरने का अंजुली में भरकर पानी पी रहे थे कि उन्हें लगा सनग्लास पहना एक युवक उनकी तरफ बढ़ रहा है। और कौन होगा—दीपांकर।

'अरे ! आप लोग आज इधर आएंगे पता होता तो एक साथ आते। खर्चा शेयर कर लेते।'

पर हिमांशु यहां पैसे बचाने तो आया नहीं था। वह खुशियां मनाने आया था। दीपांकर को देखते ही उसे लगा आसमान बादलों से ढक गया है। अब घूमने का कोई मतलब नहीं है।

लौटते वक्त दीपांकर उनकी जीप में ही लौटा। लगातार बोलते हुए उस वक्त हिमांशु को लगा कि भले ही मंदिरा उसके पास बैठी हूं—उसका हृदय दूर चला गया है।

दीपांकर क्या मैजिक जानता है ? इसके बाद अगर घूमने जाएं तो कैसे साथ-साथ जाया जा सकता है इसी की परिकल्पना बनाता रहा दीपांकर। हिमांशु बड़ी चतुराई से हर योजना को नकारता रहा हिमांशु इतना शरीफ है कि मुंह पर किसी के 'नहीं' नहीं कर सकता है। दीपांकर देखने से मूर्ख नहीं लगता है। नवविवाहितों के साथ अवांछित तृतीय व्यक्ति के रूप में उपस्थित रहना उचित नहीं, क्या यह बात समझता नहीं है ? लेकिन स्पष्ट था, समझकर भी नासमझ बन रहा था। यद्यपि अभी तक उसने अभद्र व्यवहार नहीं किया था पर इन लोगों के लिए उसकी उपस्थिति व्यर्थ थी।

दो दिन बाद, ये लोग बिना किसी को कुछ बताए तपोवन घूमने गए। वहां भी दीपांकर मिल गया। कल ही उसने तपोवन आने का प्रस्ताव रखा था पर हिमांशु ने कह दिया, वहां वह नहीं जाएगा, वहां देखने के लिए कुछ है नहीं। इसके बाद भी उसे यहां आया देख दीपांकर को समझ लेना चाहिए कि हिमांशु उसके साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं नहीं जाना चाहता है। लेकिन दीपांकर की बातों से ऐसा नहीं लगा। वह बोला, 'मुझे ठीक मालूम था कि आप लोग आएंगे।'

हिमांशु ने कौतुकपूर्ण विस्मय प्रकट कर कहा, 'कैसे मालूम था ?'

'मैं मन-ही-मन यही चाह रहा था न।'

मंदिरा बोली, 'मेरी तो आज बिल्कुल ही आने की इच्छा नहीं थी लेकिन एक जान पहचान का तांगे वाला आकर इतना कहने लगा...'

छोटे से पहाड़ी के ऊपर साधु का आश्रम। आश्रम के एक कमरे से एक सुरंग नीचे जाती है। दीपांकर बड़े उत्साह से बच्चों की तरह उस सुरंग का वर्णन कर रहा था।

मंदिरा सुरंग में उतर चुकी थी। अचानक हिमांशु बोला, 'मैं उसमें से नहीं जाऊंगा। मैं बाहरी रास्ते से नीचे उतरूंगा।'

दीपांकर उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए बोला, 'अरे आइए न—खूब मजा आएगा।'

हिमांशु ने झटककर हाथ छुड़ा लिया, 'नहीं। अंधेरी संकरी जगह में मेरा दम घुटता है।'

'लेकिन मंदिरा तो उतर गई है—रास्ता खो बैठेगी।'

हिमांशु ने हंसकर कहा, 'मंदिरा रास्ता नहीं खोएगी।' फिर भी दीपांकर सुरंग में उतर गया।

सुरंग ठीक नहीं है—दोनों तरफ की दीवार के बीच से जाता पतला सा रास्ता। कहीं-कहीं पर ज्यादा अंधेरा है, संभलकर चलना पड़ता है। अचानक अपने कंधे पर किसी के हाथ का स्पर्श पाते ही मंदिरा चौंकी। स्त्रियां अपने पति के स्पर्श को पहचानती हैं।

पीछे से हंसकर दीपांकर बोला, 'तुम्हें पकड़े रहूंगा वरना गिर जाओगी।'

कंधा झटककर मंदिरा बोली, 'नहीं गिरूंगी। वह कहां हैं ?'

'हिमांशु बाबू नहीं आए। वे सीधे रास्ते से उतरेंगे।'

'आए क्यों नहीं ?'

'क्या मालूम, शायद मुझे चांस देने के लिए।' कहते-कहते दीपांकर मंदिरा से लिपट गया। कुछ दिनों से वह ऐसा ही मौका ढूंढ़ रहा था। वही एक ही हरकत। प्यार मोहब्बत की बात नहीं सिर्फ चोरी छिपे शरीर का उपभोग करने की इच्छा।

मंदिरा डपटकर बोली, 'अरे ये क्या हो रहा है ? छोड़ो।' दीपांकर ने अपनी पकड़ मजबूत कर, अपने होंठ मंदिरा के होंठों के पास ले जाने की कोशिश की। एक झटके में मंदिरा ने अपने आपको छुड़ा लिया। एक शब्द कहे बगैर हिरनी की तरह धड़धड़ाते हुए नीचे उतर गई। नीचे पहुंचकर देखा हिमांशु तब तक पहुंचा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं था। वह चिल्ला चिल्लाकर हिमांशु को पुकारने लगी। बगल में खड़ा दीपांकर हंसने लगा।

हिमांशु नीचे आ गया तो मंदिरा ने उससे कुछ नहीं कहा। हिमांशु के चेहरे पर संदेह की रेखा तक नहीं थी। वे दोनों एक-दूसरे पर पूर्ण विश्वास करते थे। फिर भी ऐसी बातें कही नहीं जाती हैं। पुरुष के मन में संदेह का बीज डाला तो पौधा निकल ही आएगा। क्या सुनकर हिमांशु विश्वास करेगा कि मंदिरा बेदाग उससे छूटकर चली आई है ? दीपांकर इतना बेशर्म कि इसके बाद भी उनके साथ लगा रहा। मंदिरा अपने पति से कुछ कह न सकी इस बात का वह मजा ले रहा था। मंदिर के साथ वह हंसी मजाक करने की कोशिश करता रहा।

उस दिन दीपांकर उनके साथ उनके घर तक आया। टहल-टहलकर उसने पूरा मकान देख डाला। प्रशंसा करते-करते अचानक बोल उठा, 'आप लोगों के इस मकान में काफी कमरे खाली पड़े हैं दो कमरे मुझे दे दीजिए न ?'

मंदिरा दीपांकर के साहस और धृष्टता पर दंग रह गई। उसने जल्दी से कहा, 'पर यह हमारा घर तो है नहीं न ? यह तो हमें किसी ने पंद्रह दिनों के लिए दिया है।'

'जैसे पंद्रह दिन वैसे ही एक महीना। घर तो पूरा ही दिया है न ? तो फिर इतने सारे कमरों का इस्तेमाल न करके फेंक रहना...'

हिमांशु ने कोमल स्वरों में पूछा, 'आप लोग जहां हैं वहां क्या बहुत असुविधा हो रही है ?'

'वाहियात मकान है। सड़क के किनारे की नाली से उठती बदबू के मारे उल्टी हो जाती है। मां को चेंज के लिए लाया हूं लेकिन दुर्गंध के मारे...उसकी तुलना में आपका यह घर तो स्वर्ग है।'

'हम लोग यहां ज्यादा दिन नहीं रहेंगे।'

'कम-से-कम अभी सात दिन तो हैं न ? इस बीच यहां रहकर हम दूसरा घर ढूंढ़ लेंगे। मां अब उस घर में एक दिन के लिए नहीं रहना चाह रही हैं। सच हिमांशु बाबू, अगर दो कमरे आप हमें दे देते—यूं भी तो आप लोगों के किसी काम नहीं आ रहे हैं ये कमरे—इससे मेरी मां का बहुत उपचार होता है।'

उदासीन भाव से हिमांशु बोला, 'ठीक है रहिए।'

'तो कल ही आ जाऊं ?'

आज चांदनी रात नहीं थी—बल्कि बादल छो रहे थे। आज बाग में बैठना न हुआ। जल्दी खा-पीकर दोनों लेट गए। बिजली की बत्ती बुझाकर हिमांशु मोमबत्ती जलाकर पढ़ने लगा। मंदिरा थोड़ी देर तक चुपचाप लेटी रही। फिर हिमांशु के बालों में हाथ फेरते हुए बोली, 'आज तुम इतने गंभीर क्यों हो ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'कहां ? नहीं तो।'

'तुम राजी कैसे हो गए ? उसे कमरे छोड़ देने की बात मान क्यों गए ? अब हमें एकांत और शांति मिल पाएगी ?'

'वाह, तुम्हारा परिचित है। जब तुमने मना नहीं किया तो मैं कैसे मना कर दूं ?'

'तुमने मेरी तरफ देखा ही नहीं। मैं तुम्हें इशारा कर रही थी कि न दो।'

'जाने दो, जब कह दिया है तब और कुछं तो हो न सकेगा। आकर रहे, अगर इससे उसका किसी तरह का उपकार होता है तो होगा। यह बताओ, आज गुफा कैसी देखी ?'

मंदिरा हंसने लगी। हंसकर बोली, 'सभी गुफाएं जैसी होती हैं वैसी ही—इंसान के मन की तरह। बहुत ही आड़ी तिरछी, कहीं रोशनी, कहीं अंधेरा।'

'तुम रास्ता तो नहीं खो गई थीं ?'

'नः।'

'अच्छा मंदिरा दीपांकर तुम्हारा क्या लगता है ?'

'कोई नहीं।'

'वह क्या तुमसे प्यार करता था ?'

'नहीं तो।'

'तब फिर, उससे तुम्हारा परिचय कैसे हुआ ?'

अभी तक मंदिरा हर सवाल का जवाब सही सही दे रही थी। आज तक हिमांशु ने उससे दीपांकर के बारे में कुछ नहीं पूछा था। आज पहली बार उसने सवाल किए थे। लेकिन सच कहने पर क्या हिमांशु की समझ में आएगा ? दीपांकर के साथ मंदिरा का कभी भी कोई संपर्क नहीं था। दुनिया में इस तरह के लोग होते हैं जिन्हें लड़कियों को छेड़ने में मजा आता है। लाख कोशिश करने पर भी लड़कियां इनसे बच नहीं पाती हैं। लेकिन फिर भी लड़के लड़कियों की मजबूरी को समझ नहीं पाते हैं।

मंदिरा ने इसीलिए झूठ का सहारा लिया। वह बोली, 'ये तो मेरे छोटे भइया के घनिष्ट मित्र हैं। मुझे बचपन से पहचानते हैं और छोटी बहन की तरह मानते हैं। कितनी बार कह चुके हैं कि एक बहन का बड़ा शौक था, अपनी सगी बहन नहीं है न, इसीलिए मैं ही—'

झूठ बोलकर मंदिरा को डर सा लगा। क्या पता ठीक-ठीक बोल सकी है या नहीं। अपने बचाव के लिए नहीं बल्कि हिमांशु के मन को चोट न पहुंचे इसलिए उसे झूठ बोलना पड़ा था। न प्यार करने पर भी दीपांकर उसका शरीर छूना चाहता है—इस बात पर क्या हिमांशु विश्वास करेगा ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिमांशु ने विश्वास किया या नहीं कौन जाने पर वह चुप रहा। मंदिरा और पास सरक आई। हिमांशु से लिपट गई। हिमांशु धीरे-धीरे कहने लगा—

'न जाने क्यों लग रहा है अचानक यहां आकर हम दोनों दूर हट गए हैं।'

मंदिरा बोली, 'कल तुम उन्हें मना कर देना। उन्हें यहां आने की कोई जरूरत नहीं है।'

'तुमने क्यों नहीं जोर देते हुए मना किया ?'

'मैंने मना इसलिए नहीं किया था क्योंकि तुम मर्द हो। तुमने ही यहां आने की सारी व्यवस्था की थी—यह बात तुम्हारे मुंह से ही शोभा देती। मैं कहती तो लगता तुम मेरे कहने पर चलते हो।'

'ठीक कह रही हो लेकिन मैंने तो हामी भर दी है मंदिरा और पास आओ, और...न जाने क्यों लग रहा है तुमको उतना पास नहीं पा रहा हूं—दोनों दूर हटते जा रहे हैं।'

'लो न, मैं तो तुम्हारे पास ही हूं।'

'अच्छा एक काम किया जाए। कल ही हम लोग यहां से चले जाएं।'

मंदिरा कुछ कहते-कहते रुक गई। थोड़ी देर बाद वह बोली, 'वही ठीक होगा। चलो, चले ही जाएं। अब यहां अच्छा नहीं लग रहा है।' उसने फिर कहा, 'लेकिन इस तरह से हम कितने लोगों से भागते रहेंगे ?'

9

मंदिरा बोली, 'आज तुम्हारा चेहरा इतना उतरा-उतरा क्यों लग रहा है ?'

हिमांशु जरा फीका हंसी हंसकर बोला, 'कहां ? नहीं तो।'

'तुम्हारी तबीयत तो खराब नहीं है ?'

'नहीं-नहीं। कुछ नहीं हुआ है।'

'तब फिर इतने गंभीर क्यों हो ?'

हिमांशु जरा पास आ गया। जेब में हाथ डालकर मानो कुछ ढूंढ़ा उसने फिर पूछा, 'तुम्हारे पास फुटकर पैसे हैं क्या ? जरा दो तो, दो सिगरेट खरीदूं।'

मंदिरा अपना पर्स लेते हुए बोली, 'तुम तो सुबह दस रुपये का नोट लेकर निकले थे—उसे तुड़वाया नहीं क्या ?'

'वह रुपया किसी को दे दिया है।'

'किसे ?'

उत्तर न देकर हिमांशु ने सिगरेट खरीदी, रस्सी से सुलगाई। ज्यादा सिगरेट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न पीने के कारण उसकी जेब में दियासलाई नहीं रहती है। सिगरेट का कश खींचकर बहुत सारा धुआं छोड़ते हुए उसने कहा, 'आज मेरा जी उदास है।'

सुनते ही उत्कंठित हो मंदिरा ने पूछा, 'क्यों ? आज फिर दफ्तर में किसी से झगड़ा तो नहीं किया है ?'

आज हिमांशु को दफ्तर में देर तक रहना था—उसे कुछ काम खत्म करने थे और यह तय हुआ था कि छुट्टी होते ही मंदिरा घर लौट जाएगी। लेकिन कहीं एक आदमी दोपहर के वक्त बस से दबकर मर गया था इसलिए लोगों ने बस के ड्राइवर को ही मार डाला था। अब इसी कारण चार बजे से सारी बसें बंद हो गई थीं। ट्रामों में इतनी भीड़ हो गई कि उस पर चढ़ना मुश्किल था। टैक्सी भी भाग्यवानों को ही मिल सकती थी।

मंदिरा ने फोन करके हिमांशु से कहा था कि अब तो साथ ही लौटना पड़ेगा। इस पर हिमांशु भी ज्यादा देर तक दफ्तर में रुका नहीं। छुट्टी के बाद दोनों साथ ही पैदल चलकर घर लौट रहे थे। बाऊ बाजार स्ट्रीट पार करने के लिए रुके थे।

हिमांशु बोला, 'नहीं-नहीं, झगड़ा नहीं किया है। आज तपन की नौकरी चली गई। तुम्हें तपन याद है न ?'

'कौन ? मैं उससे मिली हूं ?'

'हां, मिल चुकी हो। याद करो, एक दिन हम लोग लिंडसे स्ट्रीट में समवायिका गए थे तब ग्लोब सिनेमा के सामने एक लड़का मिला था—मैंने तुमसे उसका परिचय भी करवाया था—उसी का नाम है तपन सरकार।

'हां, हां याद आया। खूब लंबा सा—'

'हां तपन बहुत लंबा है। दुबला होने की वजह से और भी लंबा लगता है।'

'उसकी नौकरी क्यों चली गई ?'

हिमांशु ने अन्यमनस्क भाव से मंदिरा को देखा फिर कहा, 'ओ, हां ! आज से उसकी नौकर चली गई। अब से दो महीने बाद उसकी शादी होने वाली थी। उस लड़की को भी मैं पहचानता हूं—उसका नाम है सुपर्णा—आर्ट कॉलेज में हमसे एक साल जूनियर थी। अब क्या शादी होगी ?'

'वाह, नौकरी चली गई तो क्या शादी टूट जाएगी ? ज्यादा से ज्यादा पिछड़ जा सकती है।'

इस बार उसने मंदिरा की ओर देखते हुए कहा, 'सब क्या तुम्हारे जैसे होते हैं ? इतना आत्मत्याग करता है कोई ? सुपर्णा चंचल स्वभाव की है—उसे विलासिता पसंद है—किसी बेकार आदमी के साथ ज्यादा दिनों तक प्यार न कर सकेगी।'

मंदिरा ने कपट कोप दर्शाते हुए कहा, 'इस तरह से मत कहो। लड़कियों को तुम लोग समझते नहीं हो। नौकरी चली गई है इसलिए प्यार भी चला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाएगा—ऐसी कोई बात नहीं है। बल्कि प्यार बढ़ ही सकता है।'

'सुपर्णा वैसी लड़की नहीं है। सभी लड़कियां एक जैसी नहीं होती हैं।'

'कोई भी आदमी एक जैसा नहीं होता है।'

हिमांशु सिगरेट फेंकते हुए बोला, 'सो तो ठीक है। तपन के लिए यह बात ज्यादा सटीक बैठती है। और दो महीने बाद उसका एक प्रोमोशन ड्यू था।'

'रुपया तुमने उसे ही दिया है ?'

'दफ्तर में सबने मिलकर तपन को फेयरवेल दिया। सभी उसे बहुत चाहते थे। उससे कभी किसी का झगड़ा तक नहीं हुआ था। फेयरवेल में मुझे और ज्यादा रुपया देना चाहिए था लेकिन मेरे पास ज्यादा तो था नहीं। जब रुपया इकट्ठा हो गया तो कुछ लोगों ने कहा उसे कोई चीज खरीद दें पर मैंने कहा, कोई चीज-वीज खरीदकर देने की जरूरत नहीं है। एक लिफाफे में रखकर उसे रुपया दे दो। रुपया उसके ज्यादा काम आएगा, चीज तो दो महीने बाद शायद उसे बेचना पड़ेगा—तब दाम कम ही मिलता—'

'घर की हालत बहुत खराब है क्या ?'

'समझ लो, मेरे ही जैसा। लेकिन अब आसानी से नौकरी तो मिलेगी नहीं, उसका खर्च कैसे चलेगा ?'

'नौकरी नहीं मिलेगी ? क्यों ?'

'आजकल नौकरी मिलना तो असंभव हो गया है। पिछले एक साल में जितने लोगों ने लॉटरी जीती है, उससे भी कम लोगों को नौकरी मिली होगी। और फिर हमारे लाइन में तो इतने ज्यादा कैंडीडेट हैं—'

'पर तुमने ये तो बताया नहीं कि उसकी नौकरी गई क्यों ? उधर कह रहे हो कि दफ्तर में सभी उसे चाहते थे—'

कोलूटोला के पास रास्ता पार करने के लिए दोनों ने एकाग्रदृष्टि से गाड़ियों को देखना शुरू किया। ट्रैफिक जाम, लंबी ट्रामों की लाइन, रिक्शा लॉरी, मोटर से रास्ते पर तिल धरने की जगह नहीं थी। वे लोग उन्हीं वाहनों के बीच से इस पार चले आए।

'बताया नहीं तुमने ?'

हिमांशु अजीब सी हंसी हंसा। फिर बोला, 'तपन की अपनी गलती से ये नौकरी गई है। सभी यही कहते हैं—उसकी ही गलती है। इस तरह से नौकरी बनी रहे यह असंभव है।'

'उसने क्या किया है ?'

'तपन अक्सर ही दफ्तर नहीं आता था। पूरा हफ्ता एक साथ कभी भी वह दफ्तर नहीं आया होगा। एक दिन आता तो दूसरे दिन सुनिश्चित था कि वह नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आएगा। कभी-कभी तो पूरे हफ्ते ही गायब रहता। किसी तरह की खबर भी नहीं भेजता था।'

'इतनी छुट्टियां पाता कहां से था ?'

'छुट्टियां कहां थी ? उसे मिलने वाली सारी छुट्टियां तो शुरू के एक आध महीने में ही खत्म हो जाती थी।'

'तो क्या तनख्वाह नहीं कटती थी ?'

'क्यों नहीं ? कटती तो थी ही—उसे कभी भी पूरे महीने की तनख्वाह नहीं मिलती थी। लेकिन इसका उस पर कोई असर नहीं होता था। तनख्वाह कटने के लिए अगर कोई कुछ कहता था तो वह जवाब देता काटने दो तनख्वाह—। यूं भी वह चाय और सिगरेट ज्यादा पीता है—दूसरों को अपनी जेब से सिगरेट निकालकर पिलाता था—महीना खत्म होते-होते इन दोनों चीजों के लिए उसके पास पैसे नहीं होते थे फिर भी नागा करने से बाज नहीं आता था।'

'अजीब आदमी है। ऐसा क्यों करता है वह ?'

'यही बात तो किसी के समझ में नहीं आती है।'

'प्यार के कारण दफ्तर जाने का जी न करता होगा।'

कालूटोला पार होकर जरा सा आगे बढ़े ही थे कि एक के बाद एक, दो बम फटने की आवाज हुई। अब कोई परेशान नहीं होता है, वे दोनों भी खड़े हो गए। आवाज कॉलेज स्ट्रीट की तरफ से आई थी। लोगों में भगदड़ शुरू नहीं हुई थी। हां चकित दृष्टि से इधर-उधर से लोग ताक झांक जरूर कर रहे थे।

हिमांशु का चेहरा कठोर हो उठा, मंदिरा ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। तभी एक और बम फटा लोगों ने दौड़ना भी शुरू कर दिया। हिमांशु ने खास चंचलता नहीं दिखाई, मंदिरा के हाथ पकड़े-पकड़े रास्ते के इधर चला आया। मंदिरा बोली, 'चलो चितपुर की तरफ से जाएं। उधर गड़बड़ी नहीं होती है।'

वे लोग चुपचाप उधर ही चलने लगे। सचमुच उधर कोई गड़बड़ी नहीं थी। शायद बम फटने की आवाज इधर पहुंची नहीं थी, स्वाभाविक ढंग से गाड़ियां चल रही थीं।

आज सचमुच ही हिमांशु उदास था। जो सारे दिन में तीन या चार से ज्यादा सिगरेट नहीं पीता है उसने इसी बीच दूसरा सिगरेट सुलगा लिया था।

वह बोला, 'तपन को मैं एक जमाने से पहचानता हूं। मेरे साथ आर्ट कॉलेज में पढ़ा है। इससे पहले वह बुआजी के घर के पास ही रहता था। एक बार हम दोनों ने मिलकर सरस्वती पूजा का पंडाल सजाया था। इतना बढ़िया अल्पना बनाता था कि लड़कियां मुंह फाड़कर देखती रह जाती थीं।

'फिर भी प्रेम के खातिर नौकरी गंवा बैठना बुरी बात है। शाम तक रुक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं पाता था ? क्या दोपहर ही में सुपर्णा से मिलने जाता था ?'

हिमांशु हंसकर बोला, 'नहीं, ऐसी बात नहीं है। प्रेम के खातिर आजकल कोई नौकरी नहीं गंवाता है।'

'तो इसके अलावा और क्या हो सकता है ? जल्दी-जल्दी कोई बीमार थोड़े ही पड़ता है।'

'नहीं बीमारी नहीं, तपन का स्वास्थ्य बहुत अच्छा है—'

'तब तुम पता करो जरूर यही बात है। सुबह से न मिल पाने के कारण दिमाग ठीक नहीं रहता होगा।'

'सच में ऐसा कुछ नहीं है। सुपर्णा यहां नहीं रहती है। उसके पिताजी का ट्रांसफर चित्तरंजन में हो गया है। यद्यपि दो एक महीने बाद सुपर्णा कलकत्ता आती है।'

'तो क्या, विरह ? बाप रे, इतनी तगड़ी विरह कि दफ्तर न जाकर घर बैठे उसके चेहरे का ध्यान...'

'यह बात भी नहीं है। तुम क्या मानती हो कि प्यार दीवाना होकर कोई दफ्तर जाना बंद कर सकता है ? अगर यह बात होती तो वह बार-बार चित्तरंजन दौड़ा करता। ऐसा वह नहीं करता है। यहां तक कि सुपर्णा की शिकायत है कि तपन समय से चिट्ठियां भी नहीं लिखता है। सुपर्णा सुस्थिर किस्म की लड़की नहीं है—वही अपनी तरफ से प्यार का राग आलापा करती थी।'

'तो फिर तपन ऐसा क्यों करता है ?'

'यही तो बात है। मैं एक आध बार उसे ढूंढ़ता हुआ उसके घर गया था। मैं सोचता था वह घर पर बैठकर चित्र बनाया करता है लेकिन नहीं—वह सिर्फ लेटा रहता है। बीमारी भी कुछ नहीं। दफ्तर जाने के लिए कपड़े बदलकर खा-पीकर तैयार होगा फिर निकलेगा नहीं, थोड़ी देर बाद जाऊंगा यही करते-करते उसका निकलना ही नहीं होता है।'

'दोपहर भर पड़े-पड़े सोता है ?'

'नहीं सोता नहीं है। छत की तरफ देखता घंटों पड़ा रहता है। कभी-कभी एक आध किताबों के पन्ने उलटता है लेकिन सोता नहीं है।'

'तुमने पूछा नहीं, ऐसा क्यों करता है ?'

'पूछा है। कुछ खास बात नहीं बताता है। सिर्फ कहता है धत् अच्छा नहीं लगता है। मैंने एक बार कहा था, तेरे डेक्स पर कुछ जरूरी ले-आउट इन्-कमप्लीट पड़े हैं और तू घर पर लेटा हुआ है ? उसका वही घिसापिटा जवाब, धत् अच्छा नहीं लगता है। तपन का काम लेकिन अच्छा था और इसीलिए आज तक ऑफिस वालों ने उसे निकाला नहीं था। जिस दिन ऑफिस पहुंच जाता उस दिन दिल लगाकर

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम करता था—बहुत बढ़िया डिजाइन बनाता है—हम लोगों से भी अच्छी डिजाइन—बस यही एक खराबी थी बिना कहे सुने नागा करना।'

'अच्छा आलसी आदमी है। मर्द को ऐसी बातें शोभा नहीं देती हैं। दोपहर के वक्त घर पर लेटे रहना—'

'आलसी ? हां आलसी कह सकती हो।'

मंदिरा ने पूछा, 'कचौड़ी खाओगे ? जब इधर आ ही गए हैं—बड़े बाजार की दुकानों की कचौड़ी और सब्जी का स्वाद ही अलग है। खाओगे ?'

हिमांशु ने बड़ी ज्यादा उत्साह न दिखाते हुए ठंडी आवाज में कहा, 'चलो।'

सफेद टाइल्स लगी साफ सुथरी दुकान। रोशनी तेज। इन दोनों ने कचौड़ी और चमचम का आर्डर दिया। हिमांशु के जेब में कौड़ी नहीं थी, मंदिरा के पास ही रुपये थे।

हिमांशु बेमन से खा रहा था। अब बातें भी नहीं कर रहा था। खाना अंगुलियों से इधर-उधर कर रहा था।

मंदिरा बोली, 'तुम अपना मुंह ठीक तो करो। तुम्हारे दोस्त ने अपनी गलती के कारण नौकरी गंवाई है, उसके लिए तुम अपना दिल क्यों दुःखी करोगे ?'

'मैं उसके लिए दुःखी नहीं हूं।'

'बिल्कुल हो। बात ही नहीं कर रहे हो।'

हिमांशु ने मुंह उठाते हुए कहा, 'सच मानो, मन उसके लिए उदास नहीं है। मुझे एक बात सोचकर बुरा लग रहा है। आज नौकरी चली जाने की खबर सुनकर भी तपन को उदास होते नहीं देखा। बल्कि प्रसन्न ही दिखाई दे रहा था। मानो एक झमेले के हाथ से छुटकारा पा गया हो। अब उसे अपने विवेक से लड़ना नहीं पड़ेगा—'

'विवेक के साथ लड़ाई क्यों ?'

'इसे ठीक विवेक के साथ लड़ाई कहना ठीक नहीं होगा। यह शब्द यहां फिट नहीं बैठता है लेकिन मेरे पास समझाने के लिए भाषा नहीं है। हमारे दफ्तर में कोई गलत काम तो करना नहीं पड़ता है जो विवेक की लड़ाई लड़ी जाए। लेकिन बात क्या है जानती हो, तपन और मैं एक ही साथ आर्ट कॉलेज में फाइन आर्ट्स के छात्र थे। कितने सपने देखे थे, हम नए शिल्प की सृष्टि करेंगे, शिल्पकला के क्षेत्र में नई दुनिया बनाएंगे और भी न जानें क्या-क्या ? वह सारे सपने जाने कहां खो गए ? अब हम विज्ञापन कंपनी में विज्ञापन के लिए चित्र बनाते हैं। फिर भी तो यह नौकरी हमें मिलनी नहीं चाहिए थी। मिल गई है इसीलिए किसी तरह से जकड़े हुए हूं। शिल्पकला में नया कुछ करने का विचार जलकर राख हो चुका है। शुरू-शुरू में नौकरी के बारे में सोचता था। सोचता था, थोड़े दिनों बाद, रुपया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इकट्ठा करके अलग से चित्र बनाया करूंगा, प्रदर्शनियां करूंगा लेकिन यह सब होता नहीं है। संभव ही नहीं है। पर इस बात का दुःख जिंदगी भर मन में बना रहता है। मंदिरा तुम्हारी समझ में आ रहा है न कि मैं क्या कहना चाह रहा हूं ?'

'हां, मैं समझ रही हूं।'

'बहुत लोग अपने आपको परिस्थितियों में ढाल लेते हैं। पर तपन ऐसा न कर सका। वह कहता था कमर्शियल काम करते-करते मेरे रंग ब्रश सब नष्ट हुए जा रहे हैं इस ब्रश से मैं सचमुच के चित्र न बना सकूंगा। यह दुःख तपन को हर समय घेरे रहता था। इसीलिए दफ्तर न जाकर लेटे-लेटे वह अपने यौवनकालीन सपनों की बातें सोचता रहता था।'

'फिर भी, तुम कुछ भी कहो—'

'मेरा मन तपन के लिए उदास नहीं है। मेरा मन अपनी बात सोचकर उदास है। मेरी भी इच्छा नहीं होती है हर दिन दफ्तर में बैठा विज्ञापन के लिए चित्र बनाता रहूं। मेरा भी मन करता है दोपहर में चुपचाप बिस्तर पर पड़े-पड़े छत निहारा करूं। दुनिया में हर कोई काम के लिए पागल है। पर यह बात किसी की समझ में नहीं आएगी कि एक आर्टिस्ट के लिए बड़ा भारी काम है छत को निहारना। कभी-कभी मन करता है ब्रश और स्केल वगैरह फेंक दूं लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता हूं। तपन ने तो अपनी नौकरी गंवा दी पर मैं ऐसा नहीं कर सका। इसीलिए मेरा—'

अचानक उसकी दृष्टि मंदिरा की दृष्टि से मिली। जल्दी से हाथ बढ़ाकर उसने मंदिरा की बांह छूकर आंतरिक भाव से कहा, 'नहीं-नहीं, तुम डरो मत। मैं तपन की तरह कुछ नहीं करूंगा मैं अपनी गृहस्थी को बर्बाद होने न दूंगा।'

'अगर सचमुच तुम्हारा मन यह सब सोचकर खराब रहता है तो न हो तुम...'

'नौकरी छोड़ दूं ? पागल हुई हो क्या ? नौकरी छोड़ दूंगा तो क्या खाऊंगा ? इतनी मुश्किल से घर बसाया है—टूट जाएगा क्या ?'

दुकान में लोगों की भीड़ थी पर मंदिरा ने उनकी परवाह नहीं की। मेज पर रखे हिमांशु के हाथ पर अपना ममता भरा हाथ रखा। घर से उसे देखती रही। पर हिमांशु उससे आंखें न मिला सका। अपराधियों की तरह खिसियाई हंसी हंसकर बोला, 'तपन पागल है।'

मंदिरा बोली, 'अब तुम अपना मन उदास नहीं करोगे ? बोलो।'

'नहीं—मैं ज्यादा देर तक उदास नहीं रहूंगा क्योंकि मुझे तुम मिली हो। मैं समझता हूं कि शिल्पकार बनने का सपना देखने से कहीं ज्यादा बड़ी बात है किसी का प्यार पाना।' उसका गला कांप उठा। उसने मंदिरा की तरफ देखकर पूछा, 'क्यों, ठीक कहा है न ?'

मंदिरा ने नजर फेर ली। बोली, 'क्या मालूम।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10

उस दिन मंदिरा का जन्मदिन था लेकिन हिमांशु के पास दफ्तर में काफी काम था। मैनेजर स्वयं आकर कह गए थे कि कुछ ले-आउट खत्म किए वगैर वह न जाए–पार्टी बहुत तगादे कर रही है।

काम खत्म करते-करते हिमांशु को आठ बज गए। जन्मदिन की बात मंदिरा ने नहीं बताई थी लेकिन हिमांशु ने खुद ही याद करके संदेश एक डिब्बा और फूल खरीदे थे। प्रोसेशन के कारण ट्राफिक जॉम। बस पर काफी देर तक बैठे रहने के बाद वह उतरकर पैदल ही चल पड़ा–तब तक साढ़े नौ बज गए थे।

मंदिरा खाना बनाकर थोड़ा साज श्रृंगार कर हिमांशु की इंतजारी कर रही थी खिड़की के पास। उसका चेहरा परेशान दिख रहा था। हिमांशु के लौटते ही बोली, 'पता है, मुझे तुम्हारी बड़ी चिंता हो रही थीं। लौटने में इतनी देर क्यों हुई ?'

'आफिस में एक्सट्रा काम था, मना नहीं कर सका। पर मेरी चिंता क्यों कर रही थीं ? मैं बच्चा हूं क्या जो रास्ता खो बैठूंगा ?'

'इसलिए नहीं। आज शाम को इस मोहल्ले में दोनों पार्टियों के बीच भयंकर मारपीट हुई है। सोडा की बोतल, पत्थर फेंकना, चीखना चिल्लाना...बहुत ही गड़बड़ी हुई है।'

हिमांशु ने मंदिरा की दुश्चिंता पर विशेष ध्यान नहीं दिया। हंसकर बोला, 'मुझे तो आते समय कुछ नहीं दिखाई पड़ा। रास्ता खाली पड़ा है–देखकर समझ ही में नहीं आता है।'

'ओफ, शाम को क्या हो-हल्ला मचा था। पुलिस भी आई थी।'

'इलेक्शन के पहले तो ये सब होगा ही। आजकल के दिनों में इन बातों की कोई कीमत नहीं है।'

'ऊपर की कृष्णा दी कह रही थीं कि यह सब आसानी से रुकने वाला नहीं, फिर मारपीट होगी। दो जनों का सिर भी फटा है। सुना है उस पार्टी के लोग बदला लेंगे। तुमने सिगरेट वगैरह खरीद लिया है न ? रात को मत निकलना, मुझे डर लगता है।'

'अच्छा-अच्छा, नहीं निकलूंगा। फूल तो पकड़ो–'

'ये क्या ? मिठाई भी लाए हो ? हाय, फूल कितने सुंदर हैं। तुम्हें मेरे जन्मदिन की याद थी ?' कहते हुए मंदिरा ने झट हिमांशु को चूमा और रसोईघर में भाग गई। हिमांशु ने उसका आंचल पकड़ना चाहा पर न पकड़ सका।

एक ही तो दूध का कार्ड है।–उतने से दोनों वक्त की चाय और हिमांशु के लिए एक वक्त का दूध भर होता है। फिर भी न जाने आज मंदिरा ने कैसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नए गुड़ की खीर बनाई थी। हिमांशु को मुर्गा पसंद है इसलिए आज मुर्गा भी बनाया है।

अपने घर में मंदिरा ने कभी खाना नहीं बनाया था लेकिन अपना घर बसाने के बाद इस बीच में सब कुछ सीख लिया है। चूल्हे के सामने जब वह किताब लेकर बैठती है तब बड़ी मजेदार लगती है। हिमांशु इसके लिए खूब मजाक बनाता है। हालांकि अब उसे किताब की जरूरत नहीं पड़ती है।

हर एक खाना चख-चखकर तारीफ करते हुए हिमांशु ने खाना खाया। खाते हुए बोला, 'मोनी, आज सारे दिन वक्त ही नहीं मिला, इसलिए रात को जागकर सारी रात बात करूंगा।'

शर्माई मंदिरा ने हौले से सिर हिलाया।

रास्ते के किनारे ही कमरा है। खिड़की का पर्दा हटाते ही साफ आसमान दिखाई पड़ता है। आज बादल न होने के कारण सुंदर चांदनी फैली थी—तारों से आसमान भरा था। बचपन में मां आकाश की तरफ अंगुली उठाकर कहती थी, 'ध्रुवतारे के पास जो खाली जगह देख रहा है न, मैं मरने के बाद वहीं तारा बनकर रहूंगी। तब तू यहां से मुझे देखना।' बचपन का वह विश्वास काश आज भी होता।

मंदिरा बगल वाले कमरे में कुछ ठीकठाक कर रही थी, हिमांशु ने खिड़की के पास बैठकर सिगरेट सुलगा ली। साढ़े दस बज चुके थे, रास्ता करीब-करीब खाली हो गया था। जब सिनेमा का नाइट शो छूटेगा तब एक बार सड़क पर चहल-पहल होगी, रिक्शे की आवाज आएगी। दिन के वक्त अन्य वाहनों की आवाज रिक्शे की आवाज को दबा देती है।

पर यह खामोशी टूटते देर नहीं हुई। चौदह-पंद्रह युवक शोर मचाते भागते हुए आए। चिल्लाने लगे, 'हमारी पार्टी के आदमी पर हाथ उठाने की हिम्मत ? आज जान के बदले जान ले लेंगे, आ, कौन साला है, बाहर निकल—'

मंदिरा जल्दी से इस कमरे में आई—चेहरे पर उत्कंठा के चिह्न। हिमांशु का हाथ कसकर पकड़ते हुए दबी आवाज में बोली, 'मैंने कहा था न, लौट आएंगे ? तभी इन लोगों ने कहा था गुंडे लेकर आएंगे। तुम्हें मेरी कसम तुम एक भी शब्द नहीं बोलोगे। हमारे साथ तो कोई बात नहीं है। उनका मामला है—हमें सिर खपाने की जरूरत नहीं है।'

'हिमांशु हंसकर बोला, 'अरे मैं क्यों कुछ कहूंगा ? हमें परेशान भर न करें—बस। बल्कि देखूं तो जरा बात क्या है ?'

'नहीं तुम्हें देखने की जरूरत नहीं है। खिड़की के पर्दे खींचकर तुम वहां से हट आओ।'

'आता हूं, आता हूं—तुम डरो मत।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खिड़की के पास से हटते ही हिमांशु की दृष्टि उस रसीद पर पड़ी। मेज पर एक मोटी किताब से दबा कर रखी थी दस रुपये चंदे की रसीद देखते ही हिमांशु को गुस्सा आ गया। आहत स्वरों में बोला, 'मोनी, तुमने उन्हें चंदा दिया है ?'

'आज शाम को फिर आए थे। मुझे डर लग रहा था। सोचा, दस रुपये की तो बात है, दे ही दूं। देखना, मैं काम चला लूंगी।'

'काम चलाने की बात नहीं हो रही है। मैंने कहा था चंदा नहीं दूंगा फिर भी तुमने मुझसे पूछे वगैर ही—'

'अरे, मैं खुद भी तो दे सकती हूं। मेरी उनकी पार्टी प्रति सहानुभूति हो सकती है। क्या इन मामलों में पति-पत्नी के विचारों में अंतर नहीं हो सकता है ?'

'जरूर हो सकता है। तुम देना चाहोगी तो मैं कभी मना नहीं करूंगा। पर रसीद में तो तुम्हारा नाम लिखा होना चाहिए था। मेरा नाम क्यों है ?'

'वाह, तुम तो घर के मालिक हो। मेरे पास क्या अलग रुपया है ? सारा रुपया तुम्हारा ही है। इसीलिए रसीद पर तुम्हारा नाम है। इससे क़ोई फर्क नहीं पड़ता है।'

'घर का मालिक कौन है ? मैं या तुम ? तुम ही तो सब कर रही हो, मेरी बात की कोई कीमत ही नहीं है। मैं तो जैसे असहाय प्राणी हूं। जानती हो, चंदा देने का मतलब क्या हुआ ? उन्होंने समझ लिया, इस घर में मेरी जुवान की कोई कीमत नहीं है। मैं मना करूं तब भी मेरी बीवी—'

'तुम इस बात को ऐसे क्यों देख रहे हो ?'

'मैं ठीक तरह से ही देख रहा हूं। तुमने उनसे मेरा अपमान क्यों करवाया ?'

'अपमान कहां करवाया ? बाद में तुम अपनी राय भी तो बदल सकते हो ?'

'डरकर ? मानें उनसे डरकर मैंने अपनी राय बदली है ?'

मंदिरा ने हिमांशु के होंठों पर अंगुली रखते हुए कहा, 'चुप, इतनी जोर से मत चिल्लाओ। क्षमा कर दो। आज इस बारे में कोई बात मत करो, जो कुछ कहना है कल कहना। कल मुझे डांटना है तो डांट लेना, जो जी में आए करना लेकिन आज नहीं। आज मेरा जन्मदिन है—कम-से-कम आज इस बात को सोचकर दिल छोटा मत करो। आज तुम मेरी बात सुनो।'

हिमांशु चुप तो हो गया लेकिन गुस्सा उसका ठंडा नहीं पड़ा। थोड़ी देर बाद बोला, 'अब अगर दूसरा दल आ जाए तो क्या उनके डर से तुम घर छोड़ दोगी ?'

'अगर तुम अनुमति दोगी तो उन्हें भी पैसे दे दूंगी। थोड़े से तो रुपये हैं इसके लिए इतना झंझट—'

'वे लोग रुपया नहीं लेते हैं। रुपया देकर अपमान करने आते हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'चुप हो जाओ। अच्छा ठहरो, मैं बत्ती बुझा दूं।'

बाहर उस समय गालियों की बौछार हो रही थी, 'इसी रास्ते से तो आएंगे न। अरे ओ हेबो, सिर्फ टेंगरी नहीं लूंगा, जान भी ले लूंगा। कितने साले आते हैं—आएं न ? साले अभी माल किसे कहते हैं, जानते नहीं हैं।'

उनकी छटपटाहट के साथ-साथ लाठियां ठोकने की आवाजें आ रही थीं। धातु कांच की आवाजें बता रही थीं कि वे सशस्त्र हैं। विरोधी पक्ष का उस वक्त तक पता नहीं था। मंदिरा ने बत्ती बुझाकर चुपचाप खिड़की बंद कर दी। हिमांशु से पूछा, 'ये लोग किस दल के हैं ?'

'हिमांशु खामोश था। निर्लिप्त भाव से बोला, 'किसी भी दल के नहीं हैं। तुमसे तो पहले भी बता चुका हूं। ये सब एक ही दल के हैं—विवेकहीन, मनुषत्वहीन। समय-समय पर सुविधानुसार दो हिस्सों में बंट जाते हैं। तब आपस में मारपीट करते हैं पर हैं एक ही दल के लोग। ये लोग सभी पार्टियों में रहते हैं। पार्टियां पी इन्हें प्रश्रय देती हैं। इनका कोई आदर्श थोड़े ही है। इसीलिए तो मैं...'

'रहने दो। इस बात को रहने दो। आओ हम बातें करें।'

'कैसे बातें करेंगे ? सारे दरवाजे खिड़कियां बंद हैं। मेरा दम घुट रहा है।'

'मैं पंखा चला देती हूं।'

'फिर भी—इस अंधेरे में—'

'अंधेरा है तो क्या हुआ ? मैं तुम्हारे पास हूं न।'

'पास हो फिर भी तुमने आज नई साड़ी पहनी है, बालों में फूल सजाया है ये सब मैं ठीक से देख ही नहीं पाया हूं। तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें ठीक से देख ही नहीं सका। अंधेरे में दम घुटकर—'

'देखने की जरूरत नहीं है—आओ हम लोग बातें करें।'

'बातें ही कैसे करेंगे ? बाहर इतना शोर मच रहा है कोई बात सुनाई पड़ेगी ?'

सचमुच उनका बातचीत करना मुश्किल ही था। लड़के उनके कमरे की खिड़की के पास ही बैठे थे। पागलों की तरह चिल्ला रहे थे, रह-रहकर शोर मचाते हुए सड़क पर दौड़ लगा रहे थे। गंदी गालियां बक रहे थे, मारने की धमकियां दे रहे थे—ऐसी पृष्ठभूमि में कोई अपनी पत्नी के बगल में लेटकर कैसे प्रेमभरी बातें कर सकता है ?

फिर भी मंदिरा हल्के भाव से बोली, 'उधर ध्यान मत दो।'

'ध्यान दिए वगैर क्या किया जा सकता है ? कान भी तो बंद नहीं कर सकता हूं—तब फिर तुम्हारी बातें कैसे सुनूंगा।'

'लेकिन मुझे कोई असुविधा नहीं हो रही है। जब तुम बात करते हो तब मुझे उनकी बातें सुनाई नहीं पड़ रही हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मोनी, तुम मुझे बहलाओ मत। इस तरह से चिल्लाएंगे तो सुनने को बाध्य हो।'

'सच में, विश्वास करो तुम पास रहते हो तो मेरा किसी तरफ ध्यान नहीं जाता है—और किसी की बात सुनाई नहीं पड़ती है।'

'हो सकता है पर मैं ऐसा नहीं कर सकता हूं। मैं मर्द हूं मेरी दुनिया थोड़ी बड़ी है। जीने के लिए कुछ साधारण अधिकार होते हैं अगर वह अधिकार भी न मिलें तो जीने से फायदा ? इन सब बर्बरताओं का प्रतिवाद न करने से—मोनी आज तुम्हारा जन्मदिन है—रात के ग्यारह बजे हम अपने घर में बातें करें इसकी आजादी भी नहीं है—अगर मैं तुम्हारे लिए इतना सा सुकून तक न हासिल कर सकूं तो—'

'छोड़ो, आज बातें करने की जरूरत नहीं है। आओ हम सोकर सपनों में एक-दूसरे से बातें करें—'

'इस शोर-शराबे में सो पाना असंभव है। पुलिस भी यह सब देखती नहीं है—इतनी देर से रास्ते पर गुंडागर्दी हो रही है। दुमंजिले पर उन लोगों के पास तो फोन है—वहां से थाने में फोन कर दूं क्या ?'

'नहीं-नहीं, अब तक कृष्णा दी लोग सो चुकी होंगी।'

'वह भी तो फोन कर सकती हैं।'

'उन लोगों ने जब नहीं किया है तब तुम क्यों बेकार में फोन करने जाओगे ? ये लोग ठीक पता कर लेते हैं कि थाने में फोन किसने किया—तुम पर हमला कर सकते हैं।'

'तो चुपचाप बैठा नरक यातना सहूं ?'

'तुम क्या करोगे ? तुम्हारी शक्ति ही क्या है ?'

'मतलब ?'

'तुम समझते क्यों नहीं हो, सभी अन्यायों का प्रतिकार करने की शक्ति तुममें तो है नहीं।'

भक से जल उठा हिमांशु। मंदिरा की बांहों से अपने आपको अलग करते हुए बोला, 'शक्ति ? तुम कहना क्या चाहती हो ? शरीर का जोर ही सब कुछ होता है ? मुझमें ताकत नहीं है इसलिए तुम कहना चाहती हो कि हर समय पशु शक्ति से हार मानता रहूं ? कभी नहीं। तुमने कहा न कि मुझमें शक्ति नहीं है ?'

'मैंने ऐसा नहीं कहा था ? तुम गलत समझ रहे हो।'

'मैं बिल्कुल ठीक समझ रहा हूं।' कहकर हिमांशु उठा, एक झटके में बत्ती जलाकर उसने खिड़की खोल दो। कंठ स्वर को यथासंभव संयत रखकर बोला, 'आप लोग दया करके यहां से हट जाएंगे ? हमारा कमरे में टिक पाना मुश्किल हो रहा है।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे लोग दूसरी तरफ थोड़ी देर के लिए खामोश हो गए। इधर-उधर देखने के बाद उनकी नजर खिड़की के पीछे खड़े हिमांशु पर पड़ी। फिर सुनाई दिया, 'कौन है रे ? हरिदास है कौन ?'

'कोई पेंगलू का बच्चा जान पड़ता है।'

'ज्यादा बातें मत करो। भला चाहते हो तो खिड़की बंद रखो।'

'हम कार्पोरेशन की जमीन पर खड़े हैं चांद, किसी के बाप की जमींदारी नहीं है। यहां हम जो जी में आए कर सकते हैं।'

तब तक मंदिरा दौड़कर आ गई। उसने खिड़की बंद कर दी, बत्ती बुझाकर हिमांशु को खींचने लगी। हिमांशु दर्द से कराह सा उठा, 'मोनी, तुम क्या कभी भी मुझे पैरों पर खड़ा होने नहीं दोगी ? हर समय मुझे पीछे छिपाकर रखोगी ? मेरी क्या अपनी कोई हस्ती नहीं ?'

'नहीं, आज नहीं। आज तुम्हें मेरी बात माननी पड़ेगी—आज मेरा जन्मदिन है।'

'लगता है तुम्हारा जन्मदिन ही मेरा मृत्युदिन है।'

'ऐसा कहोगे तो मैं खुद ही मर जाऊंगी। तुम क्या ऐसा ही चाहते हो ? कल तुम जो जी में आए कहना।'

जिससे हिमांशु बत्ती न जला सके और खिड़की न खोल, उसने जल्दी से साड़ी और ब्लाउज उतार डाला। हिमांशु को बिस्तर तक लाकर बोली, 'आओ हम लोग लेटें। आज कोई बात नहीं करेंगे। जरा मुझे थामो, छोड़ना मत, मुझे डर लग रहा है।'

और किसी दिन होता तो हिमांशु मंदिरा को पागलों की तरह प्यार करता, आज उसने कुछ नहीं किया। मंदिरा ने जबर्दस्ती हिमांशु के होंठ चूम लिए लेकिन वह ठंडे थे। अपने ऊपर हिमांशु का एक हाथ खींचकर रखा पर हिमांशु निष्पंद सा पड़ा रहा।

काफी समय बीत गया। मंदिरा हिमांशु का एक हाथ कसकर पकड़े हुए थी और वह सख्त पड़ा था। पंखा किचकिच आवाज कर रहा था—बिजली मिस्त्री को बुलाकर ठीक करवाना जरूरी था—हिमांशु ने सोचा।

सारा मोहल्ला निस्तब्ध—मानो सारे मोहल्ले को सोने की छड़ी छुलाकर सुला दिया गया है। बस, हिमांशु की खिड़की के नीचे, बाहर बैठे ये लड़के चिल्ला रहे थे। विपक्षी अभी तक आए नहीं थे इसलिए भाषा थोड़ी सी बदली थी। युद्ध का आह्वान न करके अब वे लोग अपनी वीरता के किस्से, नारी विजय की कहानी सुना रहे थे। नारी के अंगों का वर्णन रसास्वादन के साथ कर रहे थे।

लगातार घंटे भर तक हिमांशु यह सब सुनता रहा। अभी तक साढ़े ग्यारह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं बजे थे। हिमांशु को पता है कि इस वक्त तक, कलकत्ता शहर में सत्तर साल के वृद्ध-वृद्धाएं, बच्चे जगे होंगे, शोरशराबा भी सुन रहे हैं पर उन्हें सोया हुआ मानना पड़ेगा। उनका घर अंधकार में डूबा हुआ है।

न जाने कब मंदिरा सो गई थी। उसे यह सब सुनाई नहीं पड़ता है। मंदिरा कहती है जब तक हिमांशु उसे प्यार नहीं करता है, उसे नींद नहीं आती है। झूठ बोलती है। पिछले एक महीने से मंदिरा का दफ्तर का समय बदलकर सुबह साढ़े आठ हो गया है। रात को जल्दी न सोने पर वह सुबह दफ्तर ठीक समय पर नहीं जा पाती है। आज हिमांशु ने एक बार भी मंदिरा को प्यार नहीं किया था फिर भी किस आराम से वह गहरी नींद में सो रही है।

सहसा हिमांशु को लगा इस दुनिया के नियम कानून से वह बंधकर नहीं चल सकता है। उसमें शक्ति नहीं है। उसके बिना भी हर काम अपने ढंग से होता रहता है। अपने अस्तित्व का प्रबल प्रमाण दिए बगैर उसके जीवन का कोई मूल्य नहीं। उसने देखा उसका शरीर कांप रहा है। फुल स्पीड में पंखा चल रहा था फिर भी उसकी बनियान भीग गई है। वह मंदिरा का हाथ छुड़ाकर उठ खड़ा हुआ। दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया।

उस दल के सामने कांपते हुए पहुंचा और भयंकर आवाज में चिल्ला उठा, 'गेटआउट। गेटआउट। इंसान की बर्दाश्त की भी एक सीमा होती है। अपने ही घर में लोग निश्चिंत होकर सो नहीं सकता है क्या ? मेरी खिड़की के नीचे से हट जाओ। जाओ यहां से।'

'कौन है रे ? कोई हीरा लग रहा है।'

'यह शरीफों का मोहल्ला है यहां इतनी रात को चिल्ला क्यों रहे हो ?'

'देखूं तो चांद तुम्हारा चेहरा तो देखूं। अरे बाप, ये तो पिंगलू हीरो है।'

'मुंह संभालकर बात करो।'

'छोड़ दे हेबो। शरीफ आदमी है। छछुंदर मारकर हाथों में बदबू मत कर।'

एक लड़का हिमांशु के सामने आकर खड़ा हुआ और एक ही झटके में उसने हिमांशु का दाहिना हाथ पकड़कर डेढ़ पेंच में मरोड़कर कहा, 'पिंगलू बहुत फटर-फटर करता है।'

दर्द के मारे चीख उठा हिमांशु फिर भी छिड़कते हुए बोला, 'हाथ छोड़िए वरना मैं पुलिस को बुलाऊंगा।' उसने हाथ झटककर छुड़ाना चाहा पर व्यर्थ रहा। जिस तरह से बिल्ली चूहे को उल्लासित होकर उछाती है उसी तरह से वे लोग हिमांशु के साथ करने लगे।

'अरे बास ! पिंगलू दा तो पुलिस बुला रहा है। क्या होगा ? अच्छा पुलिस सुन तो पाएगी ? आ हम लोग भी बुलाएं, पुलिस, पुलिस, आ जा, आ जा ! ले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हेबो, पिंगलू को थाम। उसने हिमांशु को उधर ठेल दिया।

चीख चिल्लाहट सुनकर नींद खुल गई तो किसी तरह से साड़ी लपेटकर मंदिरा जब बाहर निकल आई तब पूरा दल वहां से भाग रहा था। विरोधी दल भी उसी वक्त इधर आ रहा था। वे लोग भी संघर्ष से बचने के लिए भाग गए। पुलिस वैन की आवाज सुनाई पड़ रही थी, इसी के साथ घरों की बत्तियां जलने लगी थीं, खिड़कियां खुल रही थीं।

रास्ते के बीच में पड़ा था हिमांशु। चेहरा जमीन पर—शरीर के चारों ओर खून फैला हुआ था। खून ही खून। चांदनी रात में वह खून कैसा फीका दिखाई पड़ता है। बरसात के कीचड़ की तरह।

अस्पताल में हिमांशु के सिरहाने बैठी मंदिरा धीरे से बोली, 'मेरी ही गलती थी। मैंने तुम्हें समझने में भूल की थी।'

पूरे सिर पर बैंडेज, चेहरे का काफी हिस्सा ढका हुआ, केवल आंखें चमक रही थीं। हिमांशु ने कराहते हुए कहा, 'मैंने तुम्हारे जीवन में मुसीबत लाकर खड़ी कर दी—मैं कुछ नहीं कर सकता हूं मोनी—'

'नहीं, गलती मेरी ही थी। मैं बार-बार तुम्हें रोकती थी। पुरुष के लिए प्यार ही सब कुछ नहीं होता है—उसके पौरुष को भी श्रद्धा करना चाहिए। और वह पौरुष शारीरिक शक्ति के बल पर नहीं, मन के जोर पर निर्भर होता है। मैं तुम्हारे पौरुष के द्वार को रोक रही थी।'

'पर, मैं तो कुछ कर ही नहीं सकता हूं। बस रह-रहकर अपने जीवन को परेशानी में डाल देता हूं।'

हिमांशु बिस्तर पर उठकर बैठने लगा तो मंदिरा ने ममता भरे हाथों से उसका हाथ पकड़ लिया। खूब कोमल स्वरों में बोली, 'प्लीज, लेटे रहो।'

लेट गया हिमांशु। परंतु उसकी आंखों में विजय की खुशी थी। उसका कमजोर शरीर, बैंडेज किया चेहरा फिर भी आज मानो उसे परुष होने का प्रमाण-पत्र प्राप्त हो गया था।

G.M.C.E.J
4537

●●●

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No....4537........
Dated....19/3/003

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनील गंगोपाध्याय

जन्म : 7 सितम्बर, सन् 1934 फरीदपुर (बंगला देश)।

समकालीन बंगला साहित्य का यशस्वी हस्ताक्षर, चर्चित, प्रशंसित कथाकार एवं कवि। 25 वर्षों तक 'कृतिवास' पत्रिका का सम्पादन तथा प्रकाशन।

वर्ष 1985 में साहित्य अकादमी द्वारा अपने बृहत उपन्यास 'सेई समय' के लेखन पर सम्मानित। प्रायः हर विधा में लेखन, 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित।

सम्प्रति : आनंद बाजार पत्रिका से संबंधित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant